॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

नीतिवाक्यमाला

(वचनामृत)

गुजराती ग्रन्थसे अनुवादक—

पं० नंदनलाल जैन वैश्य, चावलीनिवासी,

ईडर (महीकांठा)।

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दि० जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी—सूरत।

प्रथमवार] वीर सं० २४५० [प्रति १२००
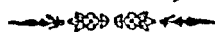
"दिगम्बर जैन" के १६वें वर्षके ग्राहकोंको सप्रेम भेंट।

जैनविजय प्रिन्टिंग प्रेस-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया।

मूल्य रु० १-०-०

निवेदन।

 गुजरातमें अहमदाबादसे "सस्तुं साहित्यवर्धक कार्यालय" (जो १९ वर्षसे स्थापित है) की ओरसे "विविध ग्रन्थमाला" प्रकट होती है उसका एक "युवकरत्न" नामक ग्रंथ (प्रति ४८००) ६ वर्ष हुए प्रकट हुआ था जिसमें एक भाग—वचनामृत अथवा स्वार्पण नामक देखनेसे हम व जैनधर्मभूषण पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीका पांच वर्ष हुए यह विचार हुआ था कि नीति व सदाचारके लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है इसलिये इसका हिन्दी अनुवाद प्रकट करना चाहिये। फिर हमने इसका अनुवाद हमारे मित्र पं० नंदनलालजी (चावलीनिवासी) ईडरद्वारा तैयार कराया था जो कई दिनोंतक तो ऐसे ही पड़ा रहा परंतु हर्ष है कि अब यह ग्रंथ तैयार होकर 'दिगम्बर जैन' के १६वें वर्षके ग्राहकोंको उपहारमें देनेके लिये खास करके प्रकट किया जाता है

यह कोई सामान्य संग्रह नहीं है परंतु सारी दुनियाके महान२ स्त्रीपुरुषोंके २७९ उपदेशामृतोंका इसमें संग्रह है जिसका श्री० भवानीदास नारणदास मोतीवाला वकील हाईकोर्टने अंग्रेजी भाषामें संपादन किया था फिर उसका गुजराती अनुवाद अंबालाल मोतीलाल पटेल बी० ए० ने किया था उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। आशा है कि हमारे पाठक इसको आद्योपांत मननपूर्वक पढ़कर इससे पूरा लाभ उठाकर अनुवादकका परिश्रम सफल करेंगे।

जैन जातिसेवक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
प्रकाशक।

वीर सं० २४५१
कातिक वदी ९.
ता० [illegible]

प्रस्तावना।

हिंदी साहित्य संसारमें **नीति**की अनेक पुस्तकें विचारशील विद्वानों द्वारा बनाई हुई प्रकाशित होचुकी हैं तो भी उच्च नैतिक पुस्तकोंकी हिंदी साहित्यमें बहुत ही कमी है।

नैतिक ग्रंथोंका पठन, अध्यात्म ग्रन्थोंका मनन, सदाचारकी प्रवृत्ति, शुभ संस्कार, सत्संगति और आत्मज्ञान मानवजीवनमें नवीन विकाश कर सक्ते हैं। मानव जीवनकी यथार्थ उन्नति उक्त कारण कलापोंसे ही होगी।

दया, सहानुभूति, सेवा, परोपकार और आत्मकर्तव्योंका मुख्य आधार **प्रेम** है। प्रेम सरल और निष्कपट जीवनसे व्यक्त होता है। सच्चा प्रेम सरल और भोले मनुष्योंके पवित्र मनसे ही प्रकट होगा।

मनकी सरलता अध्यात्मग्रंथोंके और नीतिके ग्रंथोंके पठन-पाठनसे ही होती है। जबतक मनकी वृत्ति सरल और निष्कपट नहीं है तबतक स्वार्थ, मान, माया और लोभादि विकार मानवजी-वनको पशुजीवनमें ही बनाये रखते हैं।

मनुष्य चाहे कैसा ही पढ़ा लिखा क्यों न हो परन्तु जबतक उसका हृदय सरल और निष्कपट नहीं हुआ है तबतक उसके हृदयमें दयाकी मधुर भावना ही नहीं होती है और न यह ज्ञान होता है कि "**संसारके समस्त प्राणी मेरे समान ही**

साम्यभावका मुख्य तत्व जैनधर्मसे ही व्यक्त हुआ है क्योंकि जैन धर्ममें " **समता सर्वभूतेषु** " अर्थात् समस्त प्राणियोंमें समान बुद्धि रखो, सब जीवोंमें अपनी आत्माके समान आत्मा है, इसलिये जितना दुःख हमको होता है उतना ही दुःख सब जीवोंको होता है अतएव सब जीवोकी दया करो, मधुर प्रेमसे सहानुभूति रखो, आत्मभावनासे अपनाओ, सहानुभूतिसे चाहो, और परस्परके विशुद्ध भावोसे उत्साहित करो।

अहिंसाका मूल उद्देश्य सब जीवोंको सुखी और शांत बनानेका है। इस लिये कभी भी किसीको मत सताओ। किसीका दिल मत दुखाओ, गाली आदि वचनोसे कष्ट मत दो, मानसिक बुरे विचारोसे किसीकी हानि मत करो। और न किसीको मारो। सब जीवमे प्रेम—गाढ प्रेम प्रदर्शित करो। ऐसी नीतिको छोड दो कि जिससे दूसरोंकी हानि होती हो।

ऐसा **साम्यवाद** जो दूसरोंको जबरन नष्ट कर अपना स्वार्थ बनावे, उसको छोड़ो।

" दूसरोंको कष्ट देना " अपनेको स्वयं कष्टमें डालना है। 'दूसरोकी हानि करना' अपनी ही हानि करना है। समर्थ और शक्तिशाली होकर भी किसी निर्बल—अशक्त—और रंक प्राणीको मत सताओ, अपनी शक्तिका उपयोग परोपकारमें करो।

यथार्थ सेवा निस्पृह और निःस्वार्थ होती है, मनकी वृत्तियोंको विशुद्ध रखकर दूसरोंकी सेवा करो।

मानवजीवनका उद्देश्य कमाकर और स्वार्थसे अपना पेट भर लेना ही नहीं है। ऐसा कमाना और ऐसा स्वार्थ एक प्रकारकी
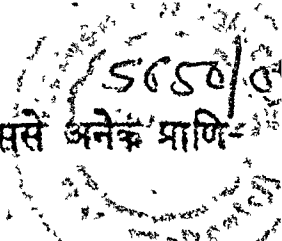
अनीति है। अपना ऐसा व्यापार बनाइये कि जिससे अनेक प्राणियोंको लाभ हो।

अपना जीवन पूरा करना सबको आता है परन्तु अपने जीवनके साथ २ संसारके छोटेसे छोटे प्राणियोंका जीवन पूरा करो।

मानवजीवनके कर्तव्य बहुत ही उच्च और आदर्श होते हैं। जो अपने कर्तव्य सदाचारसे गिरे हुए हैं तो कहना चाहिये कि अभी सेवा करना अपनको आता नहीं है और न अपन अपने कर्तव्योंको ही जानते हैं।

पढ़नेसे मनुष्य सुधरता नहीं है किन्तु सदाचारसे ही सुधरता है, उन्नति प्राप्त करता है। जितना आपका लक्ष्य अधिक पढ़नेमें हैं उससे कई लाखगुणा सदाचार पालनकी तरफ लक्ष रखो। "**लाख मन ज्ञानसे एक मुट्ठी चारित्र उत्तम है।**"

सदाचारकी प्राप्ति शुभ संस्कार और मन वचन कायकी विशुद्धतापर ही निर्भर है इसलिये धार्मिक नीतिका बालकोंको सबसे पहले ज्ञान कराओ और आपको स्वयं वीर्य विशुद्धि (जाति व्यवस्था), मन विशुद्धि (सदाचारका पालन), भोजनविशुद्धि, संस्कार विशुद्धि (तन विशुद्धि), वचन विशुद्धि और आत्मज्ञान विशुद्धि (आगम विशुद्धि) पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

सबकुछ आत्मश्रद्धासे होता है इसलिये आगमकी श्रद्धा पूर्ण भावसे करिये।

ऐसी शिक्षा ग्रहण करिये जिससे अपने परिणाम न बिगड़ जांय।

अंतमें यही निवेदन है कि इस लघु पुस्तकसे कुछ भी समाजका—मानव जीवनका लाभ हो ।

यह मेरा प्रथमका प्रयास है इसमें मैं सफलीभूत हुआ हूं या नहीं यह पाठकगणोंके विचार ऊपर निर्भर है । हां, इस प्रयासमें मुझसे बहुतसी भूले होगई होंगीं, मुझे अल्प बालक समझकर क्षमाकी कृपा करिये ।

मैंने यह प्रयास गुजराती "युवकरत्न" से किया है इसलिये उक्त ग्रन्थका मैं चिर आभारी हूं ।

मेरे मित्र भाई मूलचंद किसनदासजी कापड़ियाने इसकी प्रेरणाकर मेरा उत्साह बढ़ाया इसलिये मैं उक्त भाई साहबका पूर्ण आभारी हूं ।

अंतमे पुनः इन शब्दोंको दुहराकर लिखता हूं कि पाठकगण ! अपना कर्तव्य विचारें, अपने सदाचारको नही छोड़ें । सच्चारित्र ही मनुष्यका जीवन है और ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जिससे नीति और सदाचार बढ़ें । तथास्तु ।

यदि पाठकोंको उक्त ग्रन्थसे कुछ भी लाभ हुआ तो शीघ्र ही "सदाचार" नामका ग्रन्थ आपकी सेवामें उपस्थित करूंगा । आशा है कि पाठकवर्ग ! अपने २ विचार लिखकर मुझे अनुगृहीत करेंगें ।

समाज सेवी—

फाल्गुन वदी ६
गुरुवार,
वीर सं० २४५०.

नन्दनलाल जैन वैद्य,
इडर (महीकांठा)

नीतिवाक्यमाला।

मार्गके उस ओर पर्वतके सामने लाल प्रकाश हो रहा था। यात्रीको मार्ग बतानेके लिये एक नौकर उसके साथ साथ मशाल लिये हुए चल रहा था। जैसे जैसे वह तेज आगे बढने लगा, वैसे वैसे ही वह जुगनूकी भांति चमकने लगा और नीचा ऊंचा होकर नृत्य करने लगा। पश्चात् वह एक टेढ़ेमेढ़े मार्गमें होकर पर्वतकी आड़में अदृश्य हो गया। पर्वतके देवने आकर धीरेसे मेरे कानमें कहा—

"जीवन भी उसी मशालके सदृश है, मनुष्य आदिके शरीरोंमें वह अतिशय अल्प समय तक प्रकाशित होता है। पुनः कर्मकी परिचारिका आयुस्थिति उसे उठाकर मृत्युरूपी पर्वतके उस पार लेजाती है; और वह अदृश्य हो जाती है। इसलिये यह तो स्मरण रखना चाहिये कि "मृत्यु जीवनके एक मनमुडे मार्गके सिवाय और कुछ भी नहीं है" जीवनरूपी अग्नि निरंतर पूर्ववत् जलती ही रहती है, किन्तु मृत्युरूपी पर्वत उसके प्रकाशको हमारी दृष्टिसे अंतर्धान (अदृश्य) कर देता है जिसे हम भ्रम (मोह) के वश नष्ट आ मानते हैं। संसार लम्बा और

विकट है उसमें यह देहधारी अपने सरल आत्मीकमार्गसे च्युत होकर वार वार चक्कर खाता रहता है, परन्तु ज्यों ही वह सचेत होकर अपनी शक्तिको विचारता है, और परमात्माके ध्यानमें मग्न होता है त्यों ही स्वयं परमात्मा हो जाता है।

यदि हम संतोष रख सकें तो ज्ञात होगा कि कर्म आत्माके जीवनरूपी प्रकाशको पूर्ववत् चमकाकर पुनः पर्वतकी उस ओरसे बाहर लाकर दृष्टिगत होता है—प्रकाशमान होता है। जिस प्रकार वह मार्ग-दर्शक दूसरोंकी सेवाके लिये दीपक लेकर आगे आगे चलता है उसी प्रकार विधि (कर्म) भी हमारे जीवन प्रकाशको भाग्यदेवीके स्वाधीन कर देता है।"

सेवाके लिये ही हमारा जन्म हुआ है, और सचेतन प्राणियोंके साथ सेवा करनेके लिये ही हम रहते हैं।

यदि हमने अपना जीवन पवित्र और तेजस्वी रखा हो तो वह जगतकी भुलभुलैयामें फंसनेवाले अनेक जीवोंको मार्गदर्शक होता है, परन्तु यदि उसको पवित्र और उज्वल रखनेमें, उसमें आध्यात्मिक तैल पूरनेमें, और उसकी सदाचाररूपी बत्तीको स्वच्छ रखनेमें उपेक्षा करेंगे तो, हमारे जीवनकी चिमनी विकारके धुंअसे मैली हो जायगी और जीवन-ज्योति पवनके झकोरेसे शीघ्र ही बुझ जायगी। दूसरोंको मार्ग बतानेका कार्य जो हमको प्राप्त हुआ है, उसमें हम निष्फल होंगे, इतना ही नहीं किन्तु हम भी स्वयं कुमार्गमें चले जायगे और सत्वरहित तृणके समान नष्ट हो जायगे।

श्रीमती रोन्ट निवालसिंह।

मैं जिस सर्व स्वामित्ववादकी प्रशंसा करता हूं, उसका एक प्रकार जिसे यथार्थमें सर्व स्वामित्ववाद कहा जा सक्ता है, यह है कि जिससे मनुष्य यह समझें कि वे स्वार्थ और आलस्यमय एकान्तमें दूसरोंसे भिन्न कदापि रह नहीं सक्के, किन्तु उन्हें स्वात्मा और पडोसियोंके प्रति बहुत कुछ कर्तव्य पालन करना पडता है, और उस तरफ उपेक्षा करनेसे अथवा उन कर्तव्योंको नहीं करनेसे विज्ञ मनुष्योंके कानूनमे दियेहुए दण्डकी अपेक्षा कहीं अधिक दण्ड भोगना पडता है।

एं० खि० वेन्सन।

मनुष्य संसारमें बहुत कुछ करसक्ता है, उसकी सेवा वास्तवमें आवश्यकीय है। इस विचारसे जितना प्रोत्साहन मिलता है उतना अन्य किसीसे नहीं मिलता। अपनेको सौंपे (आधीन) हुए कार्यके किसी भी भागका सुधारना और बिगडना, सुंदर या भद्दा बनाना अपने ही हाथमें है, इस कल्पनासे मनुष्यका उत्तरदायित्व जितना प्रकट होता है उतना किसी अन्यसे नहीं।

सर ओलिवर लाज।

मेरी तो यह धारणा है कि मेरा जीवन समस्त जातिके लिये है। जहांतक मैं जीवित रहूं वहांतक उसके लिये यथाशक्ति जितनी मुझसे होसके उतनी सेवा करनेका मुझे अधिकार है। मनुष्यकी उन्नतिका प्रथम मार्ग यही है कि पहिले कर्ताको दूसरोंकी दृष्टिमें मूर्ख बननेके लिये सर्वदा तैयार रहना चाहिये,.... मैं अपनी मृत्युके पूर्व ही अपनी सर्व शक्तियोंका उपयोग देखना चाहता हूं। क्योंकि मैं जितना अधिक कठिन कार्य करूंगा उतना

ही अधिक जीवित रहूंगा। मुझे मेरा जीवन जीवन (मेरी शक्ति-योंका विकाश) होनेके लिये प्रिय लगता है। अल्प समयके दीपककी भांति नहीं मालूम पडता किन्तु क्षणएक मेरे हाथमें आई हुई प्रकाशित मशालकी समान मालूम होता है। और वह कालके आधीन जहांतक न हो उसके पूर्व ही मैं संसारको जितना प्रकाश दे सक्ता हूं उससे भी अधिक प्रदान करना चाहता हूं।

ज्यार्ज बर्नार्डशॉ ।

सर्व मनुष्य दान नहीं दे सक्ते, सर्व मनुष्य कार्य नहीं कर सक्ते परंतु सर्व मनुष्य सदाचारी हो सक्ते हैं. और जो मनुष्य सदाचारी होता है वह विना कहे भी जगतकी सर्वोत्तम सेवा कर सक्ता है। इससे यह समझना चाहिये कि मनुष्य जितने प्रमाणमें सदाचारी होता है उससे उतने ही प्रमाणमें सेवा होती है। जो मनुष्य सदाचारसे श्रेष्ठ हैं वे ही मनुष्य सर्वोत्तम प्रकारकी सेवा करसक्ते हैं। सदाचारी मनुष्योंके लिये ही विश्वमें सदाचारकी श्रेष्ठता मानते हैं। क्या तुमने सदाचारी बनकर सेवा की है? दुराचारियोंको देखकर निराश हुए मनुष्य सदाचारी पुरुषोंको देखकर आशा रखना सीखते हैं—आशावान होते हैं। क्या तुम आशावादी हो? जो प्रेम करने वाले हैं उनको देखकर ही अन्य मनुष्य दूसरोंपर प्रेम करना सीखते हैं। क्या तुम प्रेमी हो? संसारमें स्त्री—पुरुष अथवा विद्यार्थियोंमें जो जो पवित्र होते हैं उनके लिये ही लोग पवित्रतामें महत्व समझते हैं। तुम पवित्र हो?

रेवरेण्ड डी० जे० फ्लेमिङ्ग ।

हम लोग प्राकृतिक कार्योंके साधन और नहर हैं ऐसा मानना चाहिये । छोटेसे छोटे भी कार्यमें हमको उत्तम और निमकहलाल सेवक बनना चाहिये । इस पृथ्वी पर उच्चतर जीवनकी होनेवाली उत्क्रान्ति और विकाशमें सहायता करना हमारा मुख्य अधिकार है ।

सर ओलिवर लाज

अपने बन्धुओंके साथ अपना कर्तव्य पालन करना ही धर्मका सत्य रहस्य है. मनुष्य अपने बान्धवोंकी सेवामें अपना जीवन समर्पण करनेसे ही भाग्यशाली होसक्ता है । और किसी अन्य बस्तुकी बलि देनेसे नहीं, यह बात सत्य है । इसीलिये प्रत्येकके कानमें सेवाकी ध्वनि निरंतर गूंजती है । जिस पवित्रता और स्वात्म-विकाशसे यह आत्मा स्वयं परमात्मा होजाता है उस पवित्रता और स्वात्मविकाशके लिये सेवा अनिवार्य है ।

रेवरेण्ड डी० जे० फ्लेसिङ्ग ।

यह आत्मा स्वतंत्र और स्वावलंबी बने यह भी एक सच्ची और भारी सेवा है ।

डवल्यू० ई० ग्लॅडस्टन ।

सहानुभूति दो प्रकारकी होती है । कल्पित और व्यवहार । जिनके पास हम कभी भी नहीं जासक्ते हैं, ऐसे रणाङ्गणमें घायल, दुष्काल पीडित, विधवा और अनाश्रित लोगोंके जीवनके लिये हाय हाय करनेवाले कलापटु गायक अथवा लेखकके लिये हमको जो सहानुभूति होती है, या मनोराज्यमें वैसी सहानुभूति दर्शक आशा मालूम पडती हो वह प्रथम प्रकारकी सहानुभूति है। और

यदि हम अपने जीवनको विक्रय करें (वेचें) तो उसके लिये इतना तो कहना चाहिये कि "यद्यपि हमारे पास सुवर्ण, चांदी और रत्न नहीं थे तथापि अपने तन और मनके द्वारा संग्रहीत अनंत प्रकाश, अपरिमित आनंद और उत्साहरूपी अधिक मूल्य-वान द्रव्य वे सब सारे मार्गमें बखेरकर जो कुछ अपने पास था वह सब हमने अन्यको उदारतासे प्रदान किया है।

सच्ची भलाई निगुण और निराकार नहीं होती है। किन्तु इसके विपरीत वह जीवनोपयोगी सहानुभूति और कविताके समान सजीव होती है। वह एक सैनिकके समान अपना झंडा फहराती रहती है, और शत्रुके सन्मुख अतिशय दृढताके साथ खडी रहती है। वह सबल और मनोहर होती है। जिस प्रकार मध्याह्नका-लीन सूर्यके सन्मुख मोमबत्तीका दीपक निस्तेज होजाता है उसी-प्रकार वह अपने मस्तकपर ऐसा प्रकाशमान तेज लेकर फिरती है कि जिसके सन्मुख पाप और दोषोंका झूंठा प्रकाश बिलकुल ही फीका पड जाता है। नीच, मूर्खता पूर्ण और निर्बल सहानुभूतिके साथ उसका कुछ भी सरोकार नहीं है। वह हृदयमंदिरमें निवास करती है, ओठोंपर नहीं। और वह स्पष्ट होजानेवाले दोषकी अपेक्षा दंभका अधिक तिरस्कार करती है।

लीली० ई० एफ० वेरी।

उत्तम कार्योंके करनेसे अथवा दूसरे कारणसे अन्यका सह-वास होसक्ता हो और उससे अपनी प्रशंसा होना संभव हो—शाबासी

१ यदि हम अपने जीवनको संकुचित आ देखें अर्थात् परलोक-की यात्रा करें तब।

मिलनेकी संभावना हो, अथवा उनके परिचयसे प्रगट द्रव्य लाभ होता हो, या किसी भी प्रकारका लाभ होता हो तो शायद ही ऐसा कोई मनुष्य होगा जो परोपकारका कार्य न करे। सच्चे सहृदय, और अतिशय उदार पुरुष ही इतनी अधिक नैतिक उच्चता रखते हैं कि जिस उच्चताके ही कारण वे किसी भी प्रकारकी कामना, या इच्छाके बिना केवल कर्तव्यपालन करनेके लिये ही उत्तम कार्य—परोपकार करते हैं।

लीली ई० एम० वेरी

यह तो सर्वथा सत्य कि उत्तम कार्य ..इनकी शक्ति और उसका विस्तार मनुष्यके स्वकीय श्रेष्ठ चारित्र पर निर्भर होता है। स्मरण रखना चाहिये कि वचनकौशलतासे, दिखाऊ बुद्धिविकाशसे, और चालाकीसे चारित्रके दोष छिपे नहीं रहते हैं।

पेजंट।

हमको किस मार्गपर चलना चाहिये यह हम जानते हैं। हमारे निर्मल हृदयपट पर तेरी आज्ञायें चित्रित हैं। परंतु हे परमात्मा! इससे भी अधिक आशिष दे, हमें हमारे ज्ञानके अनुसार कार्य करनेकी इच्छा दे, हमारी इच्छा अनुसार कार्य करनेकी प्रबल शक्ति दे और कार्य करनेके लिये फोलाद जैसे संगीन सुदृढ़ उद्देश दे। तेरी भावनासे हमें ज्ञान तो प्राप्त हुआ है परंतु हे प्रभो! उपर्युक्त अन्य अपूर्णतायें हमको बहुत ही खटकती हैं। और वह तुझसे मांगते हैं।

जान ड्रिंक वाटर

संसारकी उत्तम वस्तुओंका थोडा बहुत उपभोग हमने स्वयं किया है या नहीं? यह प्रश्न हमारे लिये सौ वर्षके बाद बिलकुल

ही अनावश्यक है, किन्तु हमने हमारी निजी शक्तियोंका और अनुकूलताओंका उपभोग अन्य गृहस्थोंके कामके लिये किया है या नहीं ? यह प्रश्न सबसे अधिक महत्वका और आवश्यकीय है।

वेटली।

दूसरोंके सुखकी चिन्ता करनेसे अपने व्यवहारमें भी कितनी ही सहायता मिलती है। अपने स्वार्थ मात्रके लिये भी दूसरोंका हित कर देना उत्तम नीति है। किन्तु भलाई करनेकी अपेक्षा निःस्वार्थी होकर दयालु स्वभाव कई गुणा उच्च और लाभप्रद है।

प्रेम और सेवाके सिद्धान्तका निष्कर्ष (रहस्य) तो यही है कि इससे अपना व्यक्तित्व विकसित हो। कदाचित् कोई यह प्रश्न करे कि यह किस प्रकार? तो मेरा प्रत्युत्तर यही है कि थोड़ेसे समयके लिये अपने आपको भूल जाइए और स्वार्थीवृत्तिसे बाहर निकल आइये तथा दूसरोंके लिये प्रेमपूर्वक किसी भी प्रकारकी उत्तम सेवा करिये।

कार्य छोटा है या बडा कोई आवश्यक नहीं है किंतु जिनका जीवन हेतुशून्य है—लक्ष्यरहित है और चिंतापूर्ण है उनके प्रति अतिशय प्रेमदृष्टिसे देखिये, और कुछ भी आशाप्रद बचनोंसे संतुष्ट कीजिये। कदाचित यह भी संभवित हो सक्ता है कि उनके लिये यही प्रसंग खास लाचारीका हो और इसी लिये आपकी थोडीसी सहायतासे उसका सारा जीवन, अथवा भाग्यचक्र फिर-जाय। तथा जो अपनेको मित्र रहित मानता हो उसके तुम मित्र बनजाओ।

अरे! रे! ऐसे अनेक अवसर प्रति दिन प्राप्त होते हैं कि जिनमें महान कार्य तो नहीं परन्तु पडोसियोंके लिये छोटी सेवाके असंख्य कार्य होसक्ते हैं। एक बार भी प्रेमयुक्त हृदयसे दूसरोंकी भलाईके लिये कुछ करो, और उससे जो अमूल्य आनंद प्राप्त होता है, उसका स्वयं अनुभव करो। फिर वैसे कार्य करनेके लिये कहनेकी आवश्यक्ता न पड़ेगी। दूसरीवार वैसा कार्य तुमको अधिक सरल, और स्वाभाविक मालूम होगा।

आर० डबल्यू० ट्रुन्न।

जीवनके सामान्य अनुभवमें ऐसा एक भी दिन व्यतीत नहीं होता है कि, जब अपनेसे बन सके ऐसी सेवाके मांगनेवाले दूसरे लोग हमारे समक्ष आकर उपस्थित न हों। फिर चाहे वह सेवा कदाचित् साधारण विनय मात्र ही हो वा घरके मनुष्योंके प्रति सहृदय भलाई हो। पडोसियों और व्यापारके संबंधके कारण आये हुए अनेक परिचित ग्राहकोंको शान्त मनसे चिकित्सा करना हो। अथवा वृद्ध और बालकोंकी प्राकृतिक शोभासे प्रसन्नता प्रकट करनी हो। आसपासके सर्व मनुष्य हमारे संबंधी हैं। यदि हम दयाकी संपूर्ण प्रेरणाओंका तिरस्कार न करना चाहते हों तो, हमें अपना सुख और अपने स्वकीय विचारोंसे उनके प्रति दुर्लक्ष कर स्वेच्छानुसार व्यवहार नहीं करना चाहिये।

जे० आर० मिलर

कोई भी मनुष्य जब अपने स्वार्थके बदले समाजके हितकी कामना करता है—स्वार्थको लात मारकर समाज सेवा करता है तभी वह सच्चा मनुष्य होता है। पुरस्कारकी प्राप्ति अथवा दंडसे

मुक्तिके बदले इस प्रकारकी महोन्नत और उदार भावनायें अपने लक्षमें निरंतर रखना चाहिये।

एफ़० डी० मोरिस

प्रत्येक सुकृत्य अथवा दुष्कृत्योंके दो परिणाम होते हैं—एक जगत पर और दूसरा कर्ताके मनकी आभ्यंतर वृति अथवा स्वभाव पर। जैसे किसी सत्पात्रके प्रति किया हुआ परोपकार बाहर प्रकट होकर दूसरोंका दुःख भी दूर करता है, और करनेवाले पुरुषके हृदयमें प्रवेशकर उसके दयालु स्वभावको बलवान बनाता है और कर्ताकी शुभ प्रवृत्तियोंको सुदृढ करता है।

जे० मार्टिनो

यह तो ठीक है कि हम प्रत्येकको सुखी नहीं बना सक्के, परंतु इतना तो कर ही सक्के हैं कि हमारे दोषसे किसी भले आदमीको अपनी सुखशांति न खोना पडे। क्योंकि यह कार्य बिलकुल हमारे हाथमें है, और हम इतना कर सकें तो भी बहुत है।

समस्त जनताकी परवाह न करके कोई भी मनुष्य पूर्ण-रीतिसे स्वयं सुखो नहीं हो सक्ता है। इसलिये स्वयं संतोषो रहना चाहिये और दूसरोंको संतोषो बनाना चाहिये, यही अपने जीवनका आदर्श लक्ष होना चाहिये।

हेन्रिक शॉकी।

सत्य, विनय, अथवा उदारता ये लोकव्यवहारके अनुसार बाह्य विवेकसे बिलकुल भिन्न वस्तु हैं। ये कोई बाह्य क्रियायें नहीं हैं, किन्तु आत्माकी आभ्यंतर भावनायें हैं। और वही मन

वचन और कर्मकी की हुई एक निःस्वार्थ सेवा है। अनेकवार कार्य करनेकी अपेक्षा मौनसे अधिक उत्तम सेवा होसक्ती है।

विचार रहित वचन, कर्कश शब्द, मर्मभेदी वाक्य, दूसरोंको चिढ़ानेवाली बुरी आदतें, द्वेषोत्पादक समालोचना, क्रोध और अधीरता इनसे अपना कोई विशेष संबंध नहीं है और न इससे अपनी कोई हानि होनेवाली है। अथवा जिनका सुधारना अपने स्वाधीन नहीं हुआ है और जिस प्रदेशके मनुष्य बिलकुल स्वतंत्र हैं, ऐसे मनुष्योंकी रहन सहन और उनके रीतिरिवाजके दिखाव पर नुक्ताचीनी (टीका) करना सब समाजके अत्याचारियोंके स्वछंद अत्याचार हैं और उनसे मुक्त होनेका कोई मार्ग ही नहीं है।

अपनी मानसिक दुर्वृत्तियोंसे, स्वच्छंद प्रवृत्तियोंसे और श्रेष्ठ सदाचार पालनेकी शक्ति नहीं होनेसे धार्मिक उत्तम तत्वोंपर गढंत कल्पना (टीका) करना भी महान अपराध है। चोरी आदिसे किये हुए प्रकट अपराधोंका दण्ड राजा दे सक्ता है परन्तु ऐसे गुप्त अत्याचारोंका दण्ड उनके कर्म स्वयं देते हैं यह हर समय स्मरण रखना चाहिये।

अनेक मनुष्य विना जाने जीवनभर दूसरोंको ऐसे दुःख देते हैं। इस प्रकारके चालचलनको बुद्धिपूर्वक त्याग करना चाहिये। यह भी एक प्रकारकी किसी शुभ कार्य किये विना ही सेवा है।

---

१ वचन गुप्ति पालन नहीं करनेसे ऐसे अनेक अवसर उपस्थित होते हैं कि सहज-साज ही हास्यविनोद आदिमें भी परपीडाकारक वचन निकल जाते हैं। हित, मित, मनोहर बोलना चाहिये।

सत्य विनयकी पहिचान यह है कि अपना पडोसी या मित्र जिस वस्तुको न मांग सक्ता हो, उसका वह दान कराती है। उसकी महत्वता इसमें ही जान पडती है। जिस वस्तुको अन्य कोई बलात्कार भी नहीं ले सके उसको वह स्वेच्छासे दिलाती है। उसको मानसिक द्रव्य सिवाय अन्य द्रव्यकी आवश्यक्ता नहीं है। वह द्रव्यकी अपेक्षा उच्चतर चारित्रसे प्राप्त होती है और सदाचार ही उसका अवलंबन है। द्रव्यसे मनुष्य बाह्य दृष्टिमें सुधरा हुआ मालूम पडता है परतु सच्ची विनयसे मनुष्यका उच्चतर चारित्र देखा जा सक्ता है।

सच्ची दयाने क्या किया? यथार्थ कुछ भी नहीं। परतु आनंददायक हास्य और उत्तम स्वभाव—दूसरेको कैसा मालूम होता है। दूसरोंको किसकी आवश्यक्ता है इसका ज्ञान वही स्पष्ट बतलाता है कि वह दया सब कुछ भूलकर दूसरोंका ही विचार करना सीखी थी। इस लिये ही वह कठोर शब्द और वक्र भ्रूकुटीसे उत्पन्न हुए भयानक विकारों (लडाई—झगडा) को मीठे शब्दोंसे शांति करती है, और अन्य समय निर्बल मनुष्यकी शय्या (खाट) के आगे बैठकर दिलभर आश्वासन देती है। किसी समय रोते हुए बालकको शान्त्वना करती है, और किसी समय उस मनुष्यको भी शान्त करती है कि जिसका स्वभाव आजीविकाकी चिन्तासे चिडचिडा होगया है। वह अपने सिवाय अन्य किसीको अपनी सेवाकी खबर भी नहीं होने देती। समभाव हृदयवाले पुरुषको

१ "समता सर्व भूतेषु" छोटेसे छोटे जीवपर भी "यह मेरी आत्माके तुल्य है, यद्यपि कर्मके उदयसे बाह्य साधना इसको अल्प

ही वह दृष्टिगत होती है । अन्य किसीको वह दिखाई भी नहीं देती है । जो दया कसोटी (परीक्षा) के समय बड़े २ कार्य करनेके लिये शक्तिशालिनी होती है वही सेवाके छोटे छोटे कार्य करनेके लिये सदा तत्पर रहती है ।

एफ० डब्ल्यू रोबर्टसन

आत्मा स्वयं अपने भाग्यका विधाता है । जीवनका सच्चा उद्देश सेवा है । सेवाका आधार इच्छा–बलपर निर्भर है । नियम बनानेवाली प्रकृति है । और वही हमको न्यायी, बलवान् , पवित्र और अपने बन्धुओंके प्रति परोपकारभाव रखनेके लिये हमारे अंत:करणके द्वारा हमें आज्ञा प्रदान करती है ।

जी० ए० मरिवस

यदि मैं अपने निकटवालेको स्वयं दु:खी होकर और अपनी शक्तिसे अधिक कार्य कर, एवं उनकी हरएक प्रकारकी चिन्ताकर अधिक सुखी न बना सकूं तो मैं अपने अंत:करणसे शोकपूर्ण शब्दोंमें प्रश्न करता हूं कि यह जीवन बने रहने योग्य है? । यदि मैं दूसरोंको अधिक सुखी बनानेमें निष्फल हो जाऊं, और भविष्य कालको शोक और दु:ख पहुचाऊं तो यह प्रश्न करनेके बाद दु:खसे उत्तर दे सकता हूं कि " ऐसे निरर्थक

मिली है इसलिये निर्बल-दीन-है परंतु दुखकी भावना जिस प्रकार मुझे असह्य मालूम होती है उसी प्रकार इसको भी । इस लिये यह मेरे समान है, मैं जैसे अपनी रक्षाकर सुख और शांति चाहता हूं वैसे ही यह भी चाहता है तो मै अपने क्रोधादि विकारवश इसके सुखमें क्यों विघ्न करूं? स्वार्थके लिये अन्यकी हानि क्यों करूं? इस प्रकारके भाव ही समभाव हैं ।

जीनेसे मरना भला है" । यदि मैं दूसरोंके दुखोंको कम करनेमें सहायक हो सकूं, अपने निकटवर्ती–आसपासके जीवोंको अधिक सुखी कर सकूं तो उक्त प्रश्नका उत्तर आनंदसे और हंसते हंसते हुए यह दे सक्ता हूं कि वह जीवन बहुत उत्तम है।

आर० ए० प्रोक्टर

दुःखके वश होकर अपनी दया अपात्रमें करनेकी कल्पना (दुःखका ढोंग बताकर अपनी दया अपात्रमें नहीं करना चाहिये) अथवा दरिद्रताके कारण सेवाकी प्रेरणाओंकी अवगणना नहीं करना चाहिये, परन्तु उस वृत्तिको जितना हो सके विकसित करो और सच्चे गरीब पर दया करो।

प्राकृतिक सृष्टि नियम, तथा मनुष्योंकी स्थिति ऐसी है कि सर्व संबंध योग्य रीतिसे पालन किये जांय तो गरीबको अमीरकी उदारतासे जितना लाभ होता है उससे अधिक लाभ अमीरोंको गरीब लोगोंके समीपता (सहवास)से होता है। दयाका प्रवाह बहने देनेसे तन और मनकी आरोग्यता बढ़ती है, और उसका प्रवाह रोकनेसे नैतिक संगठनमें हानिप्रद वस्तुओंका प्रवेश होता है।

माताको अपनी छाती पर खेलते हुए, और अपनी आंखोंके सामने पुष्ट होते हुए ऐसे छोटे निराधार बालकके सहवाससे जो आरोग्यता और आनंद मिलता है वह उसके अभावमें (किसी प्रकार भी) मिलनेवाला नहीं है। ठीक इसी प्रकार हमको भी गरीबोंके साथ रहनेमें और उनके साथ उदारता प्रकट करनेमें जो आनंद–पूर्ण सुखशांतिमयी तृप्ति और आशीष मिलती है। ऐसे दयाके श्रोतसे प्रसरित मनोहर झरनेको रोककर नाश नहीं करना

चाहिये। हमको उस समस्त झरनेकी पूर्ण आवश्यकता है। इसलिये उसको योग्य मार्गसे लेजाकर बहने ही देना चाहिये।

परोपकारी सभा-सोसायटी या सेवासमिति आदिको सहायता देकर जो सेवा तुम करते हो उसके सिवाय दुःखी मनुष्योंके पास जाकर स्वतंत्र रीतिसे भी तुमको सेवा करनी चाहिये। यद्यपि सभा सोसायटी और आर्थिक सहायता (फंड) उसके लिये उपयोगी है और इससे उन सहायता प्राप्त करनेवालोंकी कुछ आवश्यक्तायें कम हो जाती हैं, तथापि दाताको इस प्रणालीसे उत्तम प्रकारका लाभ नहीं मिलता है। आंखसे आंखका, हाथसे हाथकी और हृदयसे हृदयकी इस प्रकार अनन्य सम्बन्धसे—अंगअंगी भावसे जो सेवा या सहायता की जाती है वही परोपकार करनेका और शुभाशीष प्राप्त करनेका उत्तम मार्ग है। इसलिये युवा और वृद्ध, रंक और राजा, प्रत्येकको इस प्रकार यथाशक्ति लोकसेवा करनेका प्रयत्न करना चाहिये। इस सेवाके इच्छुक महात्माओंको ऐसे अगणित अवसर प्राप्त हो सक्ते हैं। संसारमें इस प्रकारका जीवन व्यतीत करना चाहिये कि जब तुम संसारसे चले जाओ तब संसारको तुम्हारे अभावका अनुभव हो।

रेवरेण्ड डब्ल्यु आर्नोट।

हमको सेवा करना चाहिये इतना ही नहीं किन्तु वह सर्वोत्तम रीतिसे हो यह भी परम आवश्यक है। देश—काल और

१ दान भी द्रव्य-क्षेत्र-काल और भावकी शुभाशुभ संयोजनाओंसे और पात्र कुपात्रकी विशेषतासे अपने माहात्म्यमें हीनाधिकपना अवश्य ही करता है। जैसे परिणामोंसे दान दिया जायगा वह तद्रूप ही

पात्र कुपात्रका विवेक रखनेसे दानकी महिमा दूनी हो जाती है।

सिडनी।

जो स्त्री या पुरुष सत्य-शील और कर्तव्यकी खोजमें रहता है, जो विचारोंको भले प्रकार समझकर अपने जीवनरूपी तंतुओं (तार-डोरा) से बुन लेता है। जो पवित्र और सरल हृदयसे निकले हुए शब्दोंसे और कार्योंसे अपने निकटवर्ती मनुष्योंको चैतन्यता आनंद और प्रकाश देता है, उसकी अपेक्षा समाजकी उन्नति करनेवाली और कोई अधिक प्रबल शक्ति नहीं है। ऐसे स्त्रीपुरुष जहांतक जीते हैं वहांतक महान उन्नत और अन्य असंख्य आत्माओंको आनंददायक होते हैं। चाहे समाजमें उनका आसन भले ही तुच्छ हो तो भी वे अपनी मृत्युके बाद ऐसी सुगंधी छोड़ जांयगे कि जिससे भविष्यकालको सुख और आनंद प्राप्त होगा।

रेवरेण्ड० जेम्स० वेन्नक।

सच्चे प्रेम और सच्ची सेवाका यही सिद्धान्त है-उनकी यही यथार्थ नीति है कि वे चारों ओर जाते हैं ये दोनों ही अपने अपने शुभ कार्य करते है; न वे कभी किसीको कुछ भी नहीं कहते हैं, हां औरों (अन्य) को भी वैसे शुभ कार्य करनेके लिये प्रेरणा करते हैं, वे कभी नहीं बोलते अर्थात् अपने

विकशित होगा। बीजको बोनेके पहिले भूमिकी शुद्धि करना नितान्त आवश्यक है, संभव है कि अपात्र भूमिमें डाला हुआ बीज नष्ट होजाय, या सडकर और अधिक रोग पैदा करदे। इसी लिये " विधिद्रव्य दातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः"- भगवान उमास्वामी।

किये हुए कार्यकी स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करते और उस सेवाको कभी मुखपर भी नहीं लाते कि यह मैंने की) इतना ही नहीं किन्तु दूसरा जानले ऐसी इच्छा भी नहीं करते हैं। और जैसे जैसे वे अधिक उन्नत होते हैं वैसे वैसे ही उनकी यह अनिच्छा तीव्र होती जाती है। इसको दूसरे शब्दोंमें इस प्रकार कहसक्के हैं कि वे ख्याति और कीर्तिके प्राप्त करनेकी उन्मत्त इच्छाके पीछे नहीं दौडते, और इस लिये ही वे अपने सत्कृत्योंकी लम्बी चौड़ी बातें कर अपनी आत्माको हलकी नहीं बनाते, और न दूसरोंको कष्ट ही देते हैं। वे सेवकका धन्धा नहीं करते, किंतु इस प्रकार अपना स्वाभाविक जीवन व्यतीत करते हैं, वे प्रसङ्गानुसार शुद्ध हृदयसे यथाशक्ति सत्कार्य करते ही रहते हैं। ऐसा करके उत्तम जीवन और परम आनंद प्राप्त करते हैं।

आर० डब्ल्यू० ट्राइन।

अनुकम्पा ऐसी चीज है कि जिससे अपनेको कभी लज्जित न होना चाहिये। युवावस्थामें अनुकम्पाके अश्रु और दुःखकी बातोंसे पसीजनेवाला हृदय होना विशेषकर मनोहर है। हमें अपने प्रेमको ऐशआराम और सुखके लिये संकुचित नहीं करना चाहिये। और अपने निजी स्वार्थी सुखोंके लिये हमको उन्मत्त होकर लवलीन न होना चाहिये। तो भी मनुष्यजीवनके असह्य दुःखों, निर्जन झोंपडों, मृत्युशय्या पर पड़े वृद्धों, रोते हुए अनाथ बालकों, भूखसे पीडित दीन पशुओं और अतिशय भार (बोझा) लादनेके कारण अत्यंत क्लेशित जानवरोंके विचार करनेकी आदत डालनी चाहिये। हंसीमें भी दुःख और दर्दका मजाक न

उड ना चाहिये । छोटे छोटे जीव जंतुओंके प्रति भी स्वेच्छाचारी या घातक न बनना चाहिये ।

डोक्टर ब्लेर ।

(हे मन !) तेरे अवकाशके समयको भी सत्कार्य रहित व्यतीत न होने दूगा, क्योंकि चंचलमन प्रवृत्तिरहित कभी नहीं रहता, यदि वह सत्कार्य करनेमें प्रवृत्त न किया जाय तो अनिष्ट कार्य करने लगता है । इसलिये मध्य२में (अपना काम समाप्त करने देनेके बाद फुरसतका व्यर्थ समय) जो अवकाश मिले उस समय किसी न सत्कार्यमें उसे लगाना चाहिये कि जिससे उत्तम बगीचेके समान समयानुसार शोभा बढानेवाले, आनंद देनेवाले और उन्नतिके मार्गपर ले चलनेवाले उत्तमफल उत्पन्न हो सकें ।

चार्ल्स हेनरी हंगर ।

जो मनुष्य अपनी ठसाठस भरी हुई असंख्य रुपयोंकी तिजोरीमें और भी वृद्धि करनेका प्रयास करता है वह युवावस्थामें अपनी सुदृढ़ संग्रह करनेकी तीव्र लालसाका दास होजाता है । पहिले वह अपने कमाये हुए द्रव्यका स्वामी होता है परन्तु पीछे वही द्रव्य उसका स्वामी बन बैठता है । ऐसा हुए विना नहीं रहता । क्योंकि भली या बुरी आदतका बल बहुत अधिक होता

---

१ 'चिरंतनाभ्यासनिबंधनेरिता गुणेषु दोषेषु च जायते मतिः' । यह उक्ति बहुत ठीक है । इसलिये बहुत बालसे जब जिसको जैसी आदत पड़ जाती है तदनुसार अपनी बुद्धि भी वैसी होजाती है इसलिये मनुष्योंको सदा यह स्मरण रखना चाहिये कि बुरी आदतसे अपनेको और अपनी संतानको बचावे ।

है। सुधारमें गिने जानेवाली संग्रह करनेकी स्वाभाविक इच्छाके दुरुपयोगसे संसारमें ऐसे मनुष्य दृष्टिगोचर होते हैं।

"अपनी ऐसी आदतके दुरुपयोगका मैं भी शिकार हो जाऊंगा" इस प्रकारके भयसे किसी भी मनुष्यको भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं है। और जो मनुष्य सदा यह स्मरण रखता है कि जो अधिक द्रव्य मुझे प्राप्त होगा वह पवित्र गुप्तधन है और उस द्रव्यका उपयोग मनुष्य जातिके कल्याणके लिये ही बाधित है। तो वह ऐसी बुरी आदतका कभी शिकार नहीं होगा। मनुष्यको सर्वदा धनका स्वामी बनना चाहिये। और धनको सदा अपना उपयोगी दास ही बनाना चाहिये। द्रव्यको अपना स्वामी बनाकर स्वयं कंजूस न बनना चाहिये।

एन्ड्रू कार्नेगी।

"धन" खर्च करने और कीर्ति बढ़ानेवाली रीति सत्कार्य करनेके लिये ही है।

बेकन।

जिनके पास बहुतसा धन संग्रहीत है वे उसको जीवन पर्यन्त जगतके जीवोंकी भलाईके लिये और सदाचारकी वृद्धिके लिये प्रतिदिन व्यय करें। इसके सिवाय वे उसका और कोई उत्तम उपयोग नहीं कर सकते। इससे उनका जीवन निरंतर उन्नत और प्रफुल्लित होगा और एक समय ऐसा आयेगा कि जब मृत्युके बाद बहुतसी संपत्ति छोड़ जाना मनुष्यके लिये लज्जास्पद समझा जायगा।

आर०. डब्ल्यू० ट्राइन।

सत्कार्य करनेका एक भी अवसर न चूकना चाहिये।

एटर बरी।

जिस समय हम सत्यके बलसे दूसरोंके दोष प्रकट करें उस समय अंतःकरणसे उसके मस्तक पर प्रेमकी मधुर सुगंधी डालनी चाहिये। सत्य और प्रेम ये दोनों संसारमें सबसे बलवान तत्व हैं। जिस समय वे जिसके साथ होते हैं उस समय किसीकी शक्ति नहीं कि उसके सन्मुख ठहर सके। सत्यकी सुनहरी किरणें और प्रेमके रूपहले तार जब साथमें बुने जाते हैं तब वे मनुष्यको इच्छा या अनिच्छासे भी अपनी ओर मिष्ट बलपूर्वक आकर्षित करते हैं। कडवर्थ।

जिनको समाजकी सेवा करनेके लिये सचमुच इच्छा उत्पन्न हुई है, उनको चाहिये कि वे मनुष्योंके आचार विचारको विनीत भावसे सहन करें, उनकी प्रचलित रीतिरिवाजें जो अनुचित हैं या तिरस्कार करने योग्य हैं उनको दृढ़तासे बतावें। यही नहीं किंतु जनताको उन्हें समझानेका अपना कर्तव्य समझें। जो सत्य होगा उसकी ही अंतमें विजय होगी और वही स्थिर रहेगा।

मेरिया और आर० एल० एजवर्थ।

सत्कार्य, न्याय–प्रामाणिकता–और सहानुभूति आदिसे चिन्तातुर मनुष्योंको सहायता देनेमें वा दुःखमें धैर्य बंधानेमें जो आनंद प्राप्त होता है वही भावी स्वर्गके सुखको सिद्ध कर देता

---

१ सहानुभूति और परोपकार भी प्रामाणिकताके साथ वास्तविक होता है। यदि हम स्वयं सदाचारी न हों, और हमारा ऊपरी दिखाव कुछ दूसरा ही हो तो हमें हमारी आभ्यंतर आत्मा सच्चे परोपकार करनेमें बाध्य करती है। जो स्वयं पवित्र हैं, सदाचारी है, आस्तिक्यताको लिये हुए हैं और नैतिक बलको अपना कर्तव्य समझते हैं वे ही सच्चा परोपकार करते हैं।

है। इस आनंदसे कभी पश्चात्ताप नहीं होता और वह सुख अपने पाससे दूर हो जाय ऐसी भावना भी नहीं होती।

बीचिक।

जिस सद्गुणी मनुष्यके हृदयमें हमारी अनुकम्पासे आनंद प्राप्त होता है, वह मनुष्य विशेष आदरका पात्र है तो फिर हम उसकी जीवित अवस्थामें उसका सन्मान क्यों नहीं करें? क्योंकि मनुष्य अपनी समाधिपर अंकित अपनी कीर्ति लेखको स्वयं नहीं पढ़ सक्ता। सदाचारी मनुष्योंकी यादगारके लिये उनके पीछे हम जो स्मारक बनाते हैं, वह उनके जीवित रहनेपर उनकी उपेक्षा करनेका हमको पश्चात्ताप ही कराता है।

बुल्वर लिटन।

अन्तःकरणको एक क्षणभरके लिये प्रफुल्लित करना क्या उत्तम कार्य नहीं है? जो मनुष्य अन्यके दुःखोंसे दुःखी और अन्यके रोगोंसे चिन्तातुर हो रहे हैं ऐसे मनुष्योंकी प्रशंसा द्वारा आनंद और उत्साह प्रवाहित करना मुझे तो आशीर्वाद पूर्ण अमूल्य लाभ मालूम होता है। पारमार्थिक (परोपकारसे) जीवन व्यतीत करनेवाली आत्माओंकी शक्ति और धैर्यसे इसप्रकार नव-जीवन सिंचन करनेमें सहायक बनना भी एक प्रकारका धार्मिक आनंद है। हमें यह जानकर अत्यंत आश्चर्य होता है कि हम स्वयं अयोग्य होने पर भी हमारे पास वैसी शक्ति है और हमको उसका सदुपयोग करना चाहिये।

जो हमारा अपकार करता है उसको धिक्कारनेके पापसे बचनेके लिये एक ही मार्ग है और वह यह है कि उसके साथ

भलाई करो—भलमनसाईसे ही क्रोधको भली प्रकार जीत सके हैं।

सुख देना और सत्कार्य करना ही व्रत है। यही मुक्तिकी सीढी है स्वर्गका दीपक है और इस जगतमें जीवनका हेतु है। यही आत्माका धर्म है और जब तक यह अभिलाषा रहेगी तबतक अपनेको जीवनमें आनंद आवेगा।

हमको निःस्वार्थी बननेकी भावना करनी चाहिये। जिस आत्मीक प्रेमको हम चाहते हैं उसकी सत्यता पर हमको पूर्ण श्रद्धान—विश्वास रखना चाहिये। किस प्रकार उग्र उपसर्ग सहन करना? किस प्रकार अपने स्वार्थको भूल जाना? किस प्रकार हमको आत्मत्याग करना? किस प्रकार क्रोध लोभ आदि विकारोंको जीतना? संक्षेपमें किस प्रकार अपनेको गंभीर बनाना? आदि सब हमको सीखना चाहिये।

यह संसार सचेतन प्राणियोंका संसार है, और जितने प्राणी (जीव) इसमें रहते हैं वे सब अपने बन्धु हैं। हमे अपनी सात्विक वृत्तियोंका त्याग नहीं करना चाहिये। समस्त आत्माओं पर एकसा प्रेम करना चाहिये। छोटेसे छोटे जीवजंतुओंको दुखाना भी अपनी आत्मभावनासे रहित है। बुराईको भलाईके वश करना चाहिये। सबसे उत्तम वस्तु तो यह है कि हृदयके पवित्रताकी रक्षा रहनी चाहिये।

जीवनका सच्चा श्रोत हृदयमें है। जीवनका आत्मा आनंद है। किसीको सुखी करना सचमुच उसके जीवन धनको बढाना है, उसको अधिक उपयोगी बनाना है, उसको आत्मज्ञान प्राप्त करा देना है

और उसको उन्नत बनाना है। संक्षेपमें यह समझना चाहिये कि ऐसा करनेसे उसकी परिस्थिति बिलकुल परिवर्तन हो जायगी।

यदि हम छोटेसे भी जीवको सुखी कर सकें तो समझना चाहिये कि हम स्वयं सुखी हुए; इसलिये हमें अपने अहर्निशके कर्तव्यमें, खानपानके व्यवहारमें, गृहसंबंधी क्रियाओंमें और व्यापारमें इस प्रकार विचारना चाहिये कि किसी जीवको चाहे वह अत्यन्त अल्प शक्तिका धारक ही क्यों न हो, दुःख तो नहीं होता है। उसके शारीरिक और मानसीक कार्योंमें व्याघात तो नहीं होता है। यदि अपने आचरणोंसे ऐसा हुआ तो हम किसी जीवको सुखी नहीं कर सकेंगे। हमारी वे सात्विक वृत्तियां भी हमारा साथ छोड़ देवेंगी कि जिनसे हमको परम आनंद मिलता था। ऐसी सात्विक वृत्तियोंका पालना ही सदाचार है, आत्माका धर्म है। सुखका मूल है और आनंदका पवित्र श्रोत है।

अपनी शक्तिके अनुसार, (न कि अपनी इच्छाके आधीन) दूसरोंको सहायक होना अपना कर्तव्य है।

स्वार्थ अपनेमें रहनेवाली पाशविक वृत्तिका चिन्ह है। आत्मत्यागके साथ ही सच्चा मनुष्यत्व प्राप्त होता है।

एमिएल।

दूसरोंके दुःख-कठनाइयां स्वयं सहन करलेना उत्तम सेवा नहीं है, किन्तु वह अपने दुःखोंको स्वयं सहन करे और कठनाइयोंका वीरतासे सामना कर सके ऐसी सामर्थ्यका देना उसके जीवनमें उत्साहका फूंकना उत्तम सेवा है।

लॉर्ड एव्हबरी।

जिनको हम कुछ देते हैं वे गरीब उन कुलियोंके समान हैं जो हमारे मालको (हमारी आत्माको) पृथ्वीसे स्वर्गको ले जाते हैं। इसलिये उनको आप अवश्य ही कुछ न कुछ देते रहिये। जो तुम उनको देते हो मानो तुम वह अपने कुलीको ही देरहे हो।

आत्मसंतोष ही सत्कार्यका बदला है। सेवा ही सत्कार्य है और आत्मसंतोष उसका फल है।

प्रत्येक मनुष्यको दूसरोंकी कुछ सेवा करनी ही चाहिये। अर्थात् अपने भंडारमेंसे अन्यको कुछ देना ही चाहिये। जिस मनुष्यके पास अतुल द्रव्य है उसको भूखेको अन्न, नंगेको वस्त्र, अनाथ शिशुओंका भरणपोषण, अंध, अपंग, दु:खी, दीन जनोंकी आत्मरक्षा, मरणासन्न पशुओंका प्राणदान और अज्ञपुरुषोंके लिये ज्ञानशालायें आदि द्वारा सेवा करनी चाहिये। तथा धर्मशालायें और धर्मायतन जिनसे असमर्थ मुमुक्षु आत्मसंयममें प्रवृत्त हों बना देना चाहिये। जिस मनुष्यके पास धन नहीं हैं किंतु बुद्धि है उनको चाहिये कि अपनी बुद्धिका सदुपयोगकर समाजसेवा करें, अपने पडोसियोंको सन्मार्ग बतलावें—निःस्वार्थवृत्तिसे ज्ञान दान दें। अज्ञानताको नाश कर देना महान सेवा है। ऐसे बहुतसे जीव जो अज्ञानता (मोह) के आधीन होकर अपने सद्विवेकको खो बैठे हैं, सच्चे सदाचारसे रहित हो गये हैं, जिन्हें पापवृत्तियोंसे भय नहीं है और आत्मापर जिनको पूर्ण विश्वास नहीं है अतएव आत्मसंयमसे विमुख हैं ऐसे जीवोंके हृदयमें सच्चे ज्ञानका प्रकाश डालना ही महान् सच्ची सेवा है। और जो सदाचारी हैं, पवित्र

हैं, उनको चाहिये कि संसारयात्रामें प्रवर्तनवाले जीवोंको श्रेष्ठ मार्ग बतलाकर आदर्श बनावें। जिसके पास धार्मिक ज्ञान है उनको चाहिये कि मनुष्योंको धर्मकी महिमा बतलाकर पापाचरणसे उनकी वृत्तियोंको रोकें, कुमार्गमें जानेवालोंको सन्मार्ग प्रदर्शन करावें, बिलकुल भूले हुए (पाप और पुन्यमें विश्वास नहीं होनेसे पापकार्योंको पाप तक नहीं समझते हैं) को ढूंढ निकालें और उनको आत्मभावनामें दृढ करें। जगतमें ऐसे अनेक कार्य हैं जिनको नितान्त गरीब भी कर सक्ते हैं। अपंग (लंगडे)को सहारा दीजिये, अंधोंको मार्ग बतलाइये, रोगियोंके घरपर जाकर आश्वासन दीजिये। जिसके कोई भी कुटम्बी नहीं है ऐसे असहाय मृत मनुष्यके शरीरको फूंकने जाइये, इस प्रकार और कुछ भी न हो सके तो शरीरसे ही सहायता देकर सेवा कीजिये। परन्तु यह न विचारिये कि मेरे पास धन नहीं, ज्ञान नहीं, मैं किस प्रकार सेवा कर सकूं? सेवाके मार्ग अनेक हैं सेवासे मन मोडना ही महान् अपराध है।

मृगों (हरिणों) के सम्बन्धमें यह कहा जाता है कि जब वे झुंड बनाकर फिरते हैं तब वे एक दूसरेके पीछे चलते हैं और सबसे आगेका जब थक जाता है तब वह सबसे पीछेवाले पर अपना मस्तक रखता है, इस प्रकार एक दूसरेका भार सहन करते हुए अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं, ठीक इसी प्रकार जो परमात्माको चाहते हैं उनको चाहिये कि संसारयात्रामें एक दूसरेके दुःखोंमें भागीदार बनें।

सेन्ट ऑगस्टाइन।

स्नेह, क्या है ? मुझे तो मालूम होता है कि उसका सत्य स्वरूप शुद्धिशाली है, वह निःस्वार्थताजन्य आनंद है। अपने सिवाय दूसरोंके जीवनमें रस है तो वह अन्यके सुखमें सुखी होता है, यदि हमारा दुख बहुत ही थोड़ा हो तो वह हंसनेवालोंके साथ हंसनेमें सहायता आ सकता है।

छोटे छोटे दयाके कार्योंमें और साधारण अवसरोंपर भी स्वाभाविक सद्वृत्तियोंको स्वतन्त्रतासे विकसित होने देनेमें बहुत कुछ माधुर्य और सौंदर्य है।

सी० एमिल।

सत्कार्य करो, और अपने पीछे सदाचरणका ऐसा स्मारक बनाजाओ जो कालके संघर्षसे नष्ट न हो। प्रत्येक वर्ष अपने सहवासमें आनेवाले सैकड़ों मनुष्योंके हृदयपर दया प्रेम और सहानुभूतिसे अपना नाम अंकित करो। इससे वे तुम्हारा नाम भूल न जायंगे। अरे! इतना ही नहीं किन्तु तुम्हारा नाम और तुम्हारे कार्य तुम्हारे पीछे रहनेवालोंके हृदयपर स्पष्ट मालूम पड़ेंगे और आकाशमें ताराओंके तेजके समान ही भूमंडलपर उनका तेज चमकता रहेगा।

अलेक्जेण्डर।

शारीरिक जीवनके लिये श्वासोश्वास जितना आवश्यक है ठीक उतना ही अध्यात्मक जीवके लिये "दान" आवश्यक है। जो मनुष्य खुले हाथसे दूसरोंको नहीं देते उनको स्वर्गके राज्यमें स्थान नहीं। दानमें ही सच्ची महत्वता और शुद्ध धर्म है। जो मनुष्य जगतसे लेते हैं उनको नहीं किन्तु, जो अपनेसे जितना हो सके उतना जगतको देते हैं उनहीका हम आदर करते हैं।

रेवेरण्ड चार्लस ई० एण्डरसन।

जो हाथ सारे दिन उदार और प्रामाणिक कार्य करता है वही सुन्दर है। जो पैर दैवी प्रेरणाके अनुसार नीचातिनीचके घरमें भी दयाके कार्य करनेके लिये जाते हैं वे ही सुंदर हैं। जो कन्धे दूसरोंकी चिन्ताके भारको, धैर्य और उत्तम रीतिसे उठाये रहते हैं वे ही सुन्दर हैं। जो दूसरोंके सुखकी नदियोंको भर रहे हैं उनका ही जीवन धन्य है। ई० पी० एल्टन।

दुःखी भाईको सुखी भाईकी दयापर हक है।

ॲडिसन।

विना अपनी हानि किये तुम दूसरेको दुःखी न कर सकोगे।

डॉ० आर्नोट।

यदि सत्कार्य करनेकी तुमको इच्छा उत्पन्न होती हो तो वह शीघ्रतासे करो, जिससे दूसरेके हृदयमें उपकारकी भावना उत्पन्न हो। किसीकी भलाई शनैः शनैः की जाती है तो उसको अपकारके सदृश ही मालूम होता है।

एसोनियस।

तू दिनरात अपने हृदयसे यह प्रश्न कर कि तूने कितने दुःखी और दुष्ट मनुष्योंपर दया प्रगट की है।

मार्कस अन्टोनियस।

मानव जीवनोंका आधा दुःख परस्पर दया, परोपकार और सहानुभूतिसे दूर किया जा सकता है। एडिसन।

गरीबको आश्वासन दो, निर्बलको सहायता और आश्रय दो; और अपने पूर्णबलसे दुष्टताको निर्मूल कर दो। इससे ही तुम अपना भाग्य विकसितकर सकोगे और वह भी तुमको उसका बदला अवश्य ही देगा। अल्फ्रेड दी ग्रेट।

यदि तुमने अपने पड़ोसीकी कुछ भलाई की है और उससे उसकी स्थिति सुधरी है तो पुनः कीर्ति और आभार प्राप्त करनेकी आशारूपी मूर्खता क्यों करते हो ?

मार्कस औरेलियस ।

जो जगतको चाहता है उसके लिये जगत विशाल है। किन्तु जो उसको नहीं चाहता उसके लिये जगत शून्य है।

टी० बी० आल्डिक ।

मुझे ऐसे कोमल और दयालु हृदयकी आवश्यकता है जिससे दूसरोंके दुःखोंका अनुभव हो। मुझमें ऐसी शक्ति उत्पन्न हो जिससे प्रारब्धका दण्ड सहन कर सकूं और परमात्माको आज्ञा पालन कर सकूं। इसके लिये दृढ़ मन और लोहेकी छातीकी मुझे आवश्यकता है।

जे० क्यू० एडम्स ।

यदि हम चाहें तो दिवसके अन्तमें अपनी डायरीमें पवित्र विचार, निःस्वार्थ कार्य, आनन्ददायक आशाएं और अपनी तुच्छ वृत्तियोंपर प्राप्त विजय अवश्य लिख सकते हैं।

एल० एल० एलन ।

तुम दोमेंसे कौन कार्य करोगे—हंसकर दूसरोंको सुखी करोगे या चिड़चिड़े बनकर आसपासके मनुष्योंको दुःखी बनाओगे ? तुम अपना हंसमुख चेहरा दिखाकर या आनन्ददायक शब्द बोलकर दूसरोंको असीम सुख पहुंचा सकोगे। जैसा आनन्द दयाके कार्योंसे प्राप्त होता है वैसा आनन्द और कहीं नहीं। तुम रात्रिमें सोनेके समय, प्रातः उठते समय और कार्यमें प्रवृत्त हो तब सारे दिन उसका अनुभव करोगे।

मेरिएड एगोल्ट ।

सर्व मनुष्योंको सगा सम्बन्धी बनाओ। मात्र अपना ही भला न सोचो, समस्त जीवोंमें आत्मा एक समान है तथा आंसुओंमें भी जाति नहीं है क्योंकि वे सदा क्षाररूप ही प्रस्रवित होते हैं। हरएक परोपकार करनेवाला उच्च है और अपकार करनेवाला नीच है। ई॰ आर्नोल्ड.

तुम कहते हो कि हमारे पास धन माल रखनेकी जगह नहीं है; खैर, तुम्हारे पास स्थान करनेके साधन तो हैं ही। मैं तुम्हारे कथनके अनुसार ही कहता हूं कि तुमको अपने तहखानेको तोड़ गिरानेकी आवश्यकता नहीं है। मैं तुमको उससे भी उत्तम स्थान बताऊंगा जहां तुम्हारा अन्नादि भरकर रखा जासके और चोरका भय बिल्कुल न रहे। तुम उसे गरीबके हृदयमें रखो जहां घुन आदि उसको खराब न कर सके, और पुराने भी न हों। तुम्हारे पास गरीबकी गोदी रूपी तहखाना है; विधवाओंके घर तुम्हारे कोठार हैं, बालकोंके मुखरूपी स्थान भी तुम्हें अन्न भरनेके लिये हैं। ये कोठार शाश्वत हैं। ये कोठार कभी उभरानेवाले छलकनेवाले नहीं हैं जिससे तुमको इनके गिरा देने की आवश्यकता पड़े। जब पृथ्वीमाता, जो कुछ उसे मिलता है उससे कई गुना अधिक दे देती है, तो फिर तुम जो दयाके कार्य करते हो उससे कितना गुना अधिक फल तुमको मिलेगा।

सेइन्ट एम्ब्रोस।

प्रत्येक मनुष्य जिस प्रकार उपकार करनेवाला है उसी प्रकार उपकृत होनेवाला भी है। इसलिये जो तुम किसीके साथ कोई सत्कार्य करो तो उसका उपकार मानो क्योंकि उस।

करनेके लिये अवसर दिया है। और उसको इस कार्यके लिये तुम्हारा आभार मानना चाहिये।

ओ मानव! तू जिसको चाहता है तो तुझे उसके जैसा ही होना चाहिये। यदि तू परमात्माको चाहता है तो परमात्मा जैसा बन और यदि मिट्टीको चाहता हो तो मिट्टी बन जा।

भला बन जिससे तू सुखी होसके और निरोगी हो रह जिससे दूसरोंकी कुछ सेवा कर सके।

अपना जीवन दूसरोंके लिये है, और जो कुछ तुमको प्राप्त हुआ है वह मनुष्य जातिके उपयोगके लिये है। इस प्रकारकी भावना जिसको जरा भी नहीं है वह मनुष्य सच्ची महत्ता कभी नहीं प्राप्त करसकता।

परोपकारके सच्चे कार्य करनेके लिये मनुष्यको प्रथम स्वयं परिश्रम करना सीखना चाहिये,—स्वयं प्रयत्न करना चाहिये और गरीब एवं अज्ञातियोंके पास रहना चाहिये। तुम सेवासमिति आदिके द्वारा गरीबोंके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन उत्तम प्रकार न कर सकोगे। तुमको स्वयं उनका सहयोग और उनकी सेवा करनी चाहिये। जो मनुष्य स्वार्थत्यागका तिरस्कार करता है, उसे हंसीमें डाल देता है, वह उससे उत्पन्न होनेवाले सामार्थ्य एवं आनन्दका कभी अनुभव नहीं कर सकता। यही मनुष्य

(१) जाति (वर्ण) और भावनामें कार्यकारणका भेद होता है। सुजातिसे उत्पन्न पुरुषकी भावनायें सुदृढ़ और अविचल होंगी, परीक्षाके समय घात प्रत्याघातोंसे चलित न होकर स्थिर रहेगी। प्राक्तन संस्कारोंका असर भी भावनापर पूर्ण कार्य करता है।

स्वार्थत्यागसे प्राप्त होनेवाली शांति प्राप्त कर सकता है जो दूसरेके हितके लिये अपने आपको पूर्ण उत्साह और श्रद्धासे बलि करदेता है।

जो सचमुच ही दूसरोंको दुःखसे मुक्त करना चाहते हो, तो तुमको एक बात भली प्रकार समझ लेना चाहिये। वह बात यह है कि जब तक धनवान निर्धनोंको धन न दें, यही नहीं किन्तु सदाचारी पुरुष भी आचारहीन मनुष्योंको सद्गुणी न बनावें तब तक दूसरोंको दुःखसे मुक्त करना कठिन है। जब-तक तुम मनुष्योंको स्वावलम्बी, बुद्धिशाली, कष्टसहिष्णु और सहायताके स्थानपर कष्टोंके सहन करनेमें प्रसन्न होनेवाला न बना-आगे तबतक तुम दरिद्रताको दूर न कर सकोगे।

जिस समय हम कोई कार्य अपने लिये नहीं किंतु अपने बन्धुओंके लिये करते हैं उसी समय हम सौभाग्यवान होते हैं। जिस समय हम प्रफुल्लित अपनी सर्व शक्तियोंको दुःखी मनुष्योंके लिये उपयोगमें लाते हैं उसी समय उनको हम संपूर्ण प्राप्त करते हैं।

एक नीचसे नीच जातिका मनुष्य जब सबल, विनयशील और पवित्र बनता है तो उसके साथ ही जगत भी उत्तम बनता है, और इतनी सदाचार वृद्धिसे किसी न किसीको सहायता और सान्त्वना प्राप्त होती ही है। फिलिप्स ब्रूकस।

सच्ची उदारता मुट्ठी मुट्ठी देनेकी अपेक्षा पात्र और अपात्रका विचार कर देनेमें है। ब्रुचर।

हम उस परिमाणमें ही अधिक संपत्तिशाली होते हैं जिसमें हम जगतसे कुछ लेनेकी अपेक्षा कुछ दे सकें। कितने ही मनुष्योंका जीवन मुहल्लेमें होकर जाते हुये बाजेवालेकी तरह सदा रहता है—सुन्दर बाजेकी ध्वनिसे जिस प्रकार सबको चारों तरफसे आनंद होता है ठीक उसी प्रकार वे भी सबको आनंदित और सुखी करते हैं।

सब कलाओंमेंसे न्याय और उदारतासे जनसमूहमें रहना सर्वोत्तम है। अपने भाइयोंमें एकतासे रहनेके लिये जितना परिश्रम, जितनी शिक्षा, जितनी बुद्धिमत्ता और जितने अनुभवकी आवश्यकता है उतनी किसी अन्यमें नहीं। अपने बालकोंको सिखाने योग्य पेट भरनेवाले सर्व उद्योग धन्धाओंकी अपेक्षा इस कलाका सिखाना बहुत आवश्यक है। यदि यह कला न आती हो तो अन्य सर्व ज्ञान और कलायें व्यर्थ हैं। मानव समाजमें प्रेमसे रहना सीखना और सिखाना ही जीवनका मुख्य कार्य है।

तुम्हारे मित्र जब तक जीवित रहें तबतक अपने प्रेम और विनयकी वृत्तिओंको दाबकर न रखो। उनके जीवनमें मधुरताकी धारा बहाओ। वे जब सुन रहे हों तब उनसे प्रिय प्रोत्साहक शब्द कहो, जिससे उनका हृदय तीव्रगतिसे उछले।

एच० डब्ल्यु० बीचर।

दिनको सत्कार्योंसे विभूषित करना और रात्रिको सद्विचारोंसे प्रकाशित करना ही जीवन है। स्वकीय आत्माको सत्यरीतिसे चाहनेके लिये हमको परमात्मासे प्रेम करना चाहिये और

परमात्मासे प्रेम करनेके लिये परमात्मस्वरूप सब जीवोंपर प्रेम करना चाहिये, केवल सांस चलने और रक्तके प्रवाहित होनेमें ही जीवन नहीं है। हमको जीवनकी गिनती वर्षोंसे नहीं, किन्तु कार्योंसे, श्वासोच्छ्वाससे नहीं किन्तु विचारोंसे और दिखावटसे नहीं किन्तु सहानुभूतियोंसे करना चाहिये। वही सबसे अधिक दीर्घायुषी है जो गंभीर विचार करता है, सर्वोत्तम सहानुभूति रखता है और उत्कृष्ट कार्य करता है। पी० जे० वेइलि।

तुम अपने जीवन और सर्व पार्थिव पदार्थोंसे ममत्व त्याग दो, क्योंकि इससे तुम, जो कुछ तुम्हार पास है और जैसे तुम हो उस सबके द्वारा परमात्माकी सेवा और मनुष्यकी भलाई कर सकते हो। जिस समय तक यह सर्व पूर्ण न होजांय उस समय तक जीवन पर्यन्त इसी प्रकार कार्य करते रहो।

निःस्वार्थ सहानुभूतिके थोड़े ही हास्यसे, थोड़े ही मृदु शब्दोंसे और स्वभावपर थोड़े ही अंकुशसे, अपने पड़ोसियोंके सुख दुःखमें महत्वपूर्ण परिवर्त्तन होजाता है।

---

१ यदि जीव अपने आत्मबलकी उन्नति करता जाय, और अपनी आत्मासे लगे हुए राग-द्वेष विकारोंको दूर कर दे तो हर एक जीव परमात्मा होसक्ता है। इस लिये सदा अपनी उन्नतिमें लगे रहना चाहिये और सदाचरण पालकर क्रोध, मान, माया, लोभ छोड़ देनेका प्रयत्न करना चाहिये।

२ यद्यपि जिसके आयु-श्वासोश्वास-बल और इंद्रिय मौजूद हैं वह जीवन अवस्थायें ही हैं परंतु उसका वह जीवन मृतक जीवनके समान है।

अपने सब मित्रोंमें, अपने गृहमें, अपने प्रतिदिनके साथियोंमें—दुखी और गरीब, सुखी एवं धनी सबमें अपने जीवनकी सुगन्ध उत्तम भावनाओंकी प्रेरणापूर्वक प्रेम लहरी आनन्द और उत्साह भरो। अंधकारमें पड़े हुये आत्माओंको तेजस्वी बनाओ, कठोरको कोमल बनाओ, दुःखमय गृहोंमें शान्ति फैलाओ और मनुष्यके दोष एवं मूर्खताको सदाचार और प्रेमके पुष्पोंसे ढक दो। दूसरोंपर प्रेम करनेसे तुम सबको जवानीका आनन्द दोगे और तुम स्वयं अपार-आनंद पाओगे, इसका कारण यही है कि तुम्हारे प्रेमसे सुखी हुए सर्व आत्माओंके सुखका प्रवाह तुम्हारे हृदयमें बहेगा। सुखकी प्राप्तिके लिये यही सर्वोत्तम उपाय है। स्टॉप्फर्ड ब्रूक्स।

जो मनुष्य मृत्युके पश्चात् दान करनेको कह जाते हैं, परन्तु यदि न्यायदृष्टिसे देखा जाय तो वे अपने धनसे नहीं किन्तु दूसरेके धनसे अपनी उदारता प्रगट करते हैं। भलाईको मैं आदत कहता हूं और स्वाभाविक दयाको वृत्ति। ये गुण प्राकृतिक होनेसे सब गुणों और उत्तमताकी अपेक्षा श्रेष्ठ हैं। इनके विना मनुष्य एक उद्योगी, उपद्रवी और कंगाल पुतला है। वेकन।

जो यथाशक्ति सेवा करनेका प्रयास करता है, वह उसकी कल्पना भी न कर सके उतना अधिक सत्कार्य कर सकता है।

कुछ न कुछ परोपकार हम सब कर ही सकते हैं और हमसे जितना हो सकता हो उतना यदि हम करें तो (करनेकी शक्ति चाहे जितनी हो तो भी) हमने आत्मत्याग ही किया यही कहा जायगा।

जो महात्मा सारे देशकी सेवा करते हैं और जिनके सत्कार्योंकी हजारों मनुष्य सराहना करते हैं, उनके समान हम भी हो सकते हैं किन्तु इसके पूर्व हमको यह विश्वास होना चाहिये कि हमसे जितना हो सकता था उतना हमने किया ? और प्रकृतिदत्त सर्व शक्तियोंको पूर्ण रीतिसे दूसरोंके सुखके लिये लगाया है ? इसी स्थान पर हमें अपनी आत्माको धोखा देना संभव है क्योंकि अशक्तिका बहाना करके हम अपने आलस्यको छिपाते हैं।

हम जिसे अपना कर्त्तव्य मानते हैं, उसके पालनमें चाहे जितनी कठिनाइयां आती हों तो भी हमको निराश न होना चाहिये, क्योंकि यदि हम अपने सारे बलकी परीक्षा करते हैं तो हमारी भाग्यदेवी अवश्य सहायता करती है।

हमको अपनी शक्तिकी परीक्षाका कोई भी अवसर तुच्छ न समझना चाहिये। प्रत्येक विषयकी संपूर्णता पर लक्ष्य देनेसे ही हम अपनी वर्त्तमान स्थितिको यथासंभव उन्नत बना सकते हैं।

बाउडलर।

कभी २ के कार्योंसे नहीं, किन्तु प्रतिदिन वार २ प्रयास करके सद्गुणोंको विकसित करना चाहिये। उनको नियमितरीतिसे प्रवृत्त रखना चाहिये जिससे वे अधिक तेजस्वी और उपयोगी हों। उनको धूम्रकेतुके सदृश क्षणिक तेजसे चलनेवाला नहीं किन्तु दिनके उजियालेके सदृश नियमित प्रकाश देनेवाला बनाना चाहिये। तथा वे इंद्रियोंको क्षणभर आनंद देनेवाली सुवासित पवनकी लहरोंके समान नहीं किन्तु सतत पवित्र और स्वास्थ्यप्रद पवन देनेवाली असामान्य लहरके समान होने चाहिये।

कदाचित् हमको वर्षों तक परोपकारके महान् और प्रसिद्ध कार्य करनेके लिये एक भी अवसर न मिले, परन्तु अपने दैनिक जीवनमें विशेषकर सामाजिक व्यवहारमें ऐसा एक भी दिन नहीं जाता जिसमें हमें दूसरोंको सुख पहुंचाने और अपने सद्गुणोंकी वृद्धि करनेका अवसर न मिले। इतना ही नहीं परन्तु यदि हम अपने दयालु स्वभावका योग्य उपयोग करें तो बाह्यदृष्टिसे दिखाई देनेवाले अन्य बड़े कार्योंकी अपेक्षा हम समाजके सुखमें अधिक वृद्धि कर सकते हैं।

अपने मनुष्य जीवनमें ऐसे भी अनेक प्रसंग आते हैं कि जब बहुतसा धन भेंट करनेकी अपेक्षा, उत्साहवर्द्धक स्वागतसे, प्रेमपूर्ण व्यवहारसे अथवा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिसे हम दूसरोंके हार्दिक दुःखोंको बहुत कुछ कम करसकते हैं। इसके विपरीत, देश, काल, पात्रके विवेक और समताके बिना लाखों करोड़ों रुपयेकी उदारता भी परोपकारके सच्चे उद्देश्यको शायद ही सिद्ध कर सके, इतना ही नहीं किन्तु ऐसे व्यवहारसे कभी कभी यह होता है कि जिनको हम सुखी करना चाहते हैं उनको उलटा दुःख ही होता है। यह पूर्ण स्मरण रखो कि जब दान कर्कश स्वभावसे दिया जाता है तब वह तलवारका काम करता है।

डाक्टर ब्लेर।

दुःखी मनुष्य आपत्तिमें पड़े हुए अपने भाई ही हैं। उनको दुःखोंसे मुक्त करनेमें हमको कितना आनंद मिलता है? संसारकी समग्र वस्तुओंमेंसे उदार और दयालु हृदयका अपनी आत्मासे अति घनिष्ट संबंध है।

आर० वर्न्स।

प्रायः बहुतसे मनुष्य सर्वोत्तम और पवित्र साधनों तथा परोपकार करनेके योग्य पूर्ण शक्तिके होनेपर भी समाजके लिये उपयोगी नहीं होते हैं और अपना जीवन व्यर्थ ही खोते हैं। इसका कारण यह है कि उनमें कार्य करनेकी अच्छी लगन नहीं है अथवा उनकी मानसिक शिक्षा अपूर्ण है और आभ्यन्तरवृत्ति शिथिल है, इसलिये ही वे अपने दयाके अधिक कार्य इस प्रकार करते हैं कि जिससे न तो किसी दुःखी जीवको धैर्य ही होसक्ता है और न किसी अनुत्साहीको उत्साह ही प्राप्त हो सक्ता है।

बहुतसे मनुष्योंमें सेवा करनेकी शारीरिक अथवा आर्थिक शक्ति कम होने पर भी उनमें ऐसा हार्दिक उत्साह और ऐसी योग्यता होती है कि जिससे वे सर्वत्र अपने आसपास आनंद और ज्ञानका प्रसार निरंतर करते ही रहते हैं। और सदा परोपकारके कार्य करते हैं। उनकी दया ऐसी पिछडी हुई बुद्धिकी नहीं होती है कि जिससे वे सहायता करनेके समयको बिलकुल ही बेकार खो बैठें। वे दुःखोंको दूर करनेके प्रयासोंकी योजना करते हुए कभी भी क्रूर बननेके भारी दोषमें नहीं पड़ते हैं, वे अपनी स्वाभाविक विचारशक्तिसे यह अच्छी तरह समझते हैं कि कौनसे प्यारे और मीठे हितकारक वचन कहना चाहिये? कौनसा कार्य श्रेष्ठ है? और कौनसे कार्य करनेसे जनताको विशेष लाभ होगा? उनके कार्य करनेकी चतुराईसे कठिन अवसर भी सरल बन जाते हैं। एक शान्त आतमा ऐसे मधुर शब्दोंको सहज ढूंढ लेती है कि जिनको श्रवण करनेसे प्रचण्ड क्रोधीका भी क्रोध अपने आप ही विलीन हो जाता है-शांत हो जाता है। संकटपूर्ण

अवसर और विघ्नबाधाओंको दूर करनेकी रीतिको वे भलेप्रकार जानते हैं। विरोधका प्रसंग उपस्थित होनेपर उभय पक्षमें शांति प्रसार करते हैं। जब कहीं कहींपर बोलनेकी अपेक्षा मौन रखनेमें विशेष लाभ दिखता है तो वे उस समय चुप रह जाते हैं।

रेवरण्ड डाक्टर जे० आर० मिलर।

यदि तुम प्रेम, सरलता और विनयसे लोगोंके मन वश कर चुके हो तो इसमें यही गंभीर रहस्य होगा कि तुम दूसरोंके लिये अपने आपको तथा स्वार्थको भूल गये होगे। हे नरदेव! इस गुप्त शक्तिको निरंतर धारण किये रखना, क्योंकि यह स्वर्गसे आई हुई ज्योति है। प्रिंस कॉन्सर्ट।

कुटुम्ब और परिवारके सर्व मनुष्योंको सुख और शांति देनेवाली मातासे भी अधिक मनोहर मूर्ति एक है, और वह कुमारिका है, उसके अपना परिवार न होनेपर भी उसके सहयोग और परिचयमें आनेवाले सर्व मनुष्योंको सुख और उत्साह देनेमें तथा सर्व मनुष्योंके हृदयोंमें स्थान प्राप्त करनेमें ही वह अपना जीवन व्यतीत करती है। यद्यपि उसको अभी भी पत्नी अथवा माता बननेका अवसर प्राप्त नहीं हुआ है तो भी पत्नी और मातामें जो सबसे पवित्र और उत्तम वस्तुएं रहती हैं वे उसको प्राप्त होगई हैं। जी० एस० मेरिएम।

कितनेही शब्द सूर्यके किरण सदृश होते हैं और कितने ही सांपकी दंष्ट्रा अथवा विषैले वाणके समान होते हैं। जिस प्रकार कठोर शब्दोंसे मनुष्योंको अधिक दुःख होता है ठीक वैसे ही प्यारे और मीठे शब्दोंसे मनुष्योंको अपार आनंद भी प्राप्त होता है। सर जे० लबक।

दुर्बलसे दुर्बल और दीनातिदीन मनुष्यको भी यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि चाहें तो वे अपने आसपास स्वर्गीयसुख फैलासक्ते हैं और अपरिमित आनंद वर्षा सक्ते हैं। प्यारे मधुर वचन, कृपादृष्टि और अन्यका हृदय न दुःखे ऐसे अपने वर्ताव (नीति)में तो एक फूटी कोडी भी खर्च नहीं होती है। हां तो भी उनका मूल्य कल्पनातीत है। क्या ये गुण सदा अपनेको पुष्ट और शांतिशाली बनानेवाले नहीं हैं? क्या दूसरोंकी दयादृष्टिपर ही हम प्रत्येक घंटा अथवा प्रतिक्षण जीवित रहें और सुख प्राप्त करें यह हम नहीं करसक्ते हैं ?। ऐफ० डब्ल्यु० रावर्टसन।

केवल बुद्धिमत्ता औ कुशलतामें ही पडे रहनेकी अपेक्षा छोटे छोटे दयाके कार्य, अल्प विनय और दूसरोंके लिये थोडासा विचार इन सबको अपने सामाजिक व्यवहारमें नियमितरीतिसे पालन करनेपर अपना चरित्र विशेष उज्वल बनता है।

एम० ए० केल्टि।

मस्तक पर चिंताओंकी रेखा जिनके दृष्टिगत नहीं होती हैं परन्तु जिनके नेत्रोंसे आनंदकी धारा वरस रही है, ऐसे सेवाव्रती पुरुषोत्तमोंके पधारनेसे लोग प्रसन्न होते हैं। ऐसे महात्मा इस संसारके गोरखधंधेसे होनेवाली घटनाओंको अस्फुट हास्यसे विचारते हैं, और अंतमें हमको भी यह शिक्षा देते हैं कि कदाचित हम रोगी हुए होते तो यह घटना इससे भी अधिक अशुभ बनी होती। वे हमसे यह कहेंगे कि 'तुम कलकी अपेक्षा आज अधिक अच्छे हो,। यदि हमको मृत्युसे वचनेकी आशा बिलकुल न रही हो तो वे हमको परमात्माके अमूल्यगुणोंका स्मरण

कराते हैं, यही नहीं किन्तु परलोकका अच्छा बोध कराते हैं। यदि हम अपने कार्यसे हताश होगये हों तो वे हमारे सत्कृत्योंके गुप्त रहस्यको इस प्रकार समझाते हैं कि भाई! 'तुम जो भलाई कर रहे हो उसका मूल्य नहीं जानते हो,। वे हमारे उत्साहको बढ़ानेवाली बातें सदा कहते हैं वे हमारे लिये चाहिये ऐसी भलाई करते हैं। वे हमारे शिशुओं (बालकोंको) की, हमारे अच्छे स्वभावकी और हमारे सत्कार्योंकी सराहना करते हैं। वे हमारे दुःखोंमें सुखका दिव्यदर्शन कराते हैं, वे हमको उत्तम-पवित्र और सुन्दर कार्य सम्बंधिनी कथायें सुनाते हैं, वे सूर्यके प्रकाश, उत्तम पुष्प, और राजहंसके समान आते हैं। अथवा जगदुपकारी मुनि समान आवागमन करते हैं जब वे हमारे पाससे जाते हैं तब हाथ जोड़कर यह कहते हैं कि हे प्रभो! पुनर्दर्शनं भूयात्। रेवरण्ड जे० ऐच० शेक्सपीअर ऐम०ए०

इस संसारमें मनुष्यको यदि अभिमान करने योग्य कुछ वस्तु है तो वह किसी गुप्त निकृष्ट उद्देशसे नहीं किन्तु निर्मल बुद्धिसे किया हुआ सत्कार्य मात्र है। स्टर्न।

जो अन्यकी सेवा करता है वही सज्जन है-जो अन्यके लिये कष्टोंको सहन करता है वह उत्तम है। हां एक बात यह भी है कि जिनकी वह सेवा कर रहा है और उनकी तरफसे सेवा करनेमें जो दुःख आयें उनको धैर्य और शांतिसे सहन करे तो उसकी श्रेष्ठता इतनी उच्चकोटिकी हो जाती है कि इससे अधिकतर दुःख हों तो भी उसके मनमें क्षोभ नहीं होता। यदि

वह परोपकार करते हुए मृत्युको प्राप्त हो जाय तो सद्गुणोंके अंतिम शिखरपर पहुंच जाता है। वही महावीर है। व्रयेर।

कितने ही मनुष्य जब अन्यकी सेवा करते हैं तब वे यही निश्चय कर बैठते हैं कि हमने उनपर उपकार किया है और वे उनको अपना ऋणी समझते हैं। कुछ दूसरे प्रकारके लोग ऐसे भी हैं कि उनको निश्चय तो ऐसा नहीं है किन्तु वे अपने मनमें तो ऋणी उनको समझते ही हैं। और स्वयं जो कार्य किया है उसका स्मरण करते हैं। इन सिवाय तीसरे प्रकारके विरले मनुष्य वे हैं जो स्वयं क्या किया! यह भी नहीं जानते। वे द्राक्षके

---

१ यदि हम अपनी प्रतिष्ठा और मानबड़ाईके लिये परोपकारके बहानेसे कारावास सहें अथवा आत्मघात करें तो वह दुर्गुण है-हत्या है। यथार्थ सेवा वह है कि हम निःस्वार्थवृत्ति (सन्मान, द्रव्य और कीर्तिके लोभ विना) से निस्पृह होकर हार्दिक प्रेम प्रदर्शन करें-सच्ची दया दिखलावें। कदाचित् ऐसे करनेमें अनायास ही मरण हो जाय तो वह आत्महत्या नहिं किन्तु सेवा है। परन्तु आजकल बहुतसे असमञ्ज नेता बननेवाले जानबूझकर ऐसा कर बैठते हैं कि जिससे जनताका प्रेम और सन्मान उनको मि जनता उनकी प्रतिष्ठा करे, धन प्रदान करे, इस कुत्सित वासनासे सेवा करना एक प्रकारका अपराध करना है हम ऐसी सेवाको पापमूला कहते हैं। और इस प्रकारकी सेवाकर कारागृह भोगना भी सेवाफल नहीं किन्तु उचित दण्ड है। हां सेवाके उद्देश पवित्र-उत्तम-सार्वजनिक भलाई लिये हुए आत्मचरित्र हों, सदाचारके बीज हों, नीतिके स्वरुप हों, दयामयी हों। हमारा लिखनेका अभिप्राय यह नहीं कि राजनैतिक आंदोलन न करो। नैतिक बल बढाना चाहिये भले ही वैध आंदोलन करो, विदेशी वस्तुओंका बहिस्कार करो सत्याग्रही बनो, आत्मरक्षा करो, परंतु अनीति रूपमें न लाओ। आत्म-शंसाके लिये उत्पात न करो।

समान हैं। उनको सेवा करनेके पश्चात् किसीकी अपेक्षा नहीं होती है।

हे मानव! तू अपने बंधुओंकी सेवा करनेके पश्चात् किसकी अपेक्षा रखता है? तुझको इतनेसे संतोष नहीं हुआ कि तूने सेवाकर अपने मनमें कितना अपार आनंद प्राप्त किया?। आंखों देखनेके बदलेमें, और पैर चलनेके बदलेमें जिस प्रकार अपनी सपर्या (खुराक) की इच्छा रखते हैं ठीक उसी प्रकार तुम्हें भी क्या सेवाके बदलेकी आशा रहती है?। मार्कस ऑरेलियस।

मानव समाजकी आवश्यकता और उनके दुःखोंका यदि हमको पूर्ण ज्ञान हो तो वह आत्मशिक्षण और स्वविकाशका उत्तम साधन है। हार्दिक संपत्ति जैसे जैसे प्रदान की जाती है वैसे वैसे वह बढती है। जीवोंकी भलाईके लिये जितनी हम उस संपत्तिका दान करते हैं उससे कईगुनी अधिक हमको मिल जाती है। प्रत्येक कार्यकी सहृदयतासे मन प्रफुल्लित होता है। कार्यको अपने विशुद्धभावोंसे करनेसे ही प्रेम बढ़ता है, सेवा करनेकी इच्छा जाग्रत होती है, आत्मा विकसित होता है और वह विकाश स्वयं बाहर निकलकर सर्वत्र फैलजाता है जिससे वह अनेक आत्माओंको सन्मार्ग दिखलाता है।

रेवरंड आर० पी० डाउन्स।

जितने प्रमाणमें अन्यकी सेवा की जाती है उतने ही प्रमाणमें चारित्र उत्कृष्ट बनता है, परंतु दूसरोंसे क्या छीन लेना चाहिये? ऐसे विचारसे मनुष्य अधम बनता है।

रेवरंड आर० पी० डाउन्स।

अनेकवार ऐसा भी होता है कि अधिक बुद्धिमानीके वचन ऊसरभूमिके समान फलप्रद नहीं होते, परंतु दयाका एक भी वचन कभी भी व्यर्थ नहीं होता है। सर ऐ० टेलस।

संसारके विलक्षण परिवर्तनमें, तथा विपत्तिके समय अपनी आत्मकसोटीमें सच्ची सुख शांति विशुद्धप्रेम, ज्ञानकी भक्ति और सत्कार्यकी जिज्ञासामें ही हैं। गटे।

सदाचारी बननेकी इच्छा उच्च आदर्श स्वात्माभिमान है और जिन महापुरुषोंमें वह इच्छा थोड़ी बहुत भी होती है वे अवश्य ही भाग्यशाली हैं। जब तक कोई भी मनुष्य मात्र विचार विचारमें लीन रहता है तबतक उसका कुछ भी महत्व नहीं है। जब वह सत्कार्य करने लग जाता है तब ही वह महात्मा कहने योग्य है। गटे।

किस किसको नितांत आवश्यकता है? कौन सबसे अधिक उपयोगी है? योग्य है? किसके पास क्या क्या साधन है? किनको किन किन बातोंकी अतीव आवश्यकता है? और किसकी स्थिति तत्काल ही दया करने योग्य है? इन सब प्रश्नोंका विचार उदार पुरुष शीघ्र ही अपने विशुद्ध दयामयी हृदयसे कर लेते हैं और जिन जिनको जैसी जैसी आवश्यकता होती है तदनुकूल दान दिया ही करते हैं। वे नंगेको वस्त्र, भूखेको अन्न और अज्ञानीको ज्ञानदान देते हैं। वे हताश मनुष्योंको आशा प्रदान करते हैं, जो मनुष्य अज्ञात कठिनाइयोंमें पड़े हैं उनको तथा अनुभवहीन मनुष्योंको वे योग्य सलाह देते हैं। कदाचित् उन महात्माओंके पास सबकी इच्छा पूर्ण करने लायक साधनोंका

अभाव होगया हो तो वे भीख मांगनेमें कुछ नहीं शरमाते हैं। और इस तरह निराश्रित पुरुषोंकी सहायता करते हैं। उनको थकावट नहीं मालूम पड़ती है। अपने पड़ोसी कौन हैं ? इस बातका वे बिलकुल विचार नहीं करते हैं। समस्त जीव मात्रको वे एक " सबकी आत्मा समान है " इस सूत्रसे बन्धे हुए मानते हैं। जब वे परमात्माकी भक्ति और सद्गुणसे प्रेरित होकर ध्यान करते हैं तब वे अपने चारों तरफ जीवोंकी भलाई करनेका दृढ़ संकल्प कर लेते हैं, और वे ' सब जीव मेरे समान हैं ' इसको अच्छी तरह समझ लेते हैं।　　　　बाल्फर ।

दुःखी जीवोंकी सेवा करना यह सदा महान् और उत्तमकार्य है। और उसको पूर्ण करनेके लिये सबको मृत्युपर्यन्त निरंतर उत्साह पूर्वक लगे रहना चाहिये।　　　　डाक्टर रुथ ।

यह सिद्धान्त है कि उदार बननेके प्रथम न्यायके सिद्धान्त स्वीकार करो और स्वयं न्यायी बनो, और है भी यह बात सत्य, क्योंकि यदि मनुष्य अपने कर्तव्योंको भूल जाय तो वह चाहे जितने साधन परोपकारमें लगावे तो भी वह उदार नहीं है। अपना प्रथम कर्तव्य न्याय है और दूसरा कर्तव्य—अपने पड़ौसियोंको न्यायपरायण बननेके लिये सहायता देना है। जो उदार मनुष्य ऐसा करना भूल जाता है वह केवल दंभी और उड़ाऊ है। और उसके द्वारा किसीका भी सच्चा हित नहीं होता। 'न्याय और उदारताके कार्य अनेकवार हमको करना चाहिये, उसको छोड देनेके लिये उक्त सूत्र बहाना मात्र है। वह आवश्यकताके नामपर अपने पाषाणतुल्य हृदयको छिपानेके लिये एक पर्दा है।

उस पर्देकी आड़में विना सत्कार्य किये ही ''हम सद्वृत्तिवाले हैं, ऐसी ढींग मारकर मुंहके कहने मात्रसे कुछ परोपकारका सन्मान नहीं मिल सक्ता । तुम ऐसे वाचाल और ढोंगी बनो यह मेरी इच्छा नहीं है । तुमको अपनी आत्माके साथ न्याय प्राप्त करनेका और दूसरोंको उदार बनानेका अवसर मिलेगा । ये दोनों वस्तुएं ऐसी भिन्न नहीं हैं जैसा यह सुत्र प्रकट करता है । यह तो स्मरण रखना चाहिये कि सद्वृत्ति भलमनसाई प्रकट करनेके और सत्कार्य करनेके साधन अवश्य ही शोध लेती है । सत्कार्यके साधनोंके अभावसे अथवा न्यायवान होनेसे निष्फलता नहीं होती । और न उदारतामें कुछ अंतराय हो पडता है । हां अपनी अनिच्छा ही सदा भारी विघ्न बाधा है । जिस समय हम उसपर विजय कर लेंगे तब सब सरल और सुगम कांम मालुम पड़ेंगे ।

सी० एच० हंगर ।

मनुष्योंके समक्ष उनके दोष, उनकी बुराइयां और उनकी भूलोंकी बातें कर उनका चित्रपट उनकी दृष्टिके सामने रखनेसे कुछ उच्च अथवा उत्तम जीवन वे व्यतीत नहीं कर सक्ते । किंतु यह तब ही हो सक्ता है कि जब वे अपनी आत्माकी आभ्यंतर वृत्तियोंको उन्नत-उत्तम और सदाचारी बनावें-उनको आत्मज्ञान कराया जाय, उनकी बुरी और अशिक्षित (आत्मधर्म शिक्षा विहीन) स्वभावसे जो असदाचारी आदत पड़ी हुई है उसका ज्ञान कराया जाय । उनकी मानसीक वृत्ति असदाचारसे बन्द हो रही है, खोली जाय । उनको दिव्यचक्षुकी प्राप्ति इस प्रकार कराई जाय । ऐसा करनेसे उनकी आत्मा आत्मश्रद्धानी बनेगी ।

और उस दिव्य प्रकाशको चाहेगी जो कि परमात्मामें है । मनुष्यको जिस परिमाणमें आत्मज्ञान होगा उसी परिमाणमें उसका बाह्य-जीवन और चारित्र उसके अनुकूल बनेगा । उससे किंचित् भी अधिक नहीं । आर० डब्ल्यु ट्राइन ।

जहां आत्माके प्रति अपार प्रेम है वहीं सच्चीसे सच्ची और सबसे अधिक दया है सधी ।

अपकारीपर उपकार करना सर्वोत्कृष्ट उदारता है ।

बकॅमिन्स्टर ।

मनुष्यको स्वावलंबी बननेमें सहायता देना श्रेष्ठ उदारता है । मनुष्यको स्वावलंबनके मार्गपर ले जानेसे उसको नवजीवन प्राप्त होता है । युवावस्था पुनः लौट आई मालूम होती है, क्योंकि अनेक समय रोगी मनुष्य अपनी नीरोग अवस्था पुनः पुनः प्राप्त करनेकी इच्छा करता है । डाक्टर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हॉल ।

गरीब मनुष्य अपनी स्थिति स्वयं सुधार सकें ऐसी शक्ति प्रदान करना ही सच्ची सेवा है । आर्च बिशप सुम्नर ।

सच्चा परोपकारी वही है जो दुःख परतंत्रता और परावलंबन नष्ट करनेका प्रयत्न करता है । और मुख्यतासे वही परोपकारी है जो स्वाश्रयी बननेमें पूर्ण उत्साहसे सहायता देता है ।

स्माइल्स ।

सच्चा उदार हृदयी मनुष्य इस बातका अवश्य प्रयत्न करेगा कि उसकी सहायता सबसे अधिक फलप्रद कैसे हो सकेगी ।

मेल्मोथ ।

जो गरीबको देता है वह सत्कर्मके बीज बोता है। सोलोमन।

जो जीवनके महाविकट मार्गमें दुःखसे दबे हुए निर्बल मनुष्योंको आनंद देनेका प्रयत्न करते हैं, जो मनुष्य अपने बहुत बड़े कुटुंब होनेके कारण और अपनी स्थिति बहुत अच्छी न होनेपर भी निराश्रित मनुष्योंको अपना हृदय और भोजन देते हैं, जो स्वयं आधे पेट खाकर दुःखसे पीडित भूखे मनुष्योंको अन्न देते हैं, जो अपने थोड़ेसे थोड़ेमें भी थोड़ा बचाकर जिनके पास बिलकुल ही कुछ नही हैं उनको देते हैं और जो अपनी आवश्यकताओंके होनेपर भी दूसरोंकी आवश्यकताओंको देखकर दयार्दित्त होजाते हैं, वे सब सच्ची उदारताके भक्त हैं, दयाके सच्चे सपूत हैं, यथार्थ परोपकारी हैं तथा सच्चे धार्मिक और आस्तिक हैं। ऐलीझा कूक।

हमें दुःखीको सुखी बनाना है, भटके हुएको सुमार्ग लगाना है और भूखेको अपनी एक रोटीमेंसे भी आधी रोटी बांटकर खाना है। हम ये सब अपनी ही सेवा करते हैं क्योंकि जीवमात्र अनेक एक २ अनंत गुणोंका पिंड है। सेनेका।

भाग्यदेवी प्रसन्न होकर दयालु हृदयके मनुष्य पर जो स्वर्णवृष्टि करती है तो वह गरीबोंको खुले हाथसे दान करता है। और निराधारोंका पोषण करता है। जो मनुष्य स्वभावसे सदाचारी, न्यायी और परोपकारी होता है वही इसप्रकार जीवनके उद्देश्यको सिद्ध करता है, उसको मिला हुआ धन उत्तम कार्योंमें व्यय होता है। वह दुःखी मनुष्यका घर देखकर भाग नहीं जाता किंतु उसके झोंपडेमें जाकर उससे मिलता है। वह कारागृहमें

अपराधी (कैदी) से मिलता है, वह विधवाकी आंतरिक वेदना सुननेके लिये खड़ा होजाता है, वह उसके दुःखमें सहायता देनेका प्रयास करता है, वह जीवोंको परलोकके सुखोंका ज्ञान कराता है। वह अनाथ बालकोंको, मित्ररहितको, भाग्यहीनको और गरीब दीन दुःखी पुरुषको तिरस्कारकी दृष्टिसे नहीं देखता, किंतु उनका अपने घरपर हार्दिक स्वागत करता है। सर्व मनुष्योंको वह अपना मित्र समझता है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' ही उसका मूल मंत्र है, समस्त भूतलको वह अपना देश मानता है, उच्च चारित्रको अमूल्य रत्न मानता है, और सत्यको अपना हार समझता है। एलिझा कूक।

सद्वस्तुमें उत्तमता है। और 'सच्चारित्र' ही उसका पारितोषिक है। उसको अपनी प्रशंसाकी बिलकुल ही आवश्यकता नहीं रहती। मार्कस ओरेलियस।

मनुष्यमें जो धैर्य सहनशक्ति, उत्तमक्षमा, और सदाचार आदि गुण हैं उसके कारण ही मनुष्यजन्म इतना महत्वका है। ओथेर हेल्प्स।

जब कोई महान परोपकारी महात्मा मर जाता है तब वह ऐसा प्रकाश छोड़ जाता है कि जिससे सर्वत्र बहुत समय पर्यंत सुमार्ग दिखता ही रहता है। लोंगफेलो।

सेवाका आधार धन नहीं है किंतु विशुद्ध हृदय और सदिच्छा है। हाना मोर।

महात्मा परोपकार करनेमें ही लीन रहते हैं। वे दुष्टोंपर भी दया करते हैं। रोवे

यह तो हो ही नहीं सक्ता कि जड पदार्थोंमें कोई महत्ता न हो। उनका जो उपयोग होता है उसीके कारण उनमें महत्ताका मात्र आरोप किया जाता है। संसारमें सर्वोत्तम और सच्ची महत्ता तो निःस्वार्थ प्रेम-सेवा और आत्मत्यागमें है।

आर० डब्ल्यु० ट्राइन।

जो सच्चे मनसे अपनी शक्तिका उपयोग दूसरोंके कल्याणके लिये करते हैं वे ही उस शक्तिके पात्र हैं। तथापि वे उसकी इच्छा नहीं करते और जो उसका किसी स्वार्थके वश उपयोग करता है वह इच्छा करते हुए भी उसका पात्र नहीं। काल्टन।

जबसे माताके गर्भमें आते हैं तबसे मरणपर्यंत बिना दूसरेकी सहायताके हम जीवित रह नहीं सक्ते, अतएव जिनको सहायताकी आवश्यकता है उन्हें अपने मानव बन्धुओंसे उसको मांगनेका पूर्ण स्वतः सिद्ध हक (सत्व) है। और जो शक्ति होनेपर भी देना अस्वीकार करता है वह पापी है। डब्ल्यू स्काट।

जितनेमें तुम्हारा पेट भरे उतना ही कमाकर संतुष्ट न हो। किन्तु इतने कमानेका प्रयत्न करो जिससे अन्यका भी पोषण हो सके। ऐसा तो कभी भी मत होने दो कि जो तुम दे सक्ते थे उसके न मिलनेसे कोई मनुष्य मर जाय। स्टर्म।

'अपना स्वार्थ अंतमें सिद्ध करो' यदि इस सूत्रको धर्मकी रीतिसे स्वीकार करोगे तो तुम्हारी सेवासे संसार अवश्य उत्तम बनेगा। इसलिये जाओ, इस सूत्रसे आचरण करो। मनुष्य मात्रको यह धर्म नियमित ग्राह्य है। एल० विल्कर विलकाक्स।

जो मनुष्य 'मेरे सब जीव समान हैं' इस सूत्रसे सर्व जीव

मात्रको अपना बन्धु समझकर उनके साथ आत्मधर्मका वर्ताव करता है—पूर्ण दया करता है, वह भव्यात्मा है—उसकी आत्माके गुण विकाश हुए हैं। जो मनुष्य निर्बलसे निर्बल और तुच्छसे तुच्छ पामर प्राणीपर प्रेम करता है वह उन्नत है और जो मनुष्य अपने ही स्वार्थकी चिंता करता है, अपना ही हक चाहता है और समस्त जनताके संकटों तथा उनके हकोंकी परवाह नहीं करता वह नीचातिनीच है। लावेल।

किसी वस्तुके दान करनेमें ही दया नहीं है। किंतु हृदयकी नम्रता और बाह्य विवेकयुक्त उदारता ही दया है। अनेक बार मनुष्य थैलीसे रुपये दान कर देते हैं, किंतु सहानुभूति अथवा आश्वासन नहीं दे सक्ते हैं, धनका दान मात्र ही बहुमूल्य नहीं है उससे तो कभी कभी हानि भी होती है। परन्तु सच्ची सहानुभूतिसे प्रादुर्भूत दया और विचारपूर्वक सहायता करनेसे सर्वदा उत्तम परिणाम होते हैं। स्माइल्स।

दयालु पुरुष जिन जिनके पास जाता है उन सबके लिये आनन्द श्रोत और जीवनकी कठिनाइयोंमें विश्रांतिका फुहारा स्वरूप होता है।

मधुर और प्यारे शब्द वायुके वेग समान शीघ्र ही सर्वत्र उड जाते हैं और जिस स्थानपर बिल्कुल ही आशा न रही हो उनको फलद्रूप बनाते हैं। चार्ल्स एच० हंगर।

दया, सहानुभूति और प्रेमसे अपनी श्रेष्टता प्रदर्शन करना श्रेष्ट मनुष्योंका कार्य है। ये ही गुण सचमुच सुंदर हैं और इनसे ही मनुष्य अधिदैवी बनता है। कोपर।

सहायता, दया और सेवा ये प्रेमकी वाणी है। प्रेमने इस प्रकार अपना अनेक रूप धारण किया है। आर० डब्ल्यु० ट्राइन।

इस विराट संसारमें मनुष्य अपनी पर्याय (जबसे मनुष्यने जन्म लिया है तबसे मृत्युपर्यन्तका समय) के समयमें ही नहीं किन्तु भविष्य जन्ममें भी अपने सुखको न्यूनाधिक स्वयं करसक्ता है।

एलिहु बरिट।

जो मनुष्य दूसरोंके कल्याणके लिये अपना सुख-वैभव और शक्तिका कुछ भी भाग नहीं देता है वह कृपण है।

जोना बेइली।

जैसे जैसे मनुष्य परमात्माको अधिक पहिचानता है वैसे वैसे वह अन्य मनुष्योंका अधिक कल्याण करसक्ता है और करता है। बरबुर।

अपने कार्य अपने शरीरके साथ नाश नहीं होजाते क्योंकि प्रत्येक सत्कार्य शाश्वत जीवनके बीज हैं। सेइन्ट बर्नार्ड।

जो मनुष्य अन्यको आनंदित करता है वह स्वयं आनंदी बनता है। जे० एम० बॅरी।

मनुष्यको सच्चा स्वदेशाभिमानी बननेके लिये अपने समस्त देशबंधुओंको अपने भाई समझना चाहिये। और अपने आपको उनके कार्योंका उत्तरदायित्व समझना चाहिये। बिशप बर्कली।

सच्ची सेवाका अर्थ दान-अपने सुखका त्याग और जनसमाजकी सेवाके लिये अवकाश प्रदान करना है। आत्मत्याग और विशुद्धभावना भी यथार्थसेवा है। कॅनन बार्नेट।

सत्कार्यका कभी नाश नहीं होता है। विनय करनेवाला

विनय करता है। दया करनेवाला प्रेम प्राप्त करता है। अन्य जीवोंको दिया हुआ आनंद कभी व्यर्थ नहीं होता है। केप्लि।

अनुकंपा, से हम दूसरोंके कार्यमें लाभ लेसक्ते हैं, और उनकी जैसी सहानुभूति प्रदर्शनकर उनके दुःखोंमें भी समभागी होसक्ते हैं।। वर्क।

जब ही अवसर मिले हंसो। यह एक सस्ती उत्तम दवा है हास्य एक ऐसा तत्व है जो अभी तक हमारी समझमें नहीं आया। यह जीवनका उज्वल पहलू है। बायरन।

जब तु किसी सत्कार्यको करना प्रारम्भ करे तब पहिले शुद्ध हृदयसे परमात्माकी प्रार्थना कर कि जिससे सर्व कार्य निर्विघ्न सफल हो। सेंट बेनेडिक्ट।

जीवनके अंतमें यह नहीं पूछा जायगा कि 'तुमने कितना सुख भोगा'? परन्तु तुमने कितनी सेवा की? यह अवश्य पूछा जायगा। तुमको उसमें सफलता मिली यह नहीं किंतु उसमें तुमने कितना स्वार्थत्याग किया। तुम कितने सुखी थे? यह नहीं किंतु तुमने सहायता प्रदानकर कितनोंको सुखी किया? यह पूछा जायगा। तुमने अपनी वासना पूर्ण की या नहीं? यह प्रश्न तुमसे कोई नहीं पूछेगा। किंतु तुमने अपने हार्दिक प्रेमका किस प्रकार उपयोग किया, यह पूछा जायगा। जीवनका मूल्य प्रेमसे और प्रेमका मूल्य सत्कार्योंके करनेसे मालूम होगा।

एच० ड्रेक।

---

१ 'आदौ मध्येऽवसाने च मंगलं भाषितं बुधैः, कार्यके प्रारंभमें परमात्माका स्मरणरूप मंगलाचरण करना चाहिये जिससे अपने भाव विशुद्ध हों और विशुद्ध भावसे कार्य पूर्ण हो।

अपराध करनेवालेसे नम्रतापूर्वक बोलो; प्यारे, पवित्र और मीठे वचनोंसे तुम उसको सन्मार्ग पर लौटा सकोगे। यह न भूलो कि तुमने भी पाप किये हैं और अब भी करते होंगे, इस लिये जिस प्रकार तुम अपनी आत्माके साथ जैसा व्यवहार करते हो वैसा ही तुम उस अपने पापी बंधुके साथ करो। वेटस।

समय स्वल्प और परिवर्तनशील है, इसलिये किसी भी कार्यमें सहायताकी इच्छा करनेवाले पुरुषको जितना हो सके उतनी उदारतासे सहायता करो क्योंकि थोड़े ही समय बाद तुमको दूसरेकी सहायता करनी हो। एम० वटरवर्थ।

धनवान गरीबको पोषण करता है, या गरीब धनवानकी सहायता करता है? ऐसा प्रश्न वे ही मनुष्य करते हैं जिनको यह खबर नहीं कि अपनी अपनी स्थितिके योग्य सब अपना कर्तव्य पालन कर सके हैं, ये सब परस्पर एक दूसरेके सहायक और उपकारक हैं।

सर्व मनुष्य कर्मकी नियम व्यवस्थापर चलते हैं, यदि तुम कर्मोंको निर्धन करना चाहते हो तो आत्मजागृति उत्पन्न करो, सेवावृत्तिसे जीवमात्रकी सेवा करो और समस्त जीवोंको सुखी बनाओ, ऐसा करनेसे तुम कुछ आत्मकल्याण कर रहे हो ऐसा समझा जायगा। सर टोमस वर्नार्ड।

सत्यसे सत्य और उच्चसे उच्च अर्थकी ओर देखनेसे दयाका कोई भी कार्य नाश नहीं होता। क्योंकि दया करनेवाले दयालु पुरुषकी विशुद्धभावनासे आत्मीक शाश्वत सुखकी प्राप्ति हो सक्ती है।

इस जगतमें दया और वीरत्वके ऐसे अनेक कार्य हैं जिनको कोई भी नहीं जानता, अथवा करनेवालेको कुछ भी बदला नहीं मिलता है इसका क्या कारण है? इस प्रश्नका उत्तर यही होगा कि सर्वोत्कृष्ट दया और वीरताके कार्य गुप्तरूपसे आनंदपूर्वक विना किसी आडंबरके किये जाते हैं।

जब कितने मनुष्य अपनी उदारताकी प्रसिद्धिके लिये भाट जैसे मनुष्योंको चारों तरफ दौडाते हैं, लोभी संपादकोंके पेट भर डुमडुमी पिटाते हैं और इस प्रकार वे अपनी कीर्तिका विस्तार करनेका प्रयास करते हैं तब अन्य कितने ही परोपकारी इससे विपरीत चुपचाप अपने सत्कार्य करते ही रहते हैं। अनेकवार उनकी तरफ कोई आंख उठाकर भी नहीं देखता।

कितने ही वीरपुरुषोंने 'विक्टोरिया क्रास' प्राप्त करने योग्य पराक्रमके कार्य किये होंगे, किन्तु उनको वह नहीं मिला। कितने ही सेवकोंने सर्व साधारणकी इतनी अधिक सेवा की होगी कि जिससे उनकी मूर्ति बाजारमें स्थापित की जाय, परंतु ऐसा न होसका इससे यह नहीं समझिये कि सदा ऐसा ही होता है। संसारमें अनेकवार स्त्री पुरुष अपनी सेवाका कल्पनातीत उपहार (फल) प्राप्त करते हैं। हां वह उपहार कभी कभी इतने विलंबसे आता है कि उस उपहारके यशोगानके शब्द वे अपनी जीवित अवस्थामें नहीं सुनसक्के तथापि कीर्तिमाला उनके मृत शरीरपर या उनकी समाधि मंदिरपर पहनाई जाती है। मेरी यह मान्यता है कि वह विलंब निर्दयता पूर्ण और अन्याय युक्त है। तो भी इससे क्या हुआ? किसी एक दिन इस कठोरताके बदले कोम-

लता आयेगी और किसी दिन वह अन्याय नष्ट होगा। हे परमात्मा ! यदि यह रहस्य मेरी समझमें न आया हो तो उसको समझनेके लिये सहायता कर।

ऐसे ही निरंतर विचार करना चाहिये कि 'आज मैंने दूसरोंके लिये क्या सहन किया?' ऐसा नहीं कि मुझे आज क्या मिला। एफ़० डी० ब्लाक।

हे सुंदरियो ! सत्कार्य करने, दुःख सहन करने, शीलव्रत पालन करने, रोगीको सांत्वना देने, सद्वर्तन सीखने, सच्चारित्र धारण करने और अखंड आशायुक्त धैर्यसे अपने उत्कृष्ट आसनकी तरफ शीघ्र गमन करो। तुमारा प्रेम अपने स्वभावानु-सार सुखका दिव्यनाद सुनायेगा। जब तू अपने गानकी तान छोडेगी, उस समय छोटे२ बालकके चुंबनसे तुझे अतिशय आनंद होगा। गरीब मनुष्यकी की हुई सेवा तुझे अधिक दिव्य बनायेगी। रोगी मनुष्यकी तू सुश्रुषा करेगी तो तेरी आत्मामें अपार शक्ति प्राप्त होगी। तू जो जो सेवा करेगी उससे यह समझ कि तू अपनी ही सेवा कर रही है। ई० बी० ब्राउनिंग

क्या तुम किसी महान कार्य करनेकी राह देख रहे हो? क्या किसी भारी अनिष्टके नाश करनेका अवसर देख रहे हो? परंतु इस प्रकार समय नष्ट न करो, और छोटे २ गुप्त सेवाके कार्य करना प्रारंभ कर दो, ऐसा करनेसे तुम बड़े बड़े कार्य करने-के अनेक अवसर स्वतः प्राप्त कर सकोगे। यह निश्चय रखना कि तुम उनको अति उत्तमतासे कर सकोगे।

जो मनुष्य स्वदेशके लिये स्वार्पण कर सक्ते हैं-अपनी जान

दे सक्ते हैं, ऐसे वीर पुरुषोंका मैं सन्मानके साथ आव्हानन करूं तो सच समझिये कि एक वडी भारी सेना देशके कल्याणार्थ तुममेंसे ही तैयार होजाय। तथापि नागरिक कर्तव्योंका पालन करनेके लिये ऐसे करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है। छोटे छोटे कार्य करो, जो सबसे पहिले हाथ आवे उसको पहिले करो, ऐसा करनेसे तत्काल ही दूसरा कार्य तुमारे पास झट आधमकेगा।

जान ब्राईट।

जितना हो सके उतना अधिक मनुष्य और इतर प्राणियोंसे प्रेम करो। 'प्रेम' एक ही ऐसा पदार्थ है कि जिस अकेले हीके बलसे तुम नैतिक संसारमें सम्पत्तिशाली बन सकोगे। विशेष-निर्दोष, उत्तम और पवित्र वस्तुओंसे प्रेम करो। पुष्पपर प्रेम करो, छोटे छोटे बचोंपर प्रेम करो, पवित्र और सद्गुणी आत्मा पर प्रेम करो। वृद्ध और निराश्रित दीनपर प्रेम करो। पातिव्रत (अपने विवाहित स्वामीको छोड़कर बाकी पुरुषको पिता भाई समान तन मनसे दृढ प्रतिज्ञा) सहित सुशील

१ 'मनसि वचसि काये स्वामिनमेव सदा उपैमि' जिन स्त्रियोंकी ऐसी पवित्र भावना है और जो स्त्री अपने पतिको ही सर्वस्व मानकर स्वात्मा समर्पण करती और कठिनसे कठिन परीक्षाके समय इस भावनासे च्युत नहीं होती वे पवित्र देवी हैं, ऐसी देवीके साथ धर्मप्रेम करनेमें उत्तम गुणोंका वास होता हैं किन्तु जो मनुष्य इस उत्तम भावनाको भूलकर कृत्रिम प्रेम स्त्रियोंसे प्रदर्शन करते हैं वे महा पापी हैं और जो मनुष्य ऐसी नीतिका अवलंबन करते हैं जिससे विधवा अपने पातिव्रत धर्मसे च्युत होकर भ्रष्ट होजाय वे भी पातिव्रत महात्म्यको भूले हुए हैं और पापको सत्कार्य व अनीतिको नीति मानते हैं।

सन्नारियोंपर धर्मानुराग करो, ऐसे धर्मप्रेमसे तुम्हारी मर्यादा उल्लंघन नहीं होगी। उनके प्रेमसे तुमको सदा लाभ ही होगा। हानि होनेकी कोई संभावना नहीं है। जे० एस० ब्लेकी।

द्रव्यके कारण धनवान मनुष्योंका आदर नहीं करना, किन्तु उनके सद्गुणोंका सदैव सत्कार करना। सूर्यको ऊंचाईके लिये नहीं किन्तु उससे होन वाले अनंत लाभके लिये सर्वोत्तम कहते हैं।

अपनेमेंसे अनेक कीर्तिके लिये ही सत्कार्य करते हैं किन्तु सरल और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करनेवाले महात्मा ही दूसरोंके लिये स्वार्थ त्याग करके भी उसको सर्वतः गोप्य रखना चाहते हैं। जे० सी० वेइली।

केवल विचारोंकी तरंगमें स्वप्न देखनेवाले मनुष्य कहते हैं कि मैं गरीबोंकी चिन्ता दूरकर सकूं। 'अनाथ और निराश मनुष्योंके अज्ञानका परदा हठा सकू। उनके जीवनको क्रूरता और अन्यायसे मुक्त करसकूं और भी सब परोपकारके कार्य करसकूं, तब ही मुझे प्रसन्नता होगी परंतु क्या करूं?। शोक है कि इन इच्छाओंके पूर्ण करनेकी मुझमें शक्ति नहीं है। और न इतना मेरे पास धन ही है?।' इस प्रकारके मधुर स्वप्न देखते देखते ही उनका जीवन व्यतीत होजाता है और उनसे कुछ भी नहीं होसक्ता। हां जो कार्य वे कर सके थे वे भी न करसके और उनका ज्ञानतक उनको नहीं हुआ। यदि चिन्तासे ग्रसित मनुष्यको थोडीसी सहायता देकर चिन्तासे मुक्त किया होता, यदि अनाथ बालककी क्षुधा शांत की होती, दुःख और असक्त मनुष्योंको सांत्वना देकर कुछ धैर्य दिया होता और प्यारे और मीठे वचनोंसे कुछ आशा दी

होती तो ऐसी बातोंका विचार ही उसे नहीं होता। सच पूछो तो ऐसे मनुष्य भी अज्ञानी और दुःखी मनुष्योंके समान दयाके पात्र हैं, क्योंकि अनेक प्रकारके स्वप्न देखना हवाई किला बनाता है, उनकी मानसीक कल्पना मात्र है। मुंहसे बकनेके बदले सरलतासे होनेवाले छोटे मोटे और सीधेसादे कार्य करनेसे उनको कितना आनंद और संतोष मिलता ? । इतना नहीं किन्तु उनको अपने स्वप्न सत्य सिद्ध करनेकी शक्ति और योग्य साधन धीरे धीरे अनायास मिल जाते। मेरी ब्रेडली।

वही दया अधिक फल देनेवाली है जो सत्कार्यों करनेमें आनेवाली विघ्न-बाधाओंको और गरीब मनुष्योंकी विषयवासनाके कुत्सित प्रलोभनोंको दूरकर उनको स्वावलंबी बनानेमें पूर्ण उत्साह देती है।

मनुष्योंको अपनी शक्तिका उपयोग अपने तथा दूसरोंके सुख और सद्गुणोंकी वृद्धिमें करना ही प्रकृति देवीके प्रदत्त हक हैं और यही उसके जीवनका मुख्य हेतु है। इसी लिये प्रकृतिने उसको शक्तियां प्रदान की हैं, यह कार्य करना उनके लिये बाध्य है। तथा उसका दुरुपयोग अथवा नाश करनेके उत्तरदाता वे स्वयं हैं। डब्ल्यू० ई० चेनिंग।

जिन साधनोंसे मनुष्य जीवन स्थिर रह सक्ता है, उन साधनोंका त्याग, अथवा उनके नाश होनेके बाद भी स्वार्पणके निस्वार्थ कार्योंके करनेसे मनुष्यको स्वर्गीय सुख प्राप्त होता है।

भूतलके किसी भागमें सचेतन प्राणियोंको अधिक फलरूप, अधिक उत्तम और अध्यात्मिक बनाना, तथा चतुर, ज्ञानवान,

सुखी और परमात्माका भक्त बनाना दिव्य आत्माका कार्य है।

टी० कार्लाइल।

मुझे यह सुननेकी लालसा है और मेरा मन इसलिये उत्सुक हो रहा है कि मेरी विनीत प्रार्थनासे कोई भी मनुष्य अपने शत्रुसे मिलापकर उसके दुःखमें अपने आंसु गिराये। शत्रु चाहे पत्थर अथवा शैतान जैसा भी हो तो भी इस प्रकारकी प्रेममयी प्यारी दयासे अवश्य ही वशीभूत होगा।

तुम प्रकृतिको ऋणी बनाओ, और फिर उसके पास अपनी वस्तु मांगो तो खूब व्याजके साथ तुम उसे प्राप्त कर सकोगे[१]। केवल अपने हाथ ऊंचे करनेसे कोई नहीं सुनता—अपने हाथ केवल स्वर्गकी ओर न फैलाओ, किंतु गरीबोंकी तरफ भी फैलाओ। यदि तुम गरीबोंकी सहायता करोगे तो स्वर्गको अवश्य पा सकोगे। यदि तुम खाली ताली बजाओगे तो कुछ लाभ नहीं। सेवा भी मलमनसाई और निरभिमानके साथ होनी चाहिये। आशापूर्ण प्यारे विनीत वचनोंको कहना चाहिये। भिक्षा द्रव्यसे नहीं किन्तु वचनोंसे भी दी जाती है। यह कहावत सच है कि 'मेंटसे प्यारे' मीठे वचन हैं, भिक्षा सहज मिल सकती है परन्तु 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'।

१ जो कुछ हम किसीके साथ भलाई या बुराई करते हैं उसका फल हमको स्वयं कर्म तद्रूप देते हैं। यदि हम किसीके साथ अपने भलेभावोंसे भलाई करें तो उसका फल स्वयमेव वडके बीज समान अगुणित प्राप्त होता है।

कार्यकर दिखलाईहुई सेवा द्रव्यकी अपेक्षा अधिक उत्तम फलप्रद है।

'साधारण स्थितिके मनुष्योंपर दया करो; उनकी स्थितिको तुम स्वय बदल दो। जिस प्रकार पिता पुत्रपर प्रेम रखता है उसी प्रकार तुम प्रत्येक बंधुसे अपनी ऐसी भावना रखो। हृदयसे हृदय मिलाओ यही उच्चकोटिका तुमारा वर्तन है।

जिसको धनवान बननेकी इच्छा हो उसे गरीब बनना चाहिये जिससे वह धनवान बन सके। उसे व्यय करना चाहिये जिससे वह संग्रह कर सके। उसको उत्तम खेतमें बोना चाहिये (सुपात्रको दान करना चाहिये) जिससे वह काट सके। यह सब बातें लोकविरुद्ध मालूम पडती हैं परन्तु बोने वालेकी तरफ देखो। विना उसके बोये और जो कुछ उसके हाथमें है उसे विना गिराये वह क्या काट सकेगा? इसलिये आओ हम भी (अपने भावोंको) जोतकर बोयें जिससे जन्म जन्मान्तरमें बहुतसा प्राप्त कर सकें।

प्रेम महान गुरु देव हैं, वह मनुष्योंको दोषोंसे रक्षा करता है उनका चारित्र सुधारता है, स्वार्थ त्यागकी शिक्षा करता है और वह चाहे तो आत्माको परमात्मा बना सका है।

'सत्कार्य न करना' एक प्रकारका पाप है। यदि तुम उस नौकरकी ओर देखो, जो न चोरी करता है, न अपने स्वामीके साथ कुछ अनिष्ट ही करता है और न मद्यपान आदि सप्त व्यसनोंका सेवन करता है किंतु वह निरंतर आलसमें पड़ा रहकर अपने कर्तव्योंको बिलकुल भूल जाता है तो क्या तुम उसको

अपने काम करनेके लिये नहीं कहोगे ? क्या सचमुच तुम उसको वैसा करने दोगे ? ' कर्तव्यकी ओर दुर्लक्ष ' भी एक प्रकारका अन्याय है ।

ठीक इसी प्रकार कर्तव्योंके बहानेसे अथवा कर्तव्य करते हुए 'मद्यपान सेवन करना' 'परस्त्रीलंपट होना' 'विश्वासघात करना' ' और मायाचारी करना आदि असदाचरण ' सेवन करे अथवा ऐसी अपनी वृत्ति रखें तो ऊपरसे सुन्दर होनेपर भी समझना चाहिये कि हम कर्तव्योंका यथार्थ और सत्य अर्थ नहीं जानते हैं और दूसरा भारी अन्याय कररहे हैं । एस० क्राइसो स्टाम ।

जो मनुष्य अपने जीवनमें तो कुछ दान नहीं करते और उत्तराधिकार (वारिस रखते समय) देते समय मृत्युके पश्चात् दान करना लिख जाते हैं वे भी एक प्रकारके स्वार्थी ही हैं ।

जो मनुष्य अपनी जीवित अवस्थामें दूसरोंकी भलाईके लिये तो अपने धनका सदुपयोग नहीं करते हैं और मर जानेपर वह धन उनके काम आता नहीं है, उनको समझना चाहिये कि आत्म-घातक ममतारूपी दुधारी तलवार उनको इस संसारके सर्वोत्कृष्ट सुख और परलोक (जन्मान्तर) के सर्वोत्तम आनंदसे वंचित करेगी ।

जिस सुखके लिये स्वर्गके देवता भी ईर्षा करें वह सुख यदि कोई इस पृथ्वीपर है तो वह परदुःखभंजनपना ही है । जो मनुष्य ऐसी शक्ति रखने पर भी उसका उपयोग नहीं करते हैं, उनको देखकर पिशाचको भी दया आती है ।

सुखी बनानेके लिये तीन आवश्यक वस्तु हैं। करने योग्य कार्य, प्रेम करने योग्य वस्तु और आशा रखने योग्य स्थान।

कार्लटन।

सच्ची उदारता अच्छे बुरेका विचार कर देनेमें ही है। अपात्रपर की हुई दया शाप और पापके समान है।

मनुष्य जब अपने जातिभाइयोंकी सेवा करता है तभी वह देवतुल्य होता है।

मनुष्य और पशु पक्षियोंको जो अच्छी तरह चाहता है वही भलीप्रकार सेवा कर सक्ता है।

जो मनुष्य मुझपर तनिक भी सहानुभूति दिखाये विना मेरा भला करना चाहता है वह मेरा आधा ही कार्य करता है। वह मुझे सहायता देकर भी निराश करता है, वह मेरा उपकार करता है किन्तु मेरा मानवबंधु नहीं है।

सी० जे० वालेरीज।

प्रत्येक मनुष्य स्वयं चाहता हो या नहीं? योजन पूर्वक व्यवस्थित चलता हो या नहीं? तो भी वह सद् और असद् वस्तुका सदा उपदेशक है। वह अपने व्यवहारसे समाजपर बुरा असर डालता हो या उत्तम प्रभाव फैलाता हो। यह तो निश्चित है कि वह निर्लेप नहीं रह सक्ता इसलिये तुम भी अपने जीवनको किसी उद्देशमें लगाओ, सत्कार्य करो और अपने पश्चात् सदाचारको ऐसा स्मारक बना जाओ जो कालकी चोटसे कभी नाश न हो। अपने संसर्गमें

आनेवाले हजारों या लाखों मनुष्योंके हृदयपर सज्जनता, दया और प्रेमके द्वारा इस प्रकार लिख जाओ जिसे संसार कभी विस्मरण न करसके। इतना ही नहीं किन्तु तुमारा नाम और तुमारे कार्य तुमारे पश्चात् रहनेवाले मनुष्योंके हृदयपर संध्याकालीन ताराओंके समान स्पष्ट दिखाई पड़ें। चामर्स।

अपनी जीवन यात्रामें जब अनेक यात्रियोंके साथ हम अल्प समयके लिये ही सहयोग करें—संसर्ग करें तब पृथ्वी और बीजके समान (जिस प्रकार पृथ्वी पर बीजका सहवास होनेपर फलद्रुप होता है) एक दूसरेकी आवश्यकताओंको पूर्णकर सुखरूप फलकी प्राप्ति करें, और करावें। सैंट कूलिज।

शक्ति होनेके कारण पूर्ण उदारतासे सहायता करने और दान देनेके कारण अभिमान न करो। और जब तुमारे पास कुछ भी न हो तब केवल ठंडे पानीका एक प्याला दे सके हो तो अपनी आत्माको तुच्छ न समझो। क्लोडीएन्स।

प्रतिदिन कुछ न कुछ सत्कार्य करना ही चाहिये। उदाहरणके लिये 'हास्य'—इसमें अपनेको कुछ परिश्रम न होगा। जीवनकी ऐसी न कुछ विचित्र भेंटसे अपना भी आयुष्य मधुर बनेगा। इस संसारमें ऐसे भी अनेक दुःखी मनुष्य होंगे जिनको हम सुखी कह सकते हैं और जो ऐसे सुख एवं आनंदसे अपनेको वर्षभर आनंदी बना सकते हैं।

प्रतिदिन हमको कुछ करना ही चाहिये। 'आकाशकुसुम शब्द' की शक्तिको हम नहीं जान सके, किन्तु वह मधुर पुष्पके विकाशकी सदृश फलप्रद है। जहां अंधकार और उदा-

सीनता व्याप्त होरही हो, वहां पर एकाध शब्द मात्रसे ही कितना अधिक सुख मिल सकेगा? संभव है कि किसी मनुष्यके प्रति कहे हुये प्रेमयुक्त शब्दसे उसका सारा वर्ष सुखमय बने।

प्रतिदिन कोई भी कार्य करो जैसे एकाध निःस्वार्थी, उत्तम और सत्य विचार ही करो। यह भी किसीकी जीवन-यात्रामें दूसरोंकी आवश्यकता पूर्ण करेगा, उसके मस्तक परसे बोझ हलका करेगा और उसको सरल मार्गपर लेजायगा। इसी प्रकार प्रतिदिन सेवाके विचारसे सारा वर्ष सुखसे बीतेगा। जी० कूपर।

जिस प्रकार वृक्ष अपने फल और आकृतिसे पहिचाना जाता है, सोना कसोटीपर परखा जाता है और घटेका मूल्य उसकी आवाजसे जाना जाता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्यकी योग्यता और कुल उसके सदाचारसे माल्म होता है, उसकी प्रतिष्ठा नम्रतासे जानी जाती है। और उसकी वृत्ति सत्कार्योंसे जानी जाती है। हे।

प्रेमभरे शब्द शीतल जल समान हैं कि जो किसी भव्य आत्माके विकाशको पार्थिव वस्तुओंके भयंकर दुःकालके कारण 'मरण' से रोकते हैं उसको निराशारूपी विषमयगृहसे मुक्त करते हैं और उसको सुगंधित और पवित्र बनाते हैं। ई० बी० कॅस्टरलाइन।

सत्य प्रेम नम्रतापूर्ण होता है वह अतिशय विनीतभावसे सेवा करनेको तत्पर रहता है, वह अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं करता, वह अपनी आत्मश्लाघा (प्रशंसा) स्वयं नहीं करता किंतु वह अपनेको सबसे छोटा प्रकट करनेवाले शब्द बोलता है।

ए० आर० कोल्स

अकेली दया ही मनुष्योंको देवतुल्य बनाती है । सेवाका स्वीकार कर लेना (दूसरोंसे सेवा कराना) भी उच्च है, परन्तु सेवा अर्पित करना अधिक उच्चतर है । क्लॉक ।

जो स्वयं उत्तम जीवन व्यतीत करता है वही श्रेष्ठ उपदेशक है । सरवेंटिस ।

दुःखीके दुःखमें सहायता न देनेकी अपेक्षा अपनेको कृतघ्न कहलाना अच्छा है । डु० कोकर ।

तुम जितना बचा सको वह दूसरोंको प्रदान करो और यह स्मरण रक्खो कि जो गरीबोंकी सहायता करता है वही अपनी आत्माको उन्नत बनाता है । अलीज़ा कूक ।

अपने बन्धुकी सेवा करनेका उत्तमोत्तम और सच्चेसे सच्चा मार्ग उनके लिये कुछ करनेकी अपेक्षा जितना अपनेसे हो सके उतना अपने जीवनको सत्य, विशुद्ध और सदाचारयुक्त सर्वोत्कृष्ट बनानेमें है । मिस कॉवे ।

एक प्राचीन नीति है कि मनुष्यको प्रथम अपने घरसे ही उदारता प्रारम्भ करनी चाहिये, परन्तु इस कथनका यह तात्पर्य नहीं है कि हम उदारतामें आगे बढ़े ही नहीं । प्रत्येक मनुष्यको नागरिक (भोगविलासी, ऐश आरामी नहिं किंतु अत्युदार, विनय-युक्त और सदाचारी ही सभ्य नागरिक) बनना चाहिये । वह जिस ग्राममें अथवा जिस स्थलपर रहता हो वहां पर भले ही विशेष प्रेम प्रदर्शित करे परन्तु उसको समस्त जगतकी सुसक्रांतिका उदारताके साथ विचार करना चाहिये । कंबरलॅण्ड ।

एक मधुर शब्द, एक ही प्रेमभरी दृष्टि, एक प्रसन्नतासे दी हुई पाई और एक नम्रविनयसे किया हुआ सत्कार्य एवं सच्ची दयाका अल्प ही वातावरण अगणित आत्माओंके असह्य दुःख-भारोंको हलका करते हैं। इस प्रकारके महानसुंदर दैवी कार्य क्षोभित समुद्रकी लाटोंके समान जड़से मनुष्योंके दुःखोंको उखाड़ देते हैं और जगतमें शाश्वत सुख प्रदान करते हैं।

पी० क्लेटन।

कोपर एक सन्नारीके सम्बन्धमें कैसा अच्छा लिखता है। वह लिखता है कि—उसके हाथ पवित्र हैं, उसका स्वभाव मधुर है, मन सरल है उसकी आभ्यन्तरवृत्ति पवित्र और सच्चरित्र है और उसकी चतुराई बालकके समान प्रसन्न है। वह किसीको दुःख देना नहीं चाहती। तिरस्कार करनेवाले उसपर आवाजें करते हैं—उसकी निंदा करते हैं तो भी वह उनकी भलाईके लिये प्रार्थना करती है। उसके निष्कपट हृदयमें संदेहका स्थान नहीं है, उसके साथ खराबसे खराब बात भी की गई हो तो वह उस बातका उत्तम अर्थ करती है। उसका चाहे जितना अपमान करो अथवा उसको चिढाओ तो भी वह एकाएक क्रोधित नहीं होती है। कदाचित क्रोध भी करे तो तत्काल ही शांत हो जाती है और अपमान करनेवालेके ऊपर दयादृष्टिसे मृदु हँसती है। वह अपने हकके लिये झगडनेके बदले वह उसे छोड देती है और हानि होनेपर भी क्षमा करनेमें ही आनंद मानती है। कोपर।

इतना तो स्मरण रखो कि यदि तुम दूसरोंके लिये भले नहीं हो तो तुमारी भलमनसाहतका कुछ उपयोग नहीं। सुजन-

ताका यही उपयोग है कि तुम उससे दूसरोंकी रक्षा करो। वह एक बडे डुपट्टेके सामान होनी चाहिये जिसको तुम अपने पडोसीको उढ़ा सको। देखो, वह कुछ न होनेसे रात्रिमें शीतसे ठिठुर रहा है—जाडेसे अति आकुल व्याकुल होरहा है। तुम अपनी सुजनताका यदि ऐसा उपयोग न कर सके तो उससे क्या लाभ? मिसिस क्लीफर्ड।

प्रेमसे दिये हुए दानकी महिमा महती और विरल है। उसके लिये मीठे और प्यारे शब्दोंकी आवश्यकता है, अन्यथा वे लाभ होनेके बदले कुछ खो बैठेंगे। मधुर शब्दोंके साथ दाता इस प्रकार देता है कि जिससे लेनेवालेको अपने ऊपर उपकार हुआ नहीं मालूम होता। '**दानकी अपेक्षा दान देनेकी रीति अधिक महत्वकी** है, कोई दाता तो देने योग्य वस्तुओंको अमुक शर्तसे दानमें रखकर जानबूझकर हार जाते हैं और इस प्रकार अपने दातृत्वगुणका तमाशा दिखाते हैं। और कोई२ एकाध उत्तम रत्न ही जो दान स्वरूप स्वीकार न हो सके दूसरोंके घरपर भूल आते हैं। कारनीलि।

सत्कार्य करनेके अवसरोंके लिये हम बड़े२ प्रयत्न करते हैं, तथापि छोटे२ अवसर पर आनेवाले अनेक प्रसंगोंको तो भूल ही जाते हैं। जिनके लाभसे अनेक समय सर्वोत्कृष्ट सेवाका जीवन व्यतीत कर सक्ते हैं। फ्रॅब।

सच्ची महत्ता तो अंतःकरणसे भले होनेमें है, बाहरसे भला दिखानेमें नहीं। **प्रतिदिन नियमित कुछ छोटे२ से भी सत्कार्य करनेमें बड़ी महत्ता** है, बड़े २ कार्य धीरे २

करनेके स्वप्न देखनेमें नहीं। मनुष्य मूर्खतासे अथवा जवानीके जोशके कारण जो मनमें आवे सो कहे परन्तु दयाके समान कुछ उच्च नहीं और सत्यके समान कोई महान नहीं। एलाइस कॅरी।

हमको अतिशय लोभ और दिखावट त्यागकर उदारतासे अपना द्रव्य देना चाहिये। सुंदरताके लिये अपने प्रेमको स्वार्थ और व्यर्थव्ययके रूपसे बचाना चाहिये, नहीं तो लोग हमारे व्यवहारसे ऐसा कहेंगे कि "उसका घोड़ा, उसका घर अथवा उसका नौकर, उसकी थाली पंद्रह सुवर्ण मुद्रा की है किन्तु उसका मूल्य तो तीन कौडीके बराबर भी नहीं है'। सेंट क्लेमंट

स्वार्थत्याग और भक्तिके महान कार्य करना हों तो हमको दूसरोंके छिद्र नहीं देखना चाहिये-छिद्रान्वेषी नहीं बनना चाहिये, और न दूसरोंकी निंदा करनेकी आदत डालनी चाहिये। अपने विचारोंको दूसरोंसे स्वीकार करानेके बदले उनके स्वभाव और विचारोंपर सहानुभूति रखना चाहिये। ऐसा करनेसे हम अधिक सुखी बना सकेंगे। जे० एफ० क्लार्क।

---

१ विचारोंमें भूल सबकी रहती है। सर्वज्ञ सिवाय सबके वचन बाधित हैं। तो फिर अपने अपने विचारोंको लेकर और मनमानी कल्पित युक्तियोंसे झगड़ा करना समाजको क्षोभित करना है। समाजमें अनंत कार्य बहुत ही आवश्यक और उपयोगी पडे हैं उनकी समाजको तत्काल ही चाहना है-अतीव आवश्यकता है अतः उनको संपादित कर समाजसेवा करना चाहिये न कि लड़ाई झगड़ा।

लेखकों और सम्पादकोंको यह स्मरण रखना चाहिये कि वे समाजकी भलाईमें ही समयका उपयोग करें। दूसरोंकी निंदा करना, विलासी उपन्यास लिखना, मतमतान्तरोंके झगड़े कर बैठना, अपनेको प्रिय खराब विचारोंको फैलाना, योग्य नहीं।

आनंदरूपी अमृत बहुत सुलभ है। यदि तुम प्रत्येक गरीब मनुष्यको उत्साहके वस्त्र दोगे तो वे उनको रेशमी या गरम वस्त्रकी अपेक्षा अधिक उत्तम समझेंगे।

श्रेष्ठ सिद्धान्त और उत्तम उद्देश्योंके साथ सेवा करनेवाले मनुष्योंके लिये जगत अति विशाल कार्यक्षेत्र है। यही आत्म-राज्यका चिह्न है।

तुम अपने सुखको सीलो। और जो कुछ किया हो उसको भूल जाओ। दया करनेके पश्चात् प्रेमसे सर्वोत्तम कार्य करनेके बाद और अपनी सद्भावना प्रदर्शन करनेके अनंतर परदेमें छिप जाओ। अपने किये हुए कार्यके बदलेमें कुछ न बोलो। आत्म-श्लाघाकी इच्छा तक न प्रकट करो। प्रेम स्वयं गुप्त रहता है।

जहांपर प्रेम है वहांपर जीवात्मा है। और जो प्रेममें वास करता है वह जीवात्मा है। इसलिये प्रेम करो, कुछ भेदभाव रखे विना प्रेम करो, किसीकी भी परवाह करे विना प्रेम करो। अपने सामने आनेवाले विघ्नोंकी रुकावटकी तरफ लक्ष करे विना प्रेम करो। विश्वके अनंत मैदानमें रुके विना सर्वत्र प्रेम करो, प्रेम करो और प्रेम करो।

विशुद्ध प्रेम परमात्मा है। यदि तुम परमात्मा बनना चाहते हो तो किसी जीव मात्रकी विराधना (हिंसा) करे विना और समस्त जीवोंको अपने आत्म समान समझकर बंधुभावसे विशुद्ध प्रेम करना सीखो और प्रेम करो।

यदि प्रेमका पृथक्करण किया जाय तो उसमें नव पदार्थ मालूम पड़ेंगे। धैर्य, स्नेह, उदारता, नम्रता, विनय, निस्वार्थता,

सद्वृत्ति, प्रमाणिकता और निष्कपटता । इन नव पदार्थोंको ग्रहण करना मनुष्यके लिये वाध्य है और यही आज्ञा परमात्मा देता है।

यदि सत्य गवेषणाकी जाय तो आधा संसार सुखकी शोधमें कुमार्गगामी होरहा है । ऐसा लोग मानते हैं कि अपने पास धनका संग्रह करना और इतर मनुष्योंसे सेवा कराना ही सुखका कारण है, परन्तु सच पूछो तो सुख दान करने (त्याग— बाह्य धनादि और आभ्यंतर प्रेमादि) से और दूसरोंकी सेवा करनेसे होता है ।

एक विद्वानका कहना है कि यदि मनुष्य **'परमात्मा'**को प्राप्त करनेके लिये कोई भी उत्तमसे उत्तम कार्य कर सक्ता है तो वह जीवमात्रके साथ प्रेम करना है। मुझे यह आश्चर्य होता है कि हम जितने दयावान हैं उससे अधिक क्यों नहीं हो सक्ते ? जगतको इसकी अधिक आवश्यकता है ? दयाका कार्य कितनी सरलतासे होता है वह कितनी सरलतासे अपना प्रभाव प्रसार कर सक्ता है, वह कभी किसी प्रकारसे विस्मरण नहीं होता. उसमेंसे कैसे २ महान परिणाम निकलते हैं इसका कारण यही है कि ससारमें प्रेमके समान दूसरा कोई प्रामाणिक एवं उच्चक टिका साहूकार नहीं है । हेनरी ड्रूमान्ड ।

कितने ही मनुष्य यह विचार करते हैं कि सत्कार्य करनेमें अधिक द्रव्यकी आवश्यकता होती है, परन्तु अच्छी तरह विचार- नेसे बहुत धनकी नहीं किन्तु अनुकंपा सहित सहृदयकी परम आवश्यकता है ।

सच्ची 'प्रार्थना' केवल शब्दोंसे ही परमात्माका स्मरण नहीं कराती किन्तु हमारे जीवनके प्रत्येक कार्यमें उसकी भावना, उसके मार्गका और उसके विचारोंका स्मरण—अनुसरण कराती है। सत्कार्य करनेकी शक्ति और इच्छा दोनों वस्तु सत्कार्य करते २ ही बढती हैं। जार्ज डॉसन।

मूक प्राणियोंके साथ स्नेह, बालकोंके साथ प्रेम, निराधार और रोगीके प्रति दया, वृद्ध और पीडितके साथ अनुकंपा ये सब गुण स्त्रियोंमें स्वाभाविक होते हैं।

अनुकंपा एक ऐसी वृत्ति है कि जिससे हम दुसरोंके कार्योंमें सहकारी बनते हैं, और उनके सुख दुःखका अनुभव करते हैं।
आर० पी० डाउन्स।

जहांतक होसके जीवनका उत्तमसे उत्तम उपयोग करना सीखो। एक भी सुखी दिन केवल स्वार्थमें पड़े रहकर वृथा न खोओ। अवसर चूक जानेपर पुनः वह नहीं प्राप्त होता। जमे पानी (बरफ) से पवनचक्की क्या करेगी? सेंट डाउडनी।

जिस समय जीवन अधिक कठिनाइयोंमें तथा विपत्तिमें घिरा हुआ होता है उस समय एक ही नम्र आश्वासन, थोडासा मधुर हास्य, और हार्दिक उत्साह अपूर्व कार्य करता है। जिस समय क्रोध अपना विकट दृश्य दिखलाता है उस समय एक भी मिष्ट वचनसे बडी सहायता मिलती है। ई० हीली।

अपनी स्थितिका, अपने जातिभाइयोंका तथा परमात्माके प्रति अपने कर्तव्योंका ठीक ध्यान रखकर अपने समस्त जीवन और अपने प्रत्येक कार्यकी योजना करनेका नाम 'धर्म' है।

मेरी यह धारणा प्रतिदिन खूब दृढ़ होती जाती है। कि गरीबोंको शारीरिक सहायता देना एक प्रकारका दोष है। ठीक तो यह है कि उनको अपना कार्य अपने आप करने देना चाहिये। उनको भीख देनेसे हम उनको सदा नीच बनाये रखते हैं। पाठशालाका मकान बनाओ, अध्यापकोंको वेतन प्रदान करो, शिक्षकोंको पेटपूर्ति करने लायक आजीविकाका प्रबंध करो। उनको स्वावलंबी बननेमें सहायता दो, पारतोषिक देकर उत्साह वर्धन करो और अपने विचार प्रदान कर श्रेष्ठ बनाओ परंतु ऐसे कार्योंमें आवश्यक्ताके अतिरिक्त कुछ मत दो। एडवर्ड डेवीसन।

धनवानोंके आभूषणोंमें गुंथे हुए पानीदार मोती, सुंदर स्त्रियोंके कानोंमें लटकते हुए चमकीले रत्न स्वच्छ रात्रिमें आकाशकी शोभा बढानेवाले तेजस्वी तारे और वसंतऋतुमें निर्मल प्रातःकालको सुवर्णमयी बनानेवाला बाल सूर्य, इन सबकी अपेक्षा **दूसरोंके दुःखके लिये सदाचारी समर्थ मनुष्योंके गालोंपर बहते हुए आसुं अधिक चमक और महत्व रखते हैं।**

इरेज्ञम्स डार्विन।

जिसके ऊपर उपकार किया जाता है उसे जीवनभर उसका स्मरण रखना चाहिये किन्तु उपकार करनेवाला यदि नीच और अनुदार नहीं बनना चाहता है तो उसे अपने किये हुए उपकार उसी समय भूल जाना चाहिये। किसीपर कियेहुए उपकारका स्मरण रखने, अथवा उसके संबंधमें यद्वातद्वा कहनेके समान दुसरी नीचता नहीं है। डिमॉस्थनीस

जिसे हम 'शाश्वत जीवन' कहते हैं उसका सच्चा तत्व दूसरोंकी दयाके लिये अपना सर्वस्वका उपयोग कर डालना ही है। क्योंकि परमात्मामें अपार दया है। चार्ल्स एफ० डोल।

अपकार करनेवाले मनुष्योंपर उपकार करनेके सिवाय अन्य कोई उनको वश करनेका मानप्रद मार्ग नहीं है। टॉड।

तुम ऐसा चाहते हो कि स्वार्थत्यागके भारी कार्य करें, परंतु इसकी अपेक्षा छोटे छोटे सत्कार्य करनेमें अधिक महत्व है। मृदु हास्य, प्यारी दया और व्यवस्थित वृत्तिसे किये हुए छोटे मोटे कार्य हृदयको अधिक शीघ्र वश करते हैं। और सद्वृत्तियोंको अधिक सतेज बनाते हैं। सर हम्फ्रे डेवी।

एक मनुष्यको दान देना और एकका ही भला करना ठीक है, परंतु बहुतसे मनुष्योंको दान देना, अधिक जनोंका उपकार करना और उनकी सहायता करना बहुत ही अच्छा है, क्योंकि विश्वका उपकार करना महात्माओंका कार्य है। डान्टे।

निर्बल मनुष्योंकी सहायता करना, मित्र रहित असहाय पुरुषोंका मित्र बनना, और जिनके कहनेमें बिलकुल ही परिश्रम नहीं करना पडता और न कुछ व्यय ही करना होता है, परंतु जिन वचनोंकी प्रतिध्वनि अनंत होती है ऐसे प्यारे मीठे वचन बोलना चाहिये। ये सब बातें छोटी–नहीं जैसी हों तोभी वे सर्वस्व हैं।

डब्ल्यु० सि० गॅनेट।

अरे! दूसरोंके सुखमें भाग लेने और उनके दुःखमें रोनेसे मिलनेवाला आनंद अपने दयालु हृदयको दो तो कैसा अच्छा हो?

पी० डाबरीज।

यदि मैं एक ही मनुष्यको निराशासे बचा सकूं तो मेरा जीवन व्यर्थ गया मत समझो। यदि मैं एक ही मनुष्यका दुःख दूरकर सकूं, विपत्तिसे बचा सकूं अथवा तडफते हुए पक्षीको उसके घोंसलेमें बिठा सकूं तो मेरा जीवन सफल है।

एमीली डीकीन्सन।

जिस समय हम अपने स्वार्थसे और निंद्य बुरी वृत्तियोंसे अपनी आत्माको नर्कमें जाने योग्य कार्य करते हैं—नरकगति योग्य कर्मोंका बन्ध करते हैं, और जिस समय हम अपने मिथ्याज्ञानसे अपने ही अस्तित्वको भूल जाते हैं—आत्मज्ञानसे विमुख हो जाते हैं इतना ही नहीं किन्तु आत्मीक शाश्वत सुखकी सत्यताको व्यर्थ करनेका प्रयत्न करते हैं उस समय स्वर्गीय आनंद अपने पास नहीं आता। स्वर्गीय सुख तो तब ही अपने पास आयेगा जब कि हम यह समझने लगेंगे कि संसार मात्रमें ममत्व अपना नहीं है किंतु एक ऐसा भी स्थल है जहांपर वह दिव्य आत्मीय सुखको पहिचाननेकी शिक्षा मिलती है और जगतके प्राणीमात्रसे प्रेमसूत्रमें एक होनेके लिये परमात्माका ध्यान करना सीखना होता है।

डेविड डानाही।

जिस प्रकृति[1] (द्रव्य क्षेत्र काल और भाव) के नियमोंको हमें

---

१ प्रकृतिमें दो प्रकारके पदार्थ हैं—एक जीव और अजीव। जीव कर्मोंके आधीन अनादिकालसे है। इसीलिये वह द्रव्य क्षेत्र काल भाव (प्रकृतिका रूप) के अनुकूल अपने किये हुए कर्मोंके वशसे जन्ममरण रूप अनेक अवस्था धारण कर रहा है। परन्तु प्रकृति (स्वभाव) सबको अपनी २ शुद्ध अवस्थामें रखना चाहती है। और उस शुद्ध अवस्थाका प्राप्त कर लेना ही स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता भी दो प्रकारकी है—एक

मान देना है जिसके साथ हम निरन्तर रह रहे हैं, जिसकी नीति (कानून)से हमारी आत्माके साथ अतीव गाढ़ और घनिष्ट संबन्ध है और जिस संबन्धसे ही हमको सुख दुःखका भागी बनना पड़ता है। वे नियम कुछ मनुष्योंके बनाये हुए नहीं है। इसलिये वे तुमको यह नहीं पूछते कि 'तुमको क्या कहना है? तुम क्या चाहते हो? तुम क्या करना चाहते हो? वे नियम उक्त प्रश्नोंका आधार बिलकुल नहीं रखते। किन्तु प्रकृतिके सत्य और यथार्थ नियम सबको स्वतंत्र रखना चाहते हैं। जिस पदार्थकी जसी शुद्ध अवस्था है तद्रूप सरलतासे उसको प्रकृति रखना चाहती है, वह इसीके लिये निरन्तर प्रोत्साहन देती है और पापके निषेध करनेकी अपेक्षा वह पापको ही सर्वथा नष्ट करनेके लिये आवश्यक सद्गुण प्राप्त करनेका उपदेश देती है। वह इतनेसे ही संतुष्ट नहीं होती कि मनुष्योंके विरुद्ध झूठी साक्षी दो किन्तु वह एक दूसरेको परस्पर प्रेम करनेको कहती है। वह सबको आनंदी और सुखी बनाना चाहती है। वह हमारी अभ्यंतर आत्मामें चुपकेसे कहती है कि असद् विचारोंसे रुको, पापाचरणसे बचो। हिंसादि भयंकर प्रकृति विरुद्ध कार्योंका सर्वथा त्याग करो। तुमारी आत्मासे किसीको जरासा भी कष्ट न हो ऐसा अपना

ऐहिक, दूसरी यथार्थ। ऐहिक स्वतंत्रता–किसीको बाधा पहुंचाये विना नीति (धर्मनीति राजनीति और व्यवहारनीति) को अवलंबनकर निर्दोष स्वेच्छासे रहना है। और यथार्थ स्वतंत्रता काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह आदि विकारोंको नष्टकर निर्विकार अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य और अनंतसुख सहित कर्मोंकी पराधीनतासे सर्वथा रहित, शुद्ध बाधारहित, नित्य, आनंदमय, पवित्र, सर्व तंत्र रहित स्वतंत्र होना ही है।

वर्तन रखो । इतना कहकर ही वह संतुष्ट नहीं होती है किन्तु चाहती है कि सब जीवमात्र परस्पर बंधु हैं उनसे विशुद्ध प्रेमसे मिलो । दूसरोंके कार्योंमें अपने स्वार्थके लिये व्याघात मत पहुंचाओ । अन्यके हक हठात् न छीनो—मेरे (प्रकृतिके) स्वतः-सिद्ध दत्त हकोंको छीननेका किसको अधिकार नहीं है । वह हमको दूसरोंका अनिष्ट करनेसे रोकती ही नहीं किन्तु वह ऐसा करना चाहती है, कि हम अनिष्ट करना ही भूल जांय और सबका हित करनेमें अपनेआप लवलीन हो जांय । डाक्टर डेल ।

जिसको हम कर सकें ऐसी दयाकी एक बूंद कोरे बकवादसे बहुत अच्छी है ।

गरीबोंको स्वयं अपनी स्थिति सुधारनेके योग्य प्रयत्नशील बनाना, उत्तमोत्तम सहायता करनेका मार्ग है ।

यदि हम अपने जीवनसे दूसरोंके जीवनको अधिक सरल न बना सकें तो उस जीवनसे क्या लाभ ?

बुरा कार्य इस प्रकारका कोई भी नहीं है जिसका प्रतिफल (असर) करनेवालेको ही मिले, तुम अपनी आत्माको उघाडकर प्रकट रूपसे वह नहीं बतला सक्ते कि जो तुममें दुर्गुण हैं वे न फैलेंगे—उनका असर सर्वत्र न होगा । मनुष्योंका जीवन श्वासो-श्वासकी वायुके समान परस्पर पूर्ण मिश्रित है और इसी लिये बुरे वचन, बुरे विचार, और बुरे कार्य भी छूतरोगकी तरह अव-श्य दूसरोंमें फैलते हैं ।

अरे ! मुझे ऐसे स्वर्गवासी अमर महात्माकी मंडलीमें संमि-लित होनेकी इच्छा होती है जो विदेह होने पर भी अपनी

अत्माको अति उन्नत बनाये हुए हैं व परमात्माके रूपमें इस समय भी वे विराजमान हैं।

मनुष्योंके हृदयमें उदारता, साहस, निस्वार्थता, नीच इच्छाओंकी तरफ अति घृणदृष्टि और उन्नत विचारोंमें लवलीनता आदि उत्तमोत्तम कार्य करनेसे हम महात्मा बन सकेंगे और हमारी आत्मा स्वच्छ ताराओंके समान सर्वदा चमकती रहेगी।

जगतमें वही जीवन स्वर्गसमान है जिस जीवनसे इस पृथ्वीपर अमर संगीतका प्रादुर्भाव हो, और जो मनुष्योंके जीवनपर प्रतिदिन बढ़नेवाली सत्तापर अधिकार कर सके। ऐसी उत्तमोत्तम आज्ञाओंको प्रकट करे।

कोई मुझे ऐसे अमूल्य और दुर्लभ्य स्थलपर लेजाय जहां पर बहुतसे प्राणी अपनी महाव्यथाके समय मुझसे बल प्राप्त करें और वे अपनी उदार भावनाओंको तथा विशुद्ध प्रेमको पुष्टि करें, मेरे वदन (मुख) पर मृदु प्रेमभरी हास्यकी कालिमा दिखाई पड़े, मेरी उपस्थिति मात्रसे चारों तरफ सत्कार्य होने लगें, और ऐसे कार्योंमें मैं स्वयं लीन हो जाऊं।

जार्ज एलियट।

विना उदार हृदयका धन कुरूपभिक्षुक है। मनुष्य संपत्तिके लिये प्रयत्न करता है—सम्पत्तिको पैदा करता है, परन्तु जिस प्रकार ईख मनुष्योंके लाभके लिये पेरी जाकर (पीडा सहकर) भी अपना सर्व रस देती है, उसी प्रकार तुम भी दूसरोंके लिये कष्टोंको सहनकर अपने सर्वस्व देनेमें मत हिचको।

दुःखके बदले दूसरोंको सुख और आनंद देनेसे तुमारा सुख ऐसा सुंदर बनेगा जैसा और किसी अन्यसे नहीं।

बिगाड़नेका कार्य सरल और सस्ता है, परंतु सुधारनेका कार्य कठिन और गुरुतर है। तरुण आत्माको सहायता देना, शक्तियें वृद्धि करना, आशा देना, सेवामें लगी हुई शक्तिको बल देना, नवीन विचार और दृढ़तासे कार्य करनेके आलसको पराजित करना ये सब कुछ सरल नहीं है, किन्तु दैवी आत्माओंका कार्य है।

आर० डब्ल्यु० एमर्सन।

शान्त्वना देनेवाले वचन और दया सहित व्यवहारसे युवकोंको कठिन समयमें आश्वासन मिलता है। मृदु दया ही छोटे छोटे बालकोंके पास जासक्ती है और उनको अपनी तरफ इस प्रकार आकर्षित करलेती है कि उनको मालूम भी नहीं होता।

कुमार्गमें जानेवाले मनुष्योंको अनेकवार सहानुभूति प्रदर्शित करनसे उनको सुमार्ग पर लाया जाता है। एक स्त्री ऐसी है जो अन्यकी निर्बलता पर पूर्ण सहानुभूति रखती है और उनकी भूलोंके लिये अपनेको उत्तरदाता समझती है। जीवनयात्राकी विकट समस्यायें वह अच्छी तरह समझती है। उसके ज्ञान करानेसे ही मनुष्य शान्त और सद्गुणी जीवनके मार्गकी तरफ फिर लौटकर आयेंगे। और जीवनयात्राको पुनः योग्य रीतिसे चलनेके लिये प्रारंभ करेंगे।

भाई बहिनका प्यार इस पृथ्वीपर सबसे अधिक निःस्वार्थी और पवित्र होता है। वे परस्परके प्रेमसे प्राप्त होनेवाले आनंदके सिवाय अन्य किसीकी अपेक्षा किये बिना एक दूसरेको चाहते हैं। स्वार्थत्यागकी मात्रा इनमें इतनी अधिक होती है कि दूसरेके सुखमें वृद्धि होती हो तो अपनेआपको उसके लिये होम करदेते हैं।

रोगीका कम। अंधकार पूर्ण था, और रोगी अकथनीय दुःखसे दुखित हो रहा था। उस समय धीरेसे द्वार खुला, और एक मित्रने प्रवेश किया। एक भी शब्दका उच्चारण नहीं होने पाया था, किन्तु शब्दसे अधिक शक्तिवाले प्रेमसे रोगीका हाथ जैसे ही पकड़ा गया वैसे ही रोगीकी आंखोंसे अश्रुधारा बहने लगी, वही सच्ची सहानुभूति है। आर. एलिस।

सब लोग घर छोडकर चले गये हों, और दुःखी सहायताके लिये चिल्ला रहा हो उसी समय दयाभरी सहानुभूति प्रकट करनेका उत्तम अवसर है। उत्तम स्थितिवाले मनुष्योंके साथ दयालु होनेमें कोई भी महत्व नहीं है। इटेलिकस।

ऐश्वर्यशाली पुरुष पृथ्वीको सींचनेवाले और फलप्रद बनानेवाले स्रोतके समान है। ऐपिक्यूरस।

प्रेम कभी व्यर्थ नहीं जाता, यदि दूसरेका प्रेम बदलेमें न मिले तो पीछे वह आकर मूल प्रेमीको अधिक मृदु और पवित्र बनाता है। झानग।

मनुष्योंकी अवनतिके समय दयादृष्टि डालो परन्तु उनके दोषोंकी कभी भी अधिक क्रोधसे विवेचना मत करो, आत्मीय कृपा सबके लिये समान है। यदि वह छीन ली जाय तो तुम भी डंवाडोल हो जाओगे और तुम्हारी भी सब २ अवनति हो जायगी। एडमेस्टन।

यह मनुष्य-देह मुझे वार वार नहीं मिलेगी, तो फिर ऐसे दुर्लभ प्रवासमें जो मुझसे भला हो सके, तथा मनुष्योंके प्रति में कुछ भला कर सकूं तो मुझे वह अभी करने दो। इसमें मुझे देरी

न करने दो अथवा भुला मत दो क्योंकि ऐसा करनेसे पुनः यही शरीर प्राप्त हो सकेगा। ऐडिसन।

सत्कार्यमें कभी पूरी तो असफलता नहीं हो सक्ती। यद्यपि हमारी आशा और महत्वाकांक्षाओंको सिद्ध करनेमें अपने साधन और अंतिम लक्ष्य बिलकुल निर्दोष तो नहीं होते तथापि कार्य करनेमें हमारी भक्ति और आशीर्वादके लिये परमात्माका ध्यान रहे तो हमारे प्रयत्नोंका परिणाम उत्तम ही होगा। जिसप्रकार सूर्य-ताप और जलवृष्टि कभी व्यर्थ नहीं होती, अग्नि भस्म किये विना शांत नहीं होती, प्रकाश प्रकाश किये विना नहीं रहता और तारे चमके विना नहीं रहते। उसी प्रकार तुच्छसे तुच्छ मनुष्यके हृदयमें भरा हुआ प्रेम सत्य और प्रमाणिकताकी शक्तिको अमर बनाये विना और सत्कार्य करे विना नहीं रहता। ऐसे प्रेमसे अखिल संसार भरा हुआ है। उन शक्तियोंके द्वारा प्रकृतिका कार्य होरहा है, और वह प्रेम जीवन-सौंदर्य और आनंदको वृद्धिगत करता रहता है, तथा उससे हम परमात्माका ध्यान करते हैं। जो मनुष्य परमात्मामें तन्मय होजाता है वही संसारसे विजय प्राप्त करलेता है।

डी० ई० आयर्न्स।

मनुष्य भले ही अपनी उच्च स्थिति, मर्यादा-द्रव्य और आरोग्यताको खोदे-नष्ट कर दे, परंतु वह यदि निःस्वार्थ जीवन व्यतीत करता हो तो सुखमें ही है। हां एक ऐसी अपूर्व वस्तु है जिसके विना मानवजीवन बिलकुल भाररूप होजाता है और वह प्यारी अनुकंपा है।

सत्कार्य करनेमें जितना प्रेम होता है उतने ही प्रमाण वे अधिक श्रेष्ठ हैं।

धन उत्तम वस्तु है, परन्तु ऐसे अनेक स्थल होते हैं कि जिनमें मनुष्य उस धनका स्वामी न बनकर उलटा दास बन जाता है। यदि अतिशय लोभ करे विना उसको प्राप्त करे और विना सकोचके उसको व्यय कर सके तभी वह धन आशीर्वाद स्वरूप है।

जब तक प्रत्येक सद्गृहस्थ और सन्नारी जनसमुदायके कल्याण करनेमें अपनेको उत्तरदायित्व न समझें, और जिन अनिष्टोंको सहसा दूर कर सक्ते हैं ऐसे अनिष्टोंसे दुःखित मनुष्योंकी रक्षाके लिये प्रत्यक्ष निःस्वार्थ होकर दृढ़ प्रयत्न न करें, तब तक मनुष्य जातिपर आनेवाले भयोंसे हम सर्वथा मुक्त नहीं होसक्ते।

अपनी शक्तिके अनुसार प्रयत्न करनेपर भी यदि समय प्रतिकूल हो, मार्ग अत्यंत विकट हो, और तुझसे कुछ कल्याण होनेकी आशा कम हो अथवा न भी हो, तो तू हतोत्साह कभी मत हो। प्रकृति धैर्यसे कार्य करती है। तू भी धैर्यवान होकर दृढ़ रह। स्मरण रख कि तेरे छोटे २ सत्कार्य भी नष्ट नहीं होंगे। यद्यपि वर्तमानमें वे फलप्रद नहीं दीख रहे हैं तथापि वे समाधिके नीचे दबे हुए बीजके समान हैं। जिस समय काल उनको बाहर निकालेगा तब वे एकदम फूट निकलेंगे। वे चाहे अल्प हों या महान्, परन्तु प्रकृति अल्प भी प्रामाणिक सामग्रीको विशेष उत्तेजित करती है और फलप्रद बनाती है।

कोई भी सत्कार्य व्यर्थ नहीं जाता, चाहे वह सत्कार्य समुद्रकी तरह समान विशाल हो अथवा मनुष्यकी उदारताके अनुसार रत्तीभर हो। यदि वे पवित्र और स्वच्छ होंगे तो वे कभी भी

विजलीके समान अंतर्धान न होगें अथवा कीचडीके स्थानमें छिप न जांयगे वे जगतके जीवनप्रवाहमें आनन्दसे स्फुरायमान होंगे। और फिर वे परमात्माके अनन्तसुख समान शाश्वत हो जांयगे। एफ० डब्ल्यू० फेरार।

किसी भी सत्कार्य करनेवालेको यह विचारकर दुःखी नहीं होना चाहिये कि दूसरे अन्य मनुष्य ईर्षासे अनिष्ट करते हैं। यदि किसी अकेले मनुष्यने भला कार्य किया हो तो यह कहा जायगा कि उसने ठीक किया। यदि उसने दुष्कृत्य किया हो तो उसको कोई भी मनुष्य सत्कृत्य नहीं कह सकेगा।

विना 'दान' के धन किसी कामका नहीं है—जो उसका उपयोग दूसरोंको सुखी बनानेके लिये करता है, वही उस धनसे सुखी है।

जो मनुष्य नम्र और सहानुभूतिकी वृत्तिसे दया करनेकी ओर झुकता है, दूसरोंके दुःखोंमें भागीदार बनता है और इसके कारण अन्य मनुष्योंको अपने स्वार्थके लिये हानि तथा दुःख नहीं पहुंचाता है वह वृत्ति अन्य सब वृत्तियोंसे श्रेष्ठ है, यद्यपि ऐसी वृत्तिको भले ही अल्प सत्कार मिले तथापि वह उच्च सत्कारकी अधिकारिणी है। सेवा करनेमें तत्पर रहनेसे, सेवाके विचारोंमें लीन होनेसे, और परोपकारके कार्योंमें दत्तचित्त होनेसे, मनुष्य सर्वप्रिय होता है, और यही अभिप्राय प्रकृतिका है।

दुःखके समय सुख देनेके लिये किस प्रकार सांत्वना देनी, किस युक्तिसे उसके मनको शांत करना, किस प्रकार हंसकर मन प्रसन्न करना? आदि बातोंकी शिक्षा, और अनुभवके साथ मनुष्यके हृदयमें गहराई तक प्रवेश करनेकी शक्तिकी परम आव-

श्यक्ता है । इन कलाओंका अनुचित उपयोग न करना चाहिये । यह पूर्ण ध्यान रखना चाहिये, तब ही तुम सेवा करनेके पात्र बन सकोगे ।

जिनकी हम भलाई करना चाहते हैं, उनके साथ कर्कश शब्द बोलने और निर्दय कार्य करनेसे रुकनेकी सावधानी यदि हम रख कर कार्य करें तो अनेक हृदयोंके दुःख अवश्य दूर हो जांयगे इसमें संदेह नहीं, एक वार वह समय आयगा कि जिसके साथ हम निर्दयता करना चाहते हैं वह सदाके लिये दूर हो जांय । और फिर वह अपने पश्चात्तापकी गहरी पुकार कभी न सुने ।

फील्डिंग ।

उत्साह, उपदेश और ज्ञानकी अपेक्षा प्रेमभावसे अनेक पापी सुधर गये हैं ।

प्यारे वचन विश्वके संगीत हैं । प्रकृतिके कारण होनेवाले दुःखोंका निवारण उन वचनोंसे तत्काल जादूके समान होता है— उनमें अपूर्व शक्ति है ।

मधुरता प्रत्येक वस्तुमें मधुरता लाती है । मधुर प्रेम संसारको मीठा बनाता है, जीवन शक्तियोंको विकसित करता है, आनंदप्रद रंगोंसे रंगता है और नवीन जीवनशक्तिका संयोजन करता है ।

हमारा जीवन किस लिये है इस प्रश्नका उत्तर मैं तो यही दूंगा कि जहां पर यह पहुंच सके ऐसे विश्वके प्रत्येक कोनेमें जाकर दुःखी प्राणियोंको सुख देनेके लिये और उत्तमोत्तम धर्मकार्य करनेके लिये है । प्रेमपूर्वक प्यारसे दिया हुआ धर्मोपदेश अत्यंत

गहरा असर करता है और अनंत प्राणियोंकी आत्माको चुंबक पत्थरके समान आकर्षित कर लेता है। एफ० डब्ल्यु० फेवर।

जिस समय प्रेम परिश्रमका विचार करता है उस समय वह मृत्युके समीप पहुंच जाता है और जिस समय वह प्रेम अपने आपको अगणित आत्माओंको अर्पण कर देता है और ख्यातिको भूल जाता है उसी समय वह विश्वकी शिखरके ऊपर चढ़ जाता—महोन्नत हो जाता है।

' मनुष्योंका सच्चा सुख आत्म—त्यागके आनंदमें है। यह नीति यथार्थ है क्योंकि आनंदका मिलना ही प्रेमका प्रादुर्भाव है। स्वप्रेमको सत्यप्रेम नहीं कह सक्ते, किंतु सत्यप्रेम कोई दूसरा ही है। स्वप्रेम केवल अपनेको ही रक्षित रखनेमें लीन रहता है, किंतु वैसा करनेसे वह सब कुछ खो बैठता है। स्वप्रेम—द्वेष है, और द्वेष—पीडा है। परन्तु सत्यप्रेम वृद्धि करनेवाली और विस्तृत आनंद देनेवाली निधि है। जैसे जैसे अधिक प्रेम होता है वैसे २ आनंद भी अधिकाधिक बढ़ता है। और जैसे २ अधिक आनंद बढ़ता है वैसे २ अधिक प्रेम होता है। सत्यप्रेमकी परीक्षा यही है कि वह दूसरेको दुःखी किये विना ही अपनेको भूल जाता है। फ्रेडरिक पी० फेरफील्ड।

मित्रता स्थिर रखनेके लिये मित्रका भलाकर, और शत्रुको मित्र बनानेके लिये शत्रुका भी भलाकर।

गरीबको गरीबाई (दरिद्रता) में ही सुखी करनेकी अपेक्षा उसकी स्थितिका परिवर्तन करनेमें सहायक होना विशेष कल्याणप्रद मार्ग है, यह मेरी धारणा है। बेंजामिन फ्रांकिलन।

अपात्र पर की हुई उदारता दुर्गुण बनाती है। फुलर।

तुम्हारा जीवन ही उपदेशमय बने। जार्ज फाक्स।

प्रकृति कहती है कि अपने आपको प्रेम करो, गृह शिक्षा कहती है कि कुटुंबपर प्रेम करो, देशवासी कहते हैं कि अपने देशसे प्रेम करो, परन्तु धर्म कहता है कि 'प्राणीमात्रसे प्रेम करो'-भेद भाव रखे विना दया करो। दया करो। दया करो। फेल्टहाम।

श्रद्धा करनेसे दृढ़ता होती है। आशा करनेसे आशीर्वाद प्राप्त होता है और प्रेम करनेसे समस्त विश्व मित्र होता है।
माइकेल फॅरलेस।

जिस समय हम अपमानको सहनकर भी अपने बंधुओंको दुःखसे मुक्त करते हैं उस समय हमारी शक्ति दूनी बढ़ती है।
सेंट जान फ्रान्सिस।

उदार हृदयसे प्रारम्भ करो। जब तुम यह विचार करोगे कि दूसरोंकी सेवा कैसे होती है? तब तुम अपने साधन अधिक प्राप्त हुए समझोगे। तुम्हारा कोई भी भाग ऊजड नहीं रहेगा किंतु बोया जायगा। तुमारे पास जो कुछ साधन है उससे प्रयत्न करो। उसका ही प्रभाव बहुत अधिक होगा। जे. बी. फायिंगहाम।

प्रभात होते ही किसान खेतमें बीज बोता है, वे कहांपर पड़ते हैं इन बातोंकी उसको कुछ भी अपेक्षा नहीं है। वे बीज अपने शेष कार्य विश्वंभरा (पृथ्वी)को सोंप देते हैं। प्रकृति सूर्यताप और वृष्टिपातसे वृद्धिंगतकर सौगुना देती है। इसी प्रकार

सद्वचन और सत्कार्य भी भूले भटके, एकाकी और दुःखी प्राणियोंके साथ करनेसे महान विस्तारपूर्वक फूट निकलते हैं।

जोन फुलर्टन।

शरीरकी स्थिरताके लिये जितनी सूर्यकी आवश्यकता है उससे अधिक आत्माको सहानुभूतिकी परमावश्यकता है। जब तुम जिस२ स्थानपर सहानुभूतिके प्रतिकूल प्रभाव देखोगे, तब वहां पर चिंता और निर्बलताके स्पष्ट चिन्ह दिखाई देंगे। सहानुभूतिके अभावमें मनुष्य जीवनपर ऐसी अंधेरी छाया पडती है कि जिसके कारण उसका गुलाबसा आनन्द नष्ट होजाता है और कितनी ही वार उसकी मानसिक निर्बलताके कारण सर्व वृत्तियां कुत्सित मार्गमें चली जाती हैं–यदि तुम इन पंक्तियोंके पाठको अपने दैनिक जीवनमें धारणकर उत्साहित होकर कार्य करोगे तो अवश्य ही तुम कार्यनिष्ठ और शक्तिशाली बनोगे। ऐसा करनेसे तुम बहुतसे प्रदेशको सुंदर और आनंदी बना सकोगे। सांसारिक सुखोंकी बहुत वृद्धि होगी तथा परस्पर एक दूसरोंका भागीदार होनेके कारण बड़े सरल उपायसे जीवनका भार हलका हो जायगा।

आर्थर फीन्लेसन।

केवल उपदेश देनेके लिये ही ज्ञान प्राप्त करना आत्मश्लाघाका बुरेसे बुरा रूप है। दूसरोंकी सेवार्थ अपनेको तत्पर रहनेमें जो ज्ञान निरंतर प्रेरणा करता है–दूसरोंकी सेवा करना ही जिस ज्ञानका मुख्य कर्तव्य है, वही ज्ञान पृथ्वीपर अनेक आत्माओंको शांति करनेवाला और सर्वोत्तम फलप्रद है।

गार्डीनर।

जिस मनुष्यका प्रातःकाल सत्कार्यमें व्यतीत होता है। उसका सारा दिन आनन्दसे सुखरूप जाता है। उसको सर्व वस्तुओंके संयोगमें सुख शांति और उल्लास मिलता है।

गॅसनर।

जिस प्रकार राजकीय नियमों (कानून) का पालन करना हमारे लिये अनिवार्य है ठीक उसी प्रकार सच्ची उदारता प्रकट करना हमारा अनिवार्य धर्म है। उदारताके नियम हमारी मानसिक विशुद्धवृत्तियोंसे बने हैं अतएव यही नियम मनुष्योंके मुख्य नियम होने चाहिये।

गोल्डस्मिथ।

दयालुहृदय एक वादित्रके समान है। जिसके ऊपरसे निकलनेवाली पवनकी लहर दिव्यस्वर उत्पन्न करती है।

गारवेट।

प्रेम करनेसे हृदय खाली नहीं होता, और दान करनेसे रुपयोंकी थैली कुछ खाली नहीं होती। डब्ल्यू० ग्रीनवेल।

यदि मैं दूसरेके हृदयमें थोडासा भी आनंद पहुंचा सकूं, यदि मैं अपने जीवनसे अन्य समस्त मनुष्योंके साथ भ्रातृभाव उत्पन्न कर सकूं, यदि मैं दूसरोंके दुःखोंको दूर करनेवाली एक भी बात कह सकूं, तो मेरा जीवन महान न होने पर भी, और बहुतसे मनुष्योंसे अज्ञात होने पर भी वह 'व्यर्थ' है, ऐसा नहीं समझा जायगा। रेवरेण्ड पी० गेस्टर।

जगतको आनंदी हृदयसे देखो, संसारमें सर्वत्र दुःखी हृदय दिखते हैं यदि तुम्हारे हंसनेसे किसीको भी कुछ सहायता मिले, किसीका भी जीवनभार कुछ हलका हो जाय तो तुम श्रेष्ठ हो।

फ्रांसिस एल ग्रीन।

मित्रोंकी आवश्यकताओंको सीखो। दुःखीके प्रति सहानुभूति रखना सीखो। आजीविका न मिलनेवाले असहाय दीनके लिये परिश्रम करना सीखो। अन्यके दुःखोंको दूर करनेके लिये सचमुच तुम दुख सहो। ऐसा करनेसे तत्काल ही मालूम पडेगा, कि तुम सेवा-कार्यमें लवलीन हो, तुमारे चारित्रमें पवित्रताकी ज्योति विकसित होगी, तथा विचार करनेका स्वभाव होगा। हां इस प्रकारका अभ्यास तुमें अध्यात्मिक विचारोंमें अग्रसर करेगा। जिससे तुम अपने परिचयमें आनेवाले मनुष्योंके सहायक अनायास बन जाओगे। केनन गोर।

अपने विरोधियों (शत्रु) के दोषोंकी आलोचना करे विना उसके सद्गुणोंके ग्रहण करने और उसके सत्कार्योंकी स्तुति करनेसे सच्चे सहायक हो सकोगे।

हम दूसरोंके प्रति जो प्रेमभाव रखते हैं उससे हम अपनी आत्माको पहचानना सीखते हैं। दूसरोंके लिये आशीर्वाद प्राप्त होनेके लिये हम जो प्रार्थना करते हैं वह अपने ही काम आयगी।

ई० गीब्सन।

लोग सत्कार्य करते हैं। परन्तु उसके बदलेमें आत्म प्रशंसासे फूलकर कार्य करनेकी शिक्षाको खो बैठते हैं।

जिस समय जेतूनमें फूल प्रादुर्भाव होते हैं यदि उस समय धुआं अतिशय पडने लगे तो फूलोंका आना एकदम रुक जाता है। इसी प्रकार सत्कार्य करनेके प्रारम्भमें ही आत्म-प्रशंसासे गर्वान्वित होकर आत्मवृत्तियोंमें धूंधलापन प्रकट हो जाय तो सद्विचारोंकी उत्पत्ति नष्ट होजाती है। वह अपने उद्देशसे च्युत

होजाता है। सत्कार्यके विकाससे रुक जाता है एवं अपनी आत्माको फलद्रुप बनानेमें असमर्थ होता है। सेंट ग्रेगरी धी ग्रेट।

जीवनके सर्वदा तीन मार्ग होते हैं। उच्च, आंतर और बाह्य। उच्च मार्ग वह है कि जब आत्मा परमात्माके प्रति अनन्य भावसे तल्लीन होता है और अपनी समस्त प्रवृत्तिओंको अन्य सब विषयोंसे हटाकर परमात्मा रूप इच्छा करता है। जैसे जैसे वह उस मार्गमें अधिक प्रवेश करता है वैसे२ उसकी इच्छा तीव्र और तीव्रतर होती जाती है और अंतमें वह भी *परमात्मा* हो जाता है। अंतर मार्ग अपनी विशुद्ध प्रवृत्तियोंमें लगनेको प्रयत्न-शील होता है। बाह्य मार्ग अपने स्वार्थमें उन्मत रहता है। और अज्ञानसे जड़ रूप होता है। मनुष्योंको उत्तम मार्गका अनुसरण करना चाहिये।

इस संसारमें मनुष्योंको तीन प्रकारका जीवन व्यतीत करना पड़ता है। एकान्तमें भक्तिमय जीवन, प्रत्यक्ष पवित्र जीवन और सेवामें प्रवृत्तमय जीवन। इसमेंसे एक नहिं, दो नहिं, किन्तु तीनों प्रकारके जीवन एक साथ व्यतीत करना श्रेष्ठ है–योग्य है। यही सत्य जीवन है। स्मरण रखना चाहिये कि सेवाका सच्चा स्वरूप इस जीवनसे ही प्राप्त हो सकेगा। सेवा व्रत आदिके दो

---

१ जैन धर्ममें इस मार्गको बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्माके नामसे तीन प्रकार कहा है। परमात्मा–जिसकी आत्मा अत्यन्त विशुद्ध होगई हो। अंतरात्मा–जो समस्त जीवोंको आत्म समान समझता हो और जिसकी समस्त प्रवृत्ति अतिशय विशुद्ध हो। बहिरात्मा–जो अपने स्वार्थमें लीन हों और अज्ञानसे आवृत्त हों।

प्रकारके जीवनसे व्यक्त होता है क्योंकि भक्ति और पवित्रता ही सेवाका मुख्य उद्देश है। सेवाकी मूल उत्पत्ति-स्थान भक्ति और पवित्रता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि मनुष्योंकी इतनी अधिक सेवा क्यों व्यर्थ होजाती है? मैं तो इसका उत्तर यही दूंगा कि उन मनुष्योंके जीवनमें उक्त दोनों प्रकारका जीवन नहीं है अथवा वे जीवनके मूल (मुख्य) ध्येयको नहीं पहुंचे हैं।

एस० डी० गार्डन।

क्या तुमको कुछ अवकाश मिलता है? यदि मिलता है तो तुम उसका कुछ उपयोग करते हो या नहीं? परमार्थ कार्यमें थोड़ासा समय उपयुक्त होगया तो सैकड़ों रुपयोंसे अधिक उपयोगी होता है। क्या हम कभी अवकाशका समय इस प्रकार उपयोगमें लाते हैं? तुमको अपनी सांसारिक स्थितिसे कभी भी सेवा करनेका अवकाश मिला है? कदाचित ऐसा अवसर तुमको मिलता भी हो तो तुम उससे लाभ उठाते हो? यदि तुम अपने बंधुगणोंके लिये कुछ नहीं कर सको तो तुम व्यर्थ जीवन व्यतीत करते हो? क्या तुम साधारण सहानुभूति प्रकट नहीं कर सके? क्या तुम मधुर उत्साहवर्द्धक शब्द नहीं कह सक्ते? बिछुडे हुए मित्रोंमें ऐक्य नहीं लासक्ते? कुछ आश्वासन नहीं प्रदान करसक्ते? जो जो कार्य महान पुरुषोंके लिये करने योग्य हैं वे तुम क्या नहीं कर सक्ते?

गुल्यर्न।

सुजनताकी सुनहरी जंजीरसे समाज एकमें बंधा है। हमारी दिनचर्या एक ऐसी सुंदर निधि है कि जिसको हम यदि उत्तम कार्योंसे भरना चाहे तो बहुत कुछ उत्तम बना सकेंगे।

हम जितनी उन्नत स्थिति पर इस निधिसे पहुंच सकेंगे, उतनी ही हम सहानुभूति, उत्तम विचार और सेवाके कार्य कर सकेंगे।

गोटे।

धार्मिक जीवन व्यतीत करनेके लिये, अन्य समस्त सांसारिक प्रवृत्तियोंसे पृथक् होजाना भी श्रेष्ट है, परतु ऐसा न कर सको तो सांसारिक स्थितिमें ही तुम बहुत कुछ कर सक्ते हो। पवित्रताका सिद्धान्त अच्छी तरह पालन कर सक्ते हो। धार्मिक जीवनके अनुरूप हो सक्ते हो। उत्तम बन सक्ते हो। हां, तुम अपनी शक्तियोंका सदुपयोग करो।

सत्कर्म करनेका ही आदेश मनुष्योंके लिये है उनके फलको चाहनेका अधिकार उनको नहीं है। मधुमाक्षिकाके समान हमसे जितना हो सके उतना मधु एकत्रित करनेमें ही हमारी तत्परता होनी चाहिये। उसका क्या उपयोग होगा? ऐसी वितर्कनामें व्यथ जीवन नहीं खो देना चाहिये। जो कुछ तुम श्रेष्ट कर्म करोगे प्रकृति उसका फल स्वयं तुमारे सामने उपस्थित कर देगी। यह भी स्मरण रखो कि अपने प्रयत्नोंसे जो कुछ हित करते हो वह शायद ही दृष्टिगत हो।

जीवनका दुरुपयोग होनेके सिवाय भी वह अन्यरीतिसे व्यय हो सक्ता है। आनेवाले समस्त प्रसंगोंपर लाभ उठाओ। यदि वह भी नहीं कर सके तो हमसे अयोग्य होता है ऐसा समझो।

जैसे जैसे अधिक उत्साहसे हम शुभ कार्य करते चले जायगे वैसे वैसे ही हमारा जीवन दिव्य होता जायगा। इतना ही नहीं

किंतु ऐसा करनेसे ही हमारी आत्मा परमात्मामें यथार्थ रूपसे अनुरक्त होगी और जीवनको उच्चतर बनानेकी इच्छा अधिक अधिक बढ़ती जायगी। 　　　　एल० डब्यू० ग्रानडन।

यदि मैं अपना और अपने कुटम्बका ही निर्वाह करता हूं, मुझे इनके पालन करनेकी ही चिन्ता है तथा मेरे द्रव्यका उपयोग मात्र मेरे लिये ही होता है तो मैं केवल अपना ही दास हूं और यदि मैं अपने द्रव्यसे अन्यका भी सत्कार करता हूं तो मैं यथार्थ सेवक हूं।

तुम जहांपर रहते हो वहांपर सेवा करो। जिससे लोगोंको तुम्हारी सुखदायक संगतिकी अधिक अधिक इच्छा हो। भलमनसाई, सदाचार और सद्भावना इस सेवा करनेके साधन है, मार्ग हैं। मनुष्योंकी आवश्यकतायें और उनकी इच्छायें समझो। और तदनुसार कार्य करनेमें अनुरक्त बनो। पारमार्थिक कार्य करनेसे जो अपूर्व आनंद मिलता है उसकी अपेक्षा ऐहिक सुख नितांत तुच्छ है। 　　　　जार्ज हरबर्ट।

बड़े बड़े विकट बलवान यंत्रोंके आविष्कार करनेमें मनुष्य अतिकुशल होते हैं। पवन और नदीपर भी अपनी सत्ता रख सके हैं। एंजिन (यंत्र) और बिजलीके सामानमें पूर्ण योग्यता रखते हैं। परन्तु विचारोंकी सत्ता महान होती है। क्योंकि मनुष्य अपने अविष्कृत यंत्रोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यवान है। मनुष्योंमें अपने बंधुगणोंके प्रति नियमित जीवन यात्रा करनेके लिये और उनकी नीति बलको दृढ़ बनानेके लिये ऐसी समर्थ हैं कि जिससे वे उनके दुःखोंका सुखरूप परिवर्तन कर सके हैं।

उनको निश्चिन्त कर सक्ते हैं, उनकी इच्छाओंकी पूर्ति कर सक्ते हैं, उनके असह्य भारको कुछ काम कर सक्ते हैं। और उनके साथ आशा और समवेदनाका वातावरण पहुंचा सक्ते हैं इसीके परिणामसे मनुष्योंको शक्ति-विद्या-बुद्धि प्रदान की जाती है। गरीब-अमीर अज्ञ-सुज्ञ और निर्बल सबके साथ अतुल प्रेम और सहानुभूति प्रकाशित कर हमको शिक्षक-संरक्षक और परिचारक बननेके लिये बाध्य होना चाहिये।

सुख सेवा करनेसे मिलता है। प्रतिदिन प्रातःकालके समय निराश्रित दुःखी मनुष्योंको बचानेके झोंपड़े तैयार करने चाहिये। मध्याह्न समय तृषातुर मनुष्योंको सद्वचनामृत पिलाना चाहिये। और रात्रिके भूखे-नंगे तथा ठंडेसे ठिठुरते हुए मनुष्योंको वस्त्र तथा स्थान देना चाहिये।

मनुष्य अपनी वृद्धि और सुखके लिये जितना उत्तरदाता है उतना ही अपने आसपास मनुष्योंकी सुखसामग्रीके लिये उत्तर-दाता है। जीवनका कार्य, अपने बंधुओंके साथ सुख और शांति एवं न्यायसे भी रहनेमें ही है। अपने समीपवर्ती मनुष्योंके सद्गुणोंको विकाश करनेमें भी पटु बनना चाहिये।

व्यवहारसे जिस प्रकार अन्य मनुष्योंके साथ प्रेम और आशाकी प्रेरणा की जाती है। ठीक उसी प्रकार नीच और बुरे मनुष्योंके सद्‌गुणोंको ग्रहण करनेमें भी अनुरक्त होना चाहिये। ऐसी नीतिसे मनुष्यका मूल्य निर्धारित होता है।

मनुष्यका कर्तव्य-जीवन पर्यन्त सुख उत्पन्न करना और आनंदका विस्तार करना है। पुष्प अपनी सुगंधी सर्वत्र विना

जाने ही फैलाते हैं। इच्छाके विना चुंबक पत्थर लोहेके तारको अपनी तरफ आकर्षित करता है। अपने स्वार्थके विना मोमबत्ती प्रकाश फैलाती है। ठीक इसी प्रकार मनुष्योंकी सुजनता भी विना स्वार्थ और इच्छाके सर्वत्र प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इसका कारण यही है कि आत्माका स्वभाव सुख उत्पन्न करता है।

एन० डी० हीलिस।

दुष्कृत्योंसे सर्वथा दूर रहो तथा अनिष्ट पदार्थोंसे बचते रहो। और सत्कार्योंसे कभी भी विमुख न हो।

तुम्हारे करने योग्य सत्कार्योंकी क्या महिमा है सो सुनो। सबसे प्रथम विश्वास उत्पन्न होता है फिर परलोकका भय, उदारता, समानता, सत्य, धैर्य और पवित्रता होती है। मनुष्य जीवनमें इनसे उत्तम अन्य कोई वस्तु नहीं है। मनुष्योंको क्या क्या करना चाहिये? अनाथ और गरीबका तिरस्कार न करना, धर्मात्मा मनुष्योंकी आवश्यकतायें पूर्ण करना। अतिथि सत्कार करना। चिडचिडे न बनकर शांत स्वभावी होना। सबसे नम्र रहना, जीवमात्रकी दया पालन करना, वृद्धोंकी सेवा करना, भ्रातृभावसे सबके साथ रहना, अन्यके दुःखोंमें समवेदना प्रदर्शित करना, सत्य धर्मसे पराङ्मुख रहनेवाले मनुष्योंके साथ द्वेषबुद्धि न कर उनको सुमार्गपर लानेके लिये सदैव उत्सुक रहना, पापियों पर आक्षेप न कर उनको सुधारनेका प्रयास करना। ऋणी मनुष्यों पर अत्याचार नहीं करना और निर्धनोंको पीस नहीं डालना। यदि उपर्युक्त आज्ञाके अनुसार चलोगे तो उन्नत अवश्य होगे।

सट हरमास।

तुममें कार्य करनेकी जो शक्ति है उसके उत्तरदाता तुम अवश्य हो। हमको नितांत गरीबोंके साथ भी बड़ोंकासा सन्मान करना चाहिये। वोल्शाम हाऊ।

सेवाकी सच्ची महत्ता उत्तेजना देनेमें है। मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि गरीबोंके साथ जो अनिष्ट हो रहे हैं उनमेंसे बहुत ऐसे हैं जो हमारी नम्रता और विवेक न होनेसे उत्पन्न हुए हैं। अपनी स्थितिकी अपेक्षा अपनेसे उत्तम स्थितिवाले मनुष्योंकी जैसे उत्तम भावोंसे हम सहायता करते हैं, वैसे भावोंसे या कुछ अन्य भावोंसे यदि गरीबोंकी सहायता की जाय, तो बहुत कुछ उनकी भलाई हम कर सक्ते हैं। ऑक्टेविया हील।

संसार अज्ञानता और दुःखोंसे परिपूर्ण है इसमें हमारा यही कर्त्तव्य है कि किसी भी प्रकार सबकी अज्ञानता और दुःखोंको कम करें और ऐसा प्रयास करें। दूसरोंके साथ समवेदना विचार, उदारता, विनय और सन्मानके साथ प्रकट करनी चाहिये। सद्गृहस्थ और सन्नारी बननेके लिये ये सद्गुण हैं।

उच्च आशा और परलोकका भय रखकर कार्य करो।

समाजकी आदर्शता शांतिकी परस्पर रक्षा करना है इस लिये प्रत्येक व्यक्तिको जितना हो सके उतना उच्च जीवन व्यतीत करना चाहिये।

'नैतिक कर्त्तव्य'-के मुख्य नियमोंका यही उद्देश्य है कि समाजके प्रत्येक व्यक्तियोंको सुख और शांति प्राप्त हो।

द्रव्य-संग्रह करनेमें मितव्ययता नहीं है किन्तु उसको विचार पूर्वक व्यय करनेमें है।

दृढ़ताके साथ कार्य करने और निष्फलता मिलने पर उसे सहन कर लेनेका निश्चय करो। त्रिशंकु मनुष्य इस संसारमें कुछ भला नहीं कर सके। प्रकृतिका यही अटक नियम है। हमारे कार्योंका परिणाम हमारे हाथमें है।

हम जिसे सज्जनता अथवा सद्गुण कहते हैं अर्थात् नैतिक दृष्टिसे उत्तमसे उत्तम आचरण कहते हैं, उसमें ऐसा वर्तन संमिलित है कि वह सांसारिक जीवन विजय प्राप्त करनेवाली वस्तुओंसे सर्वथा भिन्न है। अनुचित आत्म शंसा (अपनी प्रशंसा) के बदले वह वर्तन आत्म संयमकी अपेक्षा रखता है। स्पर्धा करनेवाले मनुष्योंको वह एक किनारे रखने अथवा उनको दमन करनेके बदले वह इस प्रकारकी इच्छा रखता है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपने बन्धु समान सन्मानित करें, इतना ही नहीं किन्तु उनकी पूर्ण सहायता करें, वह किसीके संबंध या परिचयसे लाभ नहीं उठाता है किंतु अनेक मनुष्योंको जीवित रहनेमें प्रयत्न करता है। वह जीवन कलहके सिद्धान्तोंको धिक्कारता है, वह चाहता है कि जो प्रत्येक मनुष्य समाजमें रहकर लाभ प्राप्त कर सका है वह उसके प्राप्त करनेमें परिश्रम करनेवाले मनुष्योंके ऋणका सदैव स्मरण रखता है। वह इस बातसे सदैव सावधान रहता है कि समाज बंधनका तार किसीप्रकार टूट न जाय।

कायदा कानून और नीतिके उपदेश अपराधियोंको दमन करनेके लिये हैं और वे समाजके प्रत्येक व्यक्तिको अपने कर्त्तव्य-का स्मरण कराते हैं जिससे वह सबको संरक्षित रखता है और पशुओंके जीवनका कष्ट दूर कर सका है। टी० एच० हक्सिल।

सुवर्ण दानकी अपेक्षा मिष्ट वचन कभी कभी अधिक मूल्यवान होते हैं। एक मृदु हंसीसे ही चिरकालसे दुःखित हृदयको मुक्त किया जा सक्ता है। एल० एम० होजीज़।

प्रगतिशील जगतमें प्रवेशकर, सदाचरणसे भाग्यशाली हो, उससे प्रेम रख, उसमें ही आनंद मान। प्रेमके साथ उसके पालन करनेमें सुख दुःखका विचार मतकर। जीवमात्रको पवित्र सदाचारी और श्रेष्ठ बनानेमें लीन रह। जीवमात्रकी भलाईके लिये कार्यकर ऐसा करनेसे तू उनपर एक राजासे भी अधिक सत्ता रखनेका अनुभव करेगा। ब्रूक हर्फोर्ड।

सत्कार्य करनेकी शक्ति अधिकतर उत्तम वृत्ति और सदाचारमें ही रहती है। परोपकारके लिये निकली हुई एक श्वास भी एक प्रकारका सत्कार्य है। हार्वे।

परोपकार करनेमें प्रफुल्लता एक महत्व पदार्थके समान है। जैसे जैसे हम उसको व्यय करते हैं वैसे वैसे हम अधिक संपत्तिशाली होते हैं। वी० ह्यूगो।

प्रेमके साथ सत्य कहना, बुद्धिमानी और नम्रताके साथ वर्ताव करना, ये दोनों ऐसे गुण हैं कि इनको भलीप्रकारसे प्राप्त करनेके लिये यदि अपना सारा जीवन व्यतीत होता हो तो होने दो। यदि तुम्हें बुद्धिमानी और सहानुभूतिके पलड़े समतोल रखने हैं तो इन गुणोंको विकसित करनेमें सतत् प्रयत्नशील बने रहो। ऐलिस हॉप्कीन्स।

अपने साधनों—शक्तियोंके अनुसार उदार बनो, नहीं तो

स्मरण रखो कि तुम्हारी उदारताके परिमाणमें ही तुमको साधन प्राप्त होंगे। 　　　　जॉन हॉल।

जिस प्रकार वृक्षोंके लिये पत्तियोंकी आवश्यकता है उसी प्रकार सहानुभूति प्रदर्शन करनेके लिये एक व अधिक बाह्य चिन्होंकी भी आवश्यकता है। यदि उनको सदा रोक लिया जायगा तो प्रेम जड़से नष्ट होजायगा। 　　　　हॉथोर्न।

एक भी परोपकारके निःस्वार्थ सत्कार्यसे तेरे जीवनका स्रोत प्रेमकी मधुरताका अनुभव करेगा तथा वह एक ऐसा कार्य है कि जिसका शुभ परिणाम तुझमें जीवनभर स्थिर रहेगा। हॉल्म्स।

अपने स्वार्थको सिद्धकर दूसरोंका प्रिय बनना सहज कार्य है परन्तु दूसरोंके लिये अपने स्वार्थका त्याग कर देना कठिनतर कार्य है। सच पूछो तो वही अपने उद्देश और आदर्शताकी कठिन परीक्षा है। 　　　　ओ० प्रेस्कॉट हिलर।

जो स्त्री पुरुष निंदा करनेके बदले प्रोत्साहन देते हैं वे ही जगतको उन्नति—पथपर ले जाते हैं। 　　　　ऐलिझावेथ, हॅरिसन।

जो दूसरोंके लिये निष्कपट उदार है वहीं सच्चा बुद्धिमान और सुखी है। और जो दूसरोंके लिये उदार और सहानुभूति-दर्शक नहीं है वही मूर्ख और दुःखी है। 　　　　होम।

तुमसे हो सके तो भिक्षा दो। यदि भिक्षा देनेकी तुममें शक्ति न हो तो मीठे शब्दोंसे बातचीत तो अवश्य करो।

हेरिक।

सच्चा विश्वप्रेमी वह हो सक्ता है जो दान करनेके लिये धन संग्रह करनेकी अपेक्षा जीवोंके दुःखमात्रको दूर करनेके कारण-

भूत सद्‌गुणोंका भंडार भरनेमें लवलीन रहे वही मनुष्य उन सद्‌गुणोंसे सब जीवोंके हृदयमें गुप्त रीतिसे दिव्यभण्डार भरता है, उनको सुखशांतिसे पूर्ण करता है। हालै।

सुख और आनंद देना, दुःखमें आश्वासन देना, और अनाथोंको आश्रय देना, ये सब कार्य परोपकारी मनुष्य अहो रात्रि प्रेमसे करते हैं। डब्ल्यु० डब्ल्यु० हाऊ।

सत्कार्य चाहे जितना छोटा हो तो भी करो। चाहे जैसी साधारण आशाके लिये कार्य करो, कार्य करो। क्योंकि सब ही सत्कार्य पवित्र और उन्नत होते हैं। न्यूमेन हॉल।

तुम भले होनेकी आशा रखते हो, वह भलाई क्या वस्तु है? वह ऐसी दिव्यता है जो स्वयं आत्माका संक्षिप्त रूप है, अंग है, अंश है। इसलिये भलाई करना आत्माको परमात्मा बनानेके रूप है, कारणभूत है। जितने परिमाणमें हमारी आत्मामें परमात्माके गुणोंका विकाश होता है उतने ही परिमाणमें हम भला करते हैं। हम जितने परिमाणमें भले बनेंगे उतने ही परिमाणमें परमात्माके गुणोंका विकाश हमारी आत्मामें होगा। अहा! कैसा अच्छा अवसर है?। ह्यू प्राइस ह्यूजिज।

सच्चा विनयशील मनुष्य स्वार्थ त्यागके छोटे छोटे सत्कार्य करनेमें आनंद मानता है। वह अपनी महत्वाकांक्षाके लिये या बड़ बननेके लिये और कीर्ति प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिये बड़े २ कार्योंको उत्तम नहीं मानता है। वह सत्कार्यकर जनताको ऋणी नहीं बनाता किन्तु सरल स्वभावसे प्रेमका उपयोग करता है।

पी० जी० हॅमर्टन।

सामाजिक सेवाके नियम मनुष्योंको ऐसे व्यवहारके लिये आशा रखते हैं जिससे जनसमूहको सुख मिले न कि दुःख, वे सुमार्गगामी होना चाहते हैं । एन० डी० हिलिस ।

सर्वदा मीठे और प्यारे वचन बोलो, यदि ठीक समय पर उनका उच्चार किया गया हो तो वे दुःखपूर्ण हृदयमें बिजलीके समान तत्काल प्रवेश कर जाते हैं जिससे उनका दुःख सब विस्मरण हो जाता है । आर्थर हेल्प्स ।

जो बुद्धिमान पुरुष अपना जीवन अपने लिये तथा दूसरोंके लिये उपयोगी और आनंदप्रद बनाना चाहता हो तो उसे प्रत्येक स्थानसे उपयोगी अनुभव प्राप्त करना, अपने बन्धुगणोंसे प्रियवचन बोलना, और सहायताकी इच्छा रखनेवाले मनुष्योंके साथ सप्रेम कार्य करना चाहिये । यदि तुम ऐसा करोगे तो जिस प्रकार नदी समुद्रके समीप अति विस्तारवाली होकर अंतिम समुद्रमें मिल जाती हैं, उसी प्रकार मनुष्यका जीवन जैसे २ कार्यक्षेत्रमें आगे आगे बढ़ता है वैसे २ अधिक उन्नत और सुंदर बनता है और मुक्त होनेके पूर्व सर्व जीवमात्रके साथ प्रेम, और उनके शुभ भावोंको अपनी तरफ आकर्षित करता है ।

नॅचवुल हुजीसेन।

बिना किसी दिखावटके अपने दयाके कार्य होने चाहिये । अपने दाहिने हाथसे किये हुये कार्य बायें हाथको न जानने देना चाहिये । इन ख्रीस्ती वचनोंका यह अर्थ है कि अपने किये हुए परोपकारके कार्य दूसरोंसे गुप्त रखना चाहिये । इतना ही नहीं किंतु उनका स्मरण स्वयं न करना चाहिये । आर० एफ० हार्टन।

सचमुच अधिक दयाके पात्र वे हैं जो अपनेको अंकुशमें नहीं रख सकते, अपनी इच्छाके अनुसार कुछ भी कार्य नहीं कर सकते। यदि वे कचित् सत्कार्य करें भी तो स्वार्थ बुद्धिसे अथवा किसी दण्डसे बचनेके अभिप्रायसे या लोकनिंदाके भयसे कार्य करते हैं।

जिस समय सद्गुणोंके पवित्र कर्त्तव्यकी भावनासे अथवा सद्गुण मात्रसे जब व्यवहार होता है उसी समय सच्ची उच्चताका प्रादुर्भाव होता है। यदि हम इस नीतिका अवलंबन करें तो हमारे प्रत्येक व्यवहारमें उत्तम प्रभाव पड़ सक्ता है।

विल्हेल्म वॉन हम्बॉल्ट।

सत्य पूछो तो प्रेम, बहुत ही निराली वस्तु है। वह पूर्ण त्यागरूप है। प्रेमका आत्मा त्याग है। सामान्यसे वह "दूसरोंके लिये विचार करना" इसी अर्थको द्योतित करता है। वह स्वार्थके बदले परार्थ आगे रखता है। निःसंदेह प्रेम अपूर्व प्रेरणा करता है परन्तु विशुद्ध प्रेम उच्च कक्षाके कार्योंको कर दिखाता है।

ऐच० आर० हॉवर्स।

यह बात सदैव ध्यानमें रखना चाहिये कि प्रत्येक मनुष्योंको सुख--दुखका प्रसंग हमारे व्यवहार पर निर्धारित है। एक सुधरे हुए कुटंबका असर समस्त जनता पर होता है।

हमारा जीवन बड़ी बड़ी घटनाओंमें उपयोग करनेके लिये नहीं किंतु क्षणक्षणमें होनेवाले छोटे छोटे कार्योंके लिये है। स्मरण रखो यदि मनुष्य चाहे तो ऐसे अनंत क्षण जनताकी शांति, सुखकी प्राप्ति और आनंदमें व्यतीत करसक्ता है और

मानव जातिका कल्याण क्षण कहला सक्ता है। इसलिये तुम स्वयं शांत बनों, प्रसन्न रहो, और प्रमाणिक रीतिसे व्यवहार करो।

ली० हन्ट।

कारण ही कार्यको भला या बुरा बना सकते हैं। बाहरसे कार्य चाहे जैसा सुंदर माल्म पड़ता हो परंतु उसमें विशुद्ध हेतुओं (कारण)की कमी होगी तो वह अवश्य पोलंपोल रूप होगा। यदि अपना हेतु दुष्ट है तो अपने कार्य दुष्ट ही होंगे। यदि हृदयमें प्रेम भाव न हो तो तुम्हारी बाह्य दिखावट थोड़ेसे समयमें मलीन हो जायगी।

ऑगस्टस हेर।

संसारमें जितनी हो सके उतनी सेवा करना ही उत्तम पुरुष बननेका मार्ग है। अपने विशुद्ध हृदयमें होनेवाले सद्विचार, पुराण और इतिहासमें वर्णित महात्मागण अथवा अवतार धारण करनेवाले महापुरुष, उनके महाकार्य, और उनके कहे हुए महा-वाक्य, ये सब परमात्माके चरित्रकी तरफ लक्ष करानेवाले है।

बेंजामिन जॉवेट।

प्रत्येक मनुष्य अपनी शक्तिके अनुसार ही कार्य करनेको बाध्य है।

जी० हेमिल्टन।

जिस समय कुछ भी प्रदान करो वह अति उत्साह और आनंदसे दो। जब जब हो सके, तब तब सत्कार्य करो। सर्वदा सत्कार्यमें लवलीन रहो, क्योंकि तुमारे कर्त्तव्य वे ही हैं।

मनुष्य मनुष्यके साथ जैसे जैसे गाढ़ और दृढ़ संबंधके कार्य करता है वैसे २ ही वह अधिक सुखी और आनंदी बनता जाता है।

जुबर्ट।

मनुष्योंके सर्वकर्त्तव्य मात्र धन कमानेमें ही पूरे नहीं होजाते हैं किन्तु मनुष्य जीवनका सबसे मुख्य और आवश्यकीय कर्त्तव्य **सद्वृत्तियोंका विकास** करना है ।

अनेक दुःखी मनुष्योंके लिये आशाप्रद वाक्य, और दुःखके समय दया ये दोनों बहुत ही सुखप्रद हैं, क्योंकि इससे वह यह समझता है कि मेरे बुरे दिनोंमें भी सहानुभूति प्रदर्शक महात्मा हैं । दवी भाग्य इसकी सुचना करता है । हमारी आत्मा ऐसी दया करनेके लिये आदेश करती है कि हे मानव ! यदि तुझसे और कुछ न होसके तो तुम दुःखसे रोनेवालेके साथ रोकर दुःखमें समभागी बनो—समवेदना प्रकट करो । जीवनके कर्त्तव्योंको सद्वृत्तिसे विकसित करना, परमआवश्यक भाग है । जॉन्सन ।

यदि किसी मनुष्यने किसीकी हानि की हो, और उसका प्रत्यक्ष बदला देनेके पूर्व ही वह मरगया हो तो हानि करनेवालेको चाहिये कि सारे जगतको उसका उत्तराधिकारी समझे । और उस अन्यायका प्रायश्चित करे । अपने संसर्गमें आनेवाले प्रत्येक मनुष्यके साथ उसे प्रेम भाव प्रदर्शित करना चाहिये, और मधुरता से भरे प्यारे वचन कहना चाहिये । उसे स्नेह और सेवाके कार्य करना चाहिये । ऐसा करनेसे वह अपने किये हुये अन्यायका ऋण (बदला) वि को लौटा सक्ता है ।

दूसरोंकी टीका टिप्पणी करनेकी वृत्तिके वश होनेके पूर्व बहुत ही सावधानी और उदारता रखनी चाहिये । दूसरोंके दोषोंको ढूंढनेकी अपेक्षा दूसरोंके सद्गुणोंके खोज करनेका प्रयत्न चाहिये ।

दूसरोंके किये हुए छोटे २ सत्कार्योंको बड़ा स्वरूप देना

चाहिये, उनको उत्साहित करना ही महात्माओंका गुण है। यदि हम सच्चा मनुष्यत्व-सच्ची महत्ता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें दूसरोंका 'काजी' बननेका व्रत लेना चाहिये।

यदि हम जगतमें सत्कार्य करना चाहते हैं तो हमें मानव जातिसे प्रेम करना प्रारम्भ करदेना चाहिये। यद्यपि एक मनुष्यकी दूसरे मनुष्यसे प्रकृति भिन्न है तथापि वे सब एक सूत्र से संबधिय हैं ऐसा अनुभव करना चाहिये। एक दूसरेको परस्पर भ्रातृप्रेम रूपी शृंखलासे संबन्ध है। यदि तुमको इसका पूर्ण अनुभव होगा तो तुम द्वेष-ईर्षा-कटु वाक्य, निर्दयता और अन्यायसे मुक्त हो जाओगे और प्रेमप्रवाहमें चमकने लगोगे।

सची उदारता धर्मादाकी सन्दूक भरनेमें अथवा अमुक रकमकी एक हुंडी लिख देनेमें परिपुर्ण नहीं होती, किन्तु गरीबों-को अन्न, नंगेको वस्त्र और संस्थाओंको द्रव्य दान ये सब सच्चे परोपकार सीखनेके 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' ही है—परोपकार करनेकी प्रथम पट्टी है। सच्ची उदारता तो इससे कहीं अधिक उच्चतर रीतिसे है। वह उदारता पामर और नीच मनुष्योंमें तथा अज्ञानी मनुष्योंमें नीति और ज्ञानकी प्रेरणा करती है। जीवनकी विकट घड़ियोंको सरल और सुखमयी बनाती है, मनुष्योंके किये हुए पाप-कर्म द्वेषसे नहीं किंतु अज्ञानतासे हुए हैं ऐसा बोध कराती है, प्रेमपिपासुओंकी प्यास बुझाती है, जीवनयात्रामें आनेवाले विघ्नोंको दूर करनेमें सहायता प्रदान करती है और मनुष्यकी निर्बलता नष्ट करती है। इस सब कथनका इतना ही अर्थ है कि **तू दूसरोंका काजी न बन।**

विलयम जॉर्ज जार्डन।

मानव जीवनपर पुष्पवृष्टिकर। प्रत्येक क्षणको आनंद-दायक समझ। आत्माको उन्नत कर। हृदयसे सद्भावोंको विस्तृत कर और जीवोंको सुखीकर। रीचर्ड जेफेरीज।

गरीबसे गरीबके हाथमें कुछ भेंट करनेसे जैसी आत्मा प्रसन्न होती है वैसी और किसीसे नहीं। वह आत्माकी प्यारी सहायता है और उसके साथ किया हुआ प्रेम सुवर्णसे भी अधिक मूल्यवान है। किसी दुःखी मनुष्यका सारा दिन एक मृदु हास्यसे सहज आनंदमें कट जाता है और आशा रहित मनुष्योंका हृदय एकाध प्यारे और हितकारी शब्दोंसे आशावान होजाता है इसलिये यदि तुम्हारे हृदयमें विशुद्ध प्रेम उछल रहा हो तो किसी भी गरीबको यह मत कहो कि 'मेरे पास देनेके लिये कुछ नहीं है'। मेरी रोल्स जार्विस।

एक सत्कार्य भी ऐसे बीजरूप है कि जो मालूम हुए बिना ही वह ऊग उठता है। स्मरण रखो कि जिस समय कोई भी उसकी ओर ध्यान नहीं देता उस समय वह एक नवीन पौधेके समान मालूम होता है।

महान् लेखकोंके ग्रन्थोंसे और उत्तम पुस्तकालयसे अथवा दिग्गज विद्वानोंसे मुखसे जो उपदेश मिलता है उससे कहीं अधिक स्नेहदृष्टि—प्रेमदृष्टिसे उपदेश मिल सक्ता है। पवित्र

---

१ जीवनको उपयोगी बनानेके लिये सत्कार्य करना मानवीय धर्म है। सब जीवोंको आत्म समान समझना आत्म—धर्म है।

दुःखोंसे मुक्त करना विचार धर्म है। सबका सन्मान करना विवेक—धर्म है। परलोकसे भय करना आस्तिक्य—धर्म है।

अंतःकरणसे दी हुई गरीबके घरकी थोडी और रूखी सूखी भिक्षा भी,कवापक्षीके पंख समान है जो उडकर स्वर्गके द्वार पर्यन्त उसकी महत्ता दिखाता है । ए० एन० ऑप ।

इस लोक तथा परलोकमें प्रेमकी अपेक्षा मधुर साहस, उच्च-तर आनंद और उत्तम कोई वस्तु नहीं है क्योंकि वह प्रेम आत्मासे उत्पन्न हुआ है । और आत्माके सिवाय वह अन्यत्र नहीं रहता ।

मनुष्य परिणामका विचार करता है, परंतु प्रकृति हेतुका विचार करती है ।

हमको एक दूसरेका बोझ उठानेके लिये अनेक अवसर प्राप्त होते हैं । संसारमें एक भी मनुष्य निर्दोष नहीं है और एक भी मनुष्य इतना महान नहीं है जो सर्वदा सुखी हो—कोई भी मनुष्य चिन्ता रहित नहीं है । एवं कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो दूसरोंकी सहायताकी अपेक्षा नहीं रखता हो । कोई भी मनुष्य ऐसा बुद्धिमान नहीं है जो दूसरोंकी कभी सलाह न लेता हो । इसलिये मनुष्योंको विचारना चाहिये कि उनका जीवन एक दूसरेको परस्पर सुख देनेमें—दुःखोंसे मुक्त करनेमें, ज्ञान दान करनेमें, दया पालन करनेमें और प्रेमसे सत्कार्य करनेमें बाध्य है।

टोमस ए० केम्पिस ।

जो मनुष्य अतिशय धन संग्रह करनेकी लालसामें व्यग्र नहीं होता है वही अपने जीवनको सजीवन रखना सीखता है । जब तुम शोकमें क्षुपित हो तब प्रसन्न होनेका उत्तमसे उत्तम मार्ग यह है कि बाहर जाकर किसी दूसरेकी भलाई करो ।

जे० केबल ।

मधुर कन्यके! केवलज्ञानसे ही **होशियार** बननेकी जिनको इच्छा है उनको भले ही बनने दे, परन्तु तू तो **'सदा-चारिणी'** ही हो। अहर्निश सत्कार्यके केवल स्वप्न मत ला किन्तु उन स्वप्नोंको सदाचरणके अमलमें रख कार्यसे प्रकाशित कर। ऐसा करनेसे ही तू अपने ऐहिक जीवनको, मृत्यु और शाश्वतजीवनका शास्त्रार्थ (विवाद) एक दिव्य मधुरगानसे सुनकर अपना शाश्वत जीवन बना लेगी।

जिस प्रकार सुशील और परोपकारिणी स्त्री प्रत्येक स्त्रीका सहबास कर उनके साथ अपना कर्तव्य पालन करती है, ठीक तुम भी उसीप्रकार अपनी इच्छासे हरएक अवसरपर सबको मिलो, उनके साथ सहवास करो, गरीब स्त्रियोंको बहिनके भावसे अत्यंत प्रेमपूर्वक मिलो। धैर्य और उनके सन्मानपूर्वक उनकी कठिनाइयोंको जान-नेका प्रयास करो इससे वे भी तुम्हारी सलाह—उपाय और सेवाका करना सीखेंगी।

परोपकारके साथ अपना स्वार्थ (कीर्ति, द्रव्य, प्रतिष्ठा और ख्याति) के गुप्त उद्देशसे किसी एक महान प्रसिद्ध कार्यमें भाग लेना उसकी अपेक्षा साधारण छोटे२ कार्य अपने घरमें रहकर ही वास्तविक कार्य रूपमें करना अधिक उत्तम है। सच्ची निस्वार्थता लौकिक बदलेकी चाहना नहीं करती है।

आज मैंने "एक मनुष्यको कुछ अधिक होशियार, कुछ अधिक सुखी अथवा विशेष सच्चरित्र बनाये विना कभी मत सोओ" इस प्रकार नियम करो, और उस नियमका पालन करनेके लिये

परमात्मासे प्रार्थना करो । यह नीति तुम जिस रीतिसे चलाना चाहते हो उसकी अपेक्षा यथार्थमें अधिक उपयोगी और आनंदप्रद है ।

उत्तम मनुष्य दान देते हैं, परन्तु लेते नहीं । सेवा करते हैं परन्तु आज्ञा प्रदर्शित नहीं करते रक्षण करते हैं, परन्तु भक्षण नहीं । सहायता अवश्य करते हैं परन्तु अभिमानी नहीं होते तथा आवश्यकता पड़नेपर जीनेकी अपेक्षा मरना अधिक पसंद करते हैं ।

चार्ल्स किंग्स्ली ।

परोपकार करना भी एक अपना कर्तव्य है । जो इसको अपनी शुद्ध भावनासे आचरण करता है और अपनी शुभेच्छाको सफल होना देखना चाहता है वह थोडेसे समयमें ही देख सक्ता है कि जिसका हमने उपकार किया है वह भी हमको पवित्र अंतःकरणसे चाहता है । केन्ट ।

हरएक मनुष्य अपने सहवासमें आनेवाले मनुष्योंका सहृदयता और मीठे वचनोंसे कितना भलाकर सक्ता है और करता है । हम भी अपने संसर्गमें आनेवाले मनुष्योंके प्रति (अदृश्यरूपमें अनजान अवस्थामें) अथवा उनके देखते हुए भी जो कुछ भलाबुरा व्यवहार करते हैं, बोलते हैं, वह उसके संयोगमें अथवा वियोगके प्रसंगमें अभिनंदन प्रदान करता यह सब बातोंकी जवाबदारीका फल अपने ही ऊपर है । एफ० ए० केम्बल।

दूसरोंको अन्न, वस्त्र, पैसा, रत्न, पुस्तकें, औषधी और शुभ सलाह यदि हम देसक्तें हैं, तो ही समझना चाहिये कि हमने कुछ किया ? इतना ही नहीं किन्तु इन सब वस्तुओंकी अपेक्षा सच्चे प्रेमका प्रदान करना अमूल्य दान है । दूसरी ऐसी कोई भी

चीज नहीं है जो इस प्रेमकी तुलना करसके। एक सच्चा प्रेम ही सर्वोपरि है--प्रेमकी महत्ता सर्वोत्कृष्ट है। एम० कन्डोल।

घृणित, दुर्गंधित, भयावने, और जहांपर जाते ही चित्त एकदम ऊब उठे ऐसे गरीब मनुष्योंके झोंपडे और उनकी सड़ी हुई दुर्गंधित गलियोंमें जाकर दुःखसे जर्जरित दीन दुखियोंके जीवनमें मृदु हास्यसे, मीठे वचनोंसे और सत्कृत्योंसे सुख और आनंद मिले इस प्रकार करनेका अभिमान रखिये।

तुमने प्रेम किया और व्यर्थ हुआ ऐसा कभी मत कहो। सच्चा प्रेम कभी भी व्यर्थ नहीं होता। यदि कदाचित् उस प्रेमसे दूसरेका मन प्रफुल्लित न हो सका तो वह प्रेम पाणिवृष्टिके समान पीछा वापिस आकर जिसने प्रेम किया है उसको तो परम आनंद करता ही है। फुवारेसे जो पानी ऊपर उडता है वही फुवारेकी तरफ पीछे आता है। दिवस अस्त होता हुआ दिखाई दे रहा है, हे आत्मन्! उसके उदयसे अस्त तक तूने कौनसे सत्कार्य करके अपनी कर्तव्यता पूरी की?

'प्रेम' अत्यन्त गरम बरानकोट--(Over coat)की अपेक्षा शीतको बहुत ही सहज रीतिसे दूर कर सक्ता है। सच्चा प्रेम अन्न--पानीकी अभिलाषाकी भी अपेक्षा नहीं करता किंतु उसकी कमीको भी दूर करता है।

जिन मनुष्योंके भाषण प्रतिदिनकी आवश्यकताओंमें सहायभूत होते हैं और कुमार्गसे बचाकर सन्मार्गमें उपस्थित कर देते हैं उनका सन्मान करो।

पर्वतोंकी शिखरोंसे प्रस्रवित होनेवाले छोटे छोटे झरने ऐसा नहीं कह सक्ते कि हम स्वयं नदी नहीं होनेसे क्या समुद्रको कुछ दे सक्ते हैं ? किन्तु उन अल्प झरनोंका ही जल नदी द्वारा समुद्रमें जाता है। ठीक इसी प्रकार कैसा ही गरीबसे गरीब मनुष्य क्यों न हो, परन्तु वह भी ऐसा नहीं कह सक्ता कि इस विशाल भूमंडलमें मेरे पास देनेको कुछ भी नहीं है। एक कौड़ी भी जिनके पास नहीं है ऐसे अनेक साधु पुरुषोंके जीवन स्पष्ट यह कह रहे हैं कि विलकुल निर्धन पुरुष भी इतनी उदार सहायता जनसमाजको कर सक्ते हैं कि वह अपनी कल्पनामें भी नहीं आसक्ती है।

यदि परमात्माके समक्ष कुछ भी प्रेम रखसक्ते हो तो अपने बन्धुओंके प्रति प्रेम करे विना तुम रह ही नहीं सक्ते। प्रत्येक व्यक्ति परमात्म रूप ही है ऐसा क्या तुम नहीं जानते ? परमात्माके अवर्णनीय महान गुण क्या तुममें नहीं है ? क्या तुम्हारी आत्मा और त्रिजगतप्रभु ईश्वर (परमात्मा) की आत्मामें समान शक्ति नहीं है ? जो तुमको सन्मार्ग प्रदर्शन कराते है क्या वे अन्यको नहीं ? यदि यह बात अभी तक तुमने नहीं समझी है तो कहना चाहिये कि तुमको परमात्मा होनेकी इच्छा नहीं हुई है, और न तुम्हारा उसमें प्रेम ही है।

तुम अपने अपराधी बन्धुओंका अनिष्ट मत चाहो। उनके दोष दूसरोंके समक्ष प्रकाशित मत करो, यदि कदाचित् कहना ही हो तो उनको ही स्वयं कहो, वह भी माताके समान अतिशय प्रेम पूर्वक और सेवकके समान अत्यन्त नम्रतासे कहो। स्मरण

रखना चाहिये कि प्रेममें ही सर्वश्रेष्ठ फल समर्पित है और है भी ऐसा ही इस लिये ही हम प्रेमको सबसे महान वस्तुके समान समझते हैं। और दूसरोंके पाससे उसको तभी तो चाहते हैं।

संसारका थोडा या बहुत मुझे अनुभव है इस लिये ही मैं मनुष्योंके दोषोंको देखक क्रोध नहीं करता हूं, परन्तु पश्चाताप तो अवश्य ही करता हूं। जब मैं एक पापसे पीडित दुःखी मनुष्यके हृदयकी अवस्था देखता हूं तब उसके क्षणिक आनंदका स्रोत, आशा और भयसे उत्पन्न हुई तीव्र अशांति एवं दरिद्रताका असह्य भार, मित्रोंका परित्याग और मानसिक भावनाओंकी चंचलता आदि जिन कारणोंमें होकर वह निकला है उनका तथा उसके प्रलोभनकी दशाका हूबहू चित्र मेरे मनके आगे खड़ा हो जाता है और उसी समय मुझे यह स्मरण होता है, कि न जाने पूर्व जन्ममें इसने कौनसा महान पुन्य किया है, जिससे इसको दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है। किन्तु हाय! यह अब भी अपने कर्तव्योंसे पराङ्मुख है—दुर है। इसको मनुष्य जन्मकी महिमाका ज्ञान ही नहीं है। ऐसा स्मरण होते ही मेरा मन दयासे आद्रित होजाता है और परोपकार करनेमें अधिकाअधिक प्रोत्साहित होता है इसलिये हम सबको परमपूज्य परमात्मासे यह प्रार्थना करनी चाहिये कि हे प्रभो! तू हम सबको आनंदित कर और सुखी देख।

एम० डब्ल्यू० लोनगफेलो।

बाल्य अवस्था तथा कुमार अवस्थामें ध्यानपूर्वक नीति मार्गका अभ्यास करना ही सबसे सरल और सुगम उपाय है जो कि जवानीमें होनेवाली भयंकर अनीतियोंसे बचा सके, इससे ही कुछ

आशा होती है। इस लिये विशेष कुछ न होसके तो इतना तो अवश्य करना चाहिये कि जिससे युवावस्थामें बिलकुल निराशा तो न हो, इस बातका ध्यान अवश्य ही बचपनसे रखना चाहिये। जो 'मनुष्योंके कर्तव्य' और 'परमात्माकी भक्ति' संबधी समुचित शिक्षा बाल्यावस्थामें न दी जाय तो समझना चाहिये कि ऐसे मनुष्यका जीवन अवश्य ही दुःखमय होगा।

मानवजातिका उद्धार उनकी बाह्य स्थिति बदलनेसे नहीं होता, किन्तु उनके मनकी पवित्रता और सदाचरणसे होता है– उनको मानसिक शिक्षा मिलना चाहिये, उनकी शुभेच्छायें दृढ़ होनी चाहिये, उनका हृदय सतेज होना चाहिये, उनके सच्चे प्रेमकी लहरी विकसित होनी चाहिये और उनके जीवनकी प्रत्येक शक्ति सत्कार्योंमें प्रवृत्त होजाय–आचरण करनेलगजाय इस प्रकारकी शिक्षा मिलनी चाहिये। ऐसी शुभ वासना नैतिक साधन, अनिंद्य शिक्षण, गृहसंस्कार और धार्मिक ज्ञानसे ही होसकेगी, यह स्पष्ट है।

प्रमाणीक श्रीमन्ताई, प्रमाणिक व्यवसाय–प्रमाणिक व्यवहार और प्रमाणिक नौकर चाकर तथा मजूरोंका मूल्य वा वेतन हो तो संसारके दुःख और भिक्षावृत्ति बिलकुल कम होजाय।

---

१ कुछ साधारण पढे लिखे मनुष्य-धार्मिक शिक्षाका महात्म्य कुछ भी नहीं समझते हैं, परंतु यह स्मरण रखना चाहिये कि शिशुओंके कोमल हृदयमें यह शिक्षा बालकोंकी शुभ वृत्तियोंको सुदृढ बनाती है और सदाचरणका अभ्यास कराती है–आदर्श जीवन बना देती है। इसी प्रकार जाति (गृह) संस्कारका भी गहरा असर बालकोंकी मनोभावनापर अंकित होता है।

उदारतासे निराश हुए मनुष्योंको आशाका संचार होता है, नंगेको वस्त्र मिलते हैं, क्षुधातुरको अन्न, गृह विहीनको घर और रोगीको रोगकी औषधि मिलती है, यद्यपि यह बात सत्य है, तथापि न्यायसे भी निराशा दूर होसक्ती है और भूख तथा दरिद्रतासे बच सक्ते हैं। क्योंकि न्याय रहित उदारतामें इतना चमत्कार है तो सच्चे न्यायमें कितनी महान उदारता होगी यह अनुमानके भी गम्य नहीं है।

यदि सहज विवेकका उपयोग किया जाय तो दान करनेकी आवश्यकता नहीं रहे। और आलसी मनुष्य अपना मुख देखते ही लज्जित हो जांय। निराश्रित मनुष्योंको धंधेमें लगा देनेके लिये विशेष द्रव्यकी आवश्यकता नहीं होती है। इससे ही उनकी बहुतसी चिन्तायें स्वयमेव कुछ कम हो जायंगी और गरीब मनुष्योंको सुख और संतोष मिलेगा।

यदि मानव जातिका विशेष सहवास समभाव दृष्टिसे एकसा किया जाय तो निम्नश्रेणीके मनुष्योंकी आवश्यकतायें और उनके जीवनकी उपयोगिता हम अच्छी तरह सीख सक्ते हैं। अपनी यह शुभेच्छा विकसित करनी ही चाहिये और यह सोचना चाहिये कि बंधुओंकी सेवा करे विना अपना निर्वाह ही नहीं होगा—बंधुसेवा अनिवार्य है। अपनेमें कोई ऐसा गरीब नहीं है जो अपने बन्धुओंकी स्वतंत्रताकी रक्षा करनेके लिये सहाय न कर सके और उनकी आबादी न बढ़ा सके।

प्रत्येक दिन कमसे कम एक तो अवश्य ही परोपकारका काम करना चाहिये। जो अत्यन्त तुच्छ वस्तुको दूसरोंको देनेमें हिचकता है वह मनुष्य उस वस्तुसे भी हलका है।

जो दूसरोंके सत्कार्योंसे आनंदित नहीं होता है वह सच-मुच सत्कार्य करनेके लिये अयोग्य है।

तुम्हारे उत्तमसे उत्तम मित्र तुमको जितना अच्छा समझते हैं उससे कहीं अधिक अच्छे तुम नहीं हो तो समझना चाहिये कि तुम बहुत अच्छे नहीं हो।

प्रदान की हुई चीजकी जाति, उसका मूल्य, उसका द्रव्य, उसका प्रभाव और जिस प्रकार वह चीज मिली है इत्यादिसे दाताकी महत्ता और नीचता स्पष्टता दिखाई देती है।

अपने भाइयोंको आनंदित और सुखी देखकर यदि तुम्हें आनंद होता है और उनको दुःखी देखकर दुःख होता है तो तुम स्वयं अपनी सहृदयताको साबित कर सके हो।

प्रदान की हुई चीजकी अपेक्षा दान देनेकी रीति और दाताकी वृत्ति (भाव) विशेष स्पष्ट कर देती है कि दानपद्धति

---

१ बहुतसे मनुष्य भिखारीको भीख भी देंगे तो प्रथम या तो उसको दो चार बातें सुना देंगे या उसके शिरपर थप्पड मारकर देंगे, ऐसे बुरे भावोंसे दान करनेकी अपेक्षा न देना ही अच्छा है। दान देते समय नम्र होना चाहिये, मधुर और स्मित बोलना चाहिये, अति-थिका पूर्ण सत्कार कर दान देना चाहिये। ऐसा करनेसे ही हमारी आभ्यंत्तर वृत्तियोंमें आनंद प्रस्रवन होने लगता है। सच है विधि, द्रव्य, दातृभाव पात्र विशेषात् तत्फलेषु विशेषः।

और दान स्वीकार ये दोनों ही कितने महत्वके चिन्ह हैं—आदर्श रीति हैं।

आत्मोन्नति किसमें है? मनुष्योंके प्रति विशुद्ध हृदयसे अल्पसाधन होने पर भी विशेष भलाई करनेसे—हित साधना करनेसे और सुदृढ़तासे नम्रता पूर्वक परोपकार करनेसे ही आत्मोन्नति होती है। लेवेटर

मनुष्योंके सुख दुःखोंमें भागलेनेसे ही अपने अंतःकरणकी प्रेमवासना व्यक्त होती है न कि कुछ देनेलेनेसे। जिसदानमें दाता स्वयं शामिल नहीं होता है वह दान कोरा दान ही है-शुष्क दान है।

सुखके बीज कितने सस्ते हैं वह हमको मालूम नहीं है, जो मालूम होता तो कितने बोये होते?

जो दुःख अपने प्रियबंधुगण सहन कर रहे हैं उस दुःखका कुछ हिस्सा हमने लिया होता तो हमें पूर्ण विश्वास है कि वे अवश्य दुःखसे मुक्त हो जाते और ऐसा करनेमें श्रेय हमको ही प्राप्त होता।

हाथसे पकडकर दे सक ऐसी स्थूल वस्तुका प्रदान करना कुछ दान नहीं है। और जो मनुष्य "कुछ देना ही चाहिये, ऐसा मान कर कदाचित बहुत ही दे सके तो सुवर्ण (सोना) सिवाय और कुछ नहीं दे सक्ता, परंतु जो मनुष्य अपने विशुद्ध और अमूल्य हृदयको परमात्माकी भक्तिमें अर्पण कर देता है उसका दान कुछ हाथको लंबानेमें अटक नहीं रहता है। उन्नत हृदय उसके दानशील हाथोंकी अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ जाता है।

जे० आर० लोवेल

कुछ सत्कार्यकर देनेसे ही अपना कर्तव्य पूरा हुआ नहीं समझना चाहिये, किन्तु उसको योग्य रीतिसे करना चाहिये अर्थात् तब तक सत्कार्य करते रहना चाहिये कि जब तक यह आत्मा अपनी बाह्य और आभ्यन्तर वृत्तिको विकारोंसे दूरकर स्वयं परमात्मरूप न हो जाय। ऊपरकी बेगार भुगतनेरूप कार्य कर देनेसे कहीं आत्मा प्रसन्न नहीं होता है।

वैद्य रोगको फटकारता है, परंतु रोगीको तो चाहता ही है। तुम भी यदि उदार हो तो सर्वदा पापको धिक्कारो, परंतु पापीसे तो अधिकाधिक प्रेम ही करो।

जो तुमको अपने किये हुए सत्कर्मोंके लिये दुःख होता हो तो अपनी आत्मभावनामें स्थिर हो, वहां पर ही तुमको पूर्णानंद मिलेगा, क्योंकि उस विशुद्ध भावनासे ही परमात्माके अविचल राज्यमें सर्व प्रकारसे सुखी होगे।

सत्कार्य करनेमें जैसे जैसे हम लीन होते हैं—विश्वको भूलकर सत्कार्य करनेमें ही तन्मय हो जाते हैं, वैसे वैसे ही हमारी आत्माका असली स्वभाव अधिक विकसित होता है, और अन्तमें हम भी परमात्मा हो जाते हैं। जहां पर विश्वप्रेमका साम्राज्य नहीं है, वहां पर चित्तवृत्ति स्थिर और शांत नहीं होती है। ऐसी जगहपर प्रकृतिदेवी भी अपनी प्रकृतिको बदल देती है और शैतानोंका वास होता है।　　सेइन्ट० ऐलफोन्सस दविगोरी।

प्रेमकी प्राप्तिके लिये सबके ऊपर प्रेम करना चाहिये, यह मानव जातिका कार्य है। और विशुद्ध प्रेमके लिये प्रेम करना यह दैवी चिन्ह है।

सहृदय प्रेमालु होना ही सद्गुण है। हे आत्मन्, संसारके समस्त जीव तेरे बंधु हैं और तेरी आत्माके समान उन सबकी आत्मा है। लैमर टाइन।

कैसा ही नीच दूषित अथवा दुःखी आत्मा हो तो भी उसको धिक्कारो मत, उससे ग्लानि मत करो! क्योंकि ऐसे पापियोंकी आत्माकी भी शक्तियें परमात्माके समान हैं। भोले मनुष्योंमें भी अनंत दैवीशक्ति गुप्त रहती है। उसको व्यक्त करनेके (बाहर लानेके) लिए किसी पुण्यवान महात्माकी आवश्यकता होती है। इस शक्तिका विकाश सद्वृत्ति और आत्मविश्वाससे होता है। सद्वृत्तियोंको प्रेमपूर्वक आचरणमें लाना चाहिये और भल-मनसाईसे वर्तना चाहिये तथा आत्मसंस्कार और प्रभुभक्ति करनी चाहिये। नोकस लीटल।

हिचकते हुए और उदास मनसे किये हुए कार्यकी अपेक्षा उदार और प्रसन्नचित्तसे की हुई सत्कार्यकी इच्छा विशेष उत्तम है। एक दूसरेकी लज्जासे या मित्रके दबावसे लाखों रुपया प्रदान करनेकी अपेक्षा "निर्धन परन्तु दयालु" दिलसे अपनी आभ्यंतर शुभेच्छा और शुभ भावनायें विशेष कल्याण कर सक्ती हैं। परोपकार करनेवाले प्रत्येक मनुष्योंको इस उत्तम साधनकी कमी कहीं पर भी नहीं है। ली।

संसारमें जो आनंदाश्रुकी धारा पडती हो तो आनंद—आनंदकी इतनी घोर वृष्टि करो कि बरसातके बाद होनेवाले इन्द्रधनुषके समान समस्त संसारका रंग सुंदर हो जाय और जीवन सुखद और शांतिमय बन जाय। ऐसा प्रेम प्रकट करो कि जिससे

जीवन प्रिय लगे और दुःखके बादल नष्ट हो जांय। निराशारूपी शीतसे थरथरातीहुई आत्माओंमें उत्साहको ठूंसठूंस कर भरो। जिससे शोकके काले दुर्दिन आत्मज्योतिके प्रशस्त तेजसे क्षण मात्रमें नाश हो जांय और आशा सफेद बरफके समान चमकती हुई आनन्द जीवनमें संचार करे। एल० स्टारकोम।

सेवाका कार्य नितांत गुप्त रीतिसे और बेमालूम अचानक ही हो तो ही उत्तम आनंद प्राप्त होता है, मेरी ऐसी मान्यता है। लेंब।

पुष्पमें स्वाभाविक मधुर प्रेमरस है, इसलिये भ्रमरोंके तीक्ष्ण डंकोंकी वेदना उसको दुःखकर मालुम नहीं होती, किन्तु वह उन भ्रमरोंको प्रेमरस मग्न कर देता है, आनंदित बना देता है। ठीक इसीप्रकार अपने हृदयकी साहजिक दयासे अपने शत्रुकी कठोर निर्दयता भी दंश नहीं करसक्ती। लेन्डोर।

जो आत्माका स्वभाव ही दयामय और उदार हो तो हमको अनुदार होना अच्छा नहीं। सेइन्ट इगनेशियस लोयोला।

कर्कश और साभिमान वचनोंसे जो महानुभावोंके हृदयमें दुःख होता है वह दुःख केवल स्नेहयुक्त वचनोंसे ही दूर होता है। लोक।

अपने बंधुओंके प्रति प्रेम तुमारी आत्माके आभ्यन्तर ज्वलंत (अग्नि समान) होना चाहिये जिससे प्रेमके अस्खलित प्रवाहमें अंतरायरूप होनेवाली (विघ्नरूप होनेवाली) मनुष्यकी स्वार्थवृत्ति भस्म होजाय और दूसरोंकी सेवा किस प्रकार करना चाहिये इस प्रकारका विचार प्रकट हो। इतना ही नहीं किन्तु तुमारा प्रेम

इतना बलिष्ट और सतत प्रवाही होना चाहिये कि जो तुम्हारे बन्धुओंके शारीरिक और मानसिक आवश्यक्ताओंको पूरा करसके।

लीटन।

यदि हम मानवजातिको चाहते हैं—प्रेमकी दृष्टिसे देखना चाहते हैं तो कमसे कम कुछ भी तो अपेक्षा उनकी रखनी चाहिये। यदि उनके दोषसे—गंभीर भूलसे क्रोधित न होना चाहे तो सतत क्षमाका अभ्यास करना चाहिये और यह समझना चाहिये कि दीन और भोले मनुष्योंको समझदार और बलवान मनुष्योंसे क्षमा प्राप्त करनेका अधिकार है। अपना हृदय द्वेष रहित बनाना चाहिये, न्याय और नीतिके सिद्धान्तोंका मृदुता (सरलाई) और दयासे उपयोग करना चाहिये। द्वेष रहित होना ही आत्मधर्म है,यह बात ज्ञानवान पुरुषोंसे ही बन सक्ती है अतएव समझदार मनुष्योंको बहुत ही क्षमाशील बनना चाहिये।

लार्ड लिटन।

दुःखके ढोंगसे तुम अनुदार मत बनो। किसी किसी समय तो उदार बनो। जब कोई बाहरसे गरीब मनुष्य तुमारे पास आकर सहायताकी प्रार्थना करे तब इसका कहना यथार्थ है या नहीं? यह तलाश करनेमें विलम्ब मत करो। दो पैसे बचानेके अभिप्रायसे अप्रिय और कटुक शब्दोंसे उसको तर्जना न करके सत्य शोधनेके लिये प्रयास करो। बल्कि सबसे उत्तम मार्ग यह है कि उसके वचनोंमें श्रद्धा रखो, विश्वास करो। लेंब।

मनुष्यका धर्म क्या है? अपने बंधुओंकी सहायता करना, अपनी प्राकृतिक शक्तिका विकाश करना, हरएक प्रकार समाजकी

भलाई करना, संसारकी प्राकृतिक दशाका ज्ञान करना और आत्मतत्त्वका अनुसंधान करना, बस आत्माको जान लेना ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है । ओलिवर लॉज ।

सहायता करो, सहायता करो, इस प्रकारकी जोरशोरकी पुकार जो चारोंतरफसे निरंतर सुननेमें आती है,उसको दूर करना चाहिये तथा दुःखोंको कम करना चाहिये, और सुखोंकी वृद्धि करनी चाहिये । ऐसे मनुष्योंको प्रेमयुक्त सत्य वचनोंसे आश्वासन दो, उनके हृदयमें उत्साहकी बिजली दौड़ाओ । परिश्रम हो तो भी उनकी सहायता करो, अत्याचार और अज्ञानके पंजेमें पड़े हुए मनुष्योंको छुड़ाओ, उनको हानिसे बचाओ । यदि उनका मन घोर दुःखके तापसे कुम्हला गया—मूर्च्छित होगया हो तो पवित्र ज्ञानामृतसे सचेत करो इससे और कौन अच्छा काम है ? लिच ।

दाता अपने दानसे नहीं किंतु वह अपने भावोंसे पहिचाना जाता है । लेसिंग ।

जो सुखको जगतको अत्यंत पवित्र, मधुर और उन्नत बनाता है, वह अपने जीवनमें कोई एक अमुक महान काम करनेसे नहीं, किन्तु सतत असंख्य छोटी बड़ी सेवाओं और बहुत कालसे अभ्यास एवं पूर्ण श्रद्धासे होता है ।

" अभी समय नहीं है; " समय (वक्त) आयेगा, तब बहुतसे परोपकार करेंगे । इस प्रकारके बहानेसे परोपकारके कार्योंको स्थगित करनेकी अपेक्षा हरएक प्रसंगपर आनंद और उत्साह प्रवर्तक कार्य करते रहना ही विशेष लाभदायक है ।

जिनके विशुद्ध हृदय सदा आशा और आनंदसे भरे हुए हैं और संसारकी महान यात्रामें जो कोई मिले उसके जीवनमें आशा और आनंदभर देना चाहते हैं, वे ही जगतमें वास्तविक सहायता और आश्वासन दे सक्ते हैं।

विपत्तिके समय मनुष्यको खास आवश्यकता ऐसी नहीं होती कि उनका भार—दुःख दूसरा कोई ले ले परन्तु यदि आशा और उत्साहसे उनके हृदयमें बल दिया जाय तो उनके शिरका भार सुगमतासे दूर होसक्ता है और दुःखका पहाड़ नाश होसक्ता है।

बहुतसे मनुष्य ऐसे हैं कि जो अपने मित्रोंको मरण पर्यन्त भी अपने हार्दिक प्रेमकी सुगंधि नहीं पहुंचाते हैं। अपने साथ निरंतर रहनेवाले मित्र अथवा पड़ोसी अब थोड़ेसे ही समयमें सदाके लिये दूर होंगे और अपने हृदयकी शुभेच्छाओंका उपयोग होनेका अवसर भी वीता चला जारहा है यह बात हम अनेकवार भूल जाते हैं—मनकी इच्छायें मनमें रह जाती हैं और समय चला जाता है इसलिये जिन प्रेम—पुष्पोंको तुम अपने मित्र अथवा पड़ोसीकी जिस मृतशय्या पर वखेरना चाहते हो उन प्रेम-पुष्पोंको उनके जीवनमें "विकट संकट और भयानक विपत्तिसे" आई हुई असह्य संक्लेश अवस्थामें ही आनंद और सुखको समर्पण करनेके लिये पहिलेसे ही समर्पण करो। मनुष्यकी मृत्युके बाद मर्मभेदक शोकाश्रु प्रकाशित करनेकी अपेक्षा तो यही अच्छा है कि उनकी जीवित अवस्थामें प्रेमपूर्वक व्यवहार करो।

जबसे हम दूसरोंकी सेवा करनेका जीवन प्रारम्भ करते हैं तब ही से अपना वास्तविक जीवन शुरू होता है।

सब दिशासे 'सेवा करनेकी' पुकार आती है। कितने ही गरीब और रोगी मनुष्योंकी मुलाकात लेनी होती है, कितने ही रोनेवालोंको आश्वासन प्रदान करना ठीक मालूम होता है, कुमार्ग गामी पुरुषोंको सन्मार्गमें लानेके लिये सहायताकी आवश्यकता होती है और कितने मनुष्योंको गुलामगिरीके पंजेमेंसे मुक्त कर रक्षण करनेकी अत्यन्त आवश्यकता होती है। उपर्युक्त कार्योंमेंसे जो कोई तुमसे बन सके उसको सानंद और सोत्साहसे करके उनका आशीर्वाद ग्रहण करो।

ओस जिस प्रकार अपना कार्य गुप्त रीतिसे करती है उसी प्रकार तुम भी अपने कार्यको गुप्त रीतिसे करो। जनताका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करनेका विशेष प्रयत्न मत करो।

जब तुम निस्पृहवृत्तिसे अत्यंत शुभ कार्य करो तो तुम अपनी प्रशंसाके ढोल अपने आप मत बजाओ। पुष्पकी सुगंधी और ताराओंका प्रकाश स्वयमेव ही सर्वत्र प्रसरित हो जाता है।

दुनियांकी वाहवाहीसे बिलकुल दूर रहो। बांये हाथसे होते हुए कार्यको दक्षिण हाथसे होने मत दो। जिस प्रकार चित्रकार अपना नाम चित्रपर अंकित करता है—चित्रपर अपना नाम लिखकर जगतको जाहिर करना चाहता है, उस प्रकार तुम अपना नाम अपने कार्योंपर मत लिखो।

तुम्हारी वाहवाही (सत्कार्योंके करनेसे उत्पन्न हुई कीर्ति)को दूसरा कोई मनुष्य बिगाड़ देगा इस विचारके भयसे भयभीत मत हो—डरो मत। मनुष्योंको दिखानेके लिये नहीं, लोगोंसे वाहवाही प्राप्त करनेके लिये नहीं, किन्तु सच्ची शुभभावनासे आत्मकल्या-

णके लिये करो। तुम अपनी सर्वोत्तम सेवा अद्वितीय प्रेम और दान जिनको सुखकी आवश्यक्ता है, उनपर खुशीसे वृष्टि करो।

तुम्हारी सेवासे दूसरोंका जो कुछ भी भला हो, उस सिवाय कुछ अपने स्वार्थकी चाह अथवा अपनी ख्याति और जिसका तुमने भला किया है उनसे अपने घर संबंधी कामसे बदला मत लो और प्रेमसे उसके जीवनके साथ अपना जीव एक करदो। जिस प्रकार ओसका लघुबिन्दु गुलाबके कोमलपत्रोंको पल्लवित कर अदृश्य हो जाता है और कुमलाए हुए पुष्पोंको ताजे बनाता है। ठीक उसीप्रकार तुम भी अपनी सेवासे दुःखी पुरुषोंको सुखी बनाकर अपने सत्कृत्योंसे संतोषित हो। तन धन तो किसीका भी सदा रहा नहीं है और रहनेवाला भी नहीं है।

जीवन स्वल्प है और कर्तव्य बहुत हैं। उनमेंसे जो अत्यंत ही आवश्यक और महा उपयोगी हैं, उनको पूर्ण करसकें तो समझना चाहिये कि हमारे जीवनका मूल्य बहुत ही अधिक है।

सेवाका मूल प्रेम है और प्रेम आत्माका धर्म है, जो सेवा प्रेमसे ओतप्रोत परोई नहीं है वह वास्तविक आनंद नहीं देसक्ती। जो प्रेम सेवा नहीं करता है वह प्रेम ही नहीं है।

जितने प्रमाणसे सहन करनेके लिये आत्माके आभ्यंतर त्यागवृत्ति है उतने ही प्रमाणमें आत्मामें प्रेम है यह निश्चय समझिये। जो प्रेम त्याग करनेके लिये तैयार नहीं है वह प्रेमकी क्षणिक लहरी है अथवा कुछ फल न दे ऐसा सुंदर ढाक (पलास) पुष्प है।

प्रेमपूर्वक दान करनेसे—सत्कार्य करनेसे—सहन करनेसे—त्याग[1] करनेसे और सेवा करनेसे ही सर्वोत्तम और सबसे अधिक मूल्यवान तथा सच्चेसे सच्चा आशीर्वाद मिल सक्ता है।

अपना जीवन ही संसारकी भलाई करनेके लिये है। दूसरोंके लिये सत्कार्य करनेमें अथवा दान करनेमें अपनेको कुछ भी परिश्रम नहीं करना पडता हो तो समझना चाहिये कि उससे दूसरोंको थोडा सुख या थोडीसी सहायता मिल सकेगी। जो कोई महान् वक्ता (उपदेशक) मात्र अपना भाषण देकर ही संतुष्ट हो जाय तो सुननेवालोंको जरा भी लाभ नहीं हो सकता। जो हम प्रेमपूर्वक सेवा करें और सेवा करनेमें ही अपना जीवन समर्पण कर दें तो ही हम अधिक सुखी हो सकेंगे अथवा दूसरोंको अधिक सुखी बना सकेंगे और अपने आत्माको भी प्रसन्न कर सकेंगे।

तुच्छ दिखते हुए छोटे मोटे कार्योंमें भी निरंतर लगे रहनेमें जो हार्दिक प्रेम है वही 'दया' है; परन्तु जिस पुरुषके लिये दया करनेमें आती है उसको विशेष लाभ होता है। यह दया अधिक बोझा (भार) लादनेके कारण थके हुए मनुष्य और पशुओंको सहायता करती है, निराश हुए मनुष्योंके हृदयमें उत्साह फूंकती है, तृषातुर (प्यासे) मनुष्यको शीतल जलका मीठा प्याला देती है, गूंगेको वाचा प्रदान करती है और सदा हर एकको

१ उत्तम त्याग दो प्रकारका है बाह्य और आभ्यंतर। बाह्यत्याग= द्रव्य, अन्न, वस्त्र, पुस्तक और औषधिआदिके दान करनेसे होता है। आभ्यंतर त्याग क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्षा और मोहके त्याग (नाश) करनेसे होता है।

सेवा करती रहती है। वह सुखकारक सेवा प्रायः किसीको ज्ञात नहीं हो ऐसे अज्ञातपनेसे निरंतर करती है और वही सर्वत्र छोटी मोटी अनुकूलताओंका साधन कर देती है। जब तक हम इस दयाका खास विचार नहीं करते हैं तब तक वह इस संसारमें मनुष्योंके लिये कितनी उपकारक और सहायक है उसका हम अनुमानतक नहीं कर सक्के। दयाके सिवाय और दूसरे थोड़े ही सद्गुण जीवनको इतना सुंदर और तेजस्वी बना सक्के हैं।

तुम्हारी सेवाकी सुगंधीसे मधुर बनानेका प्रथम स्थल तुम्हारा (अपना) घर है। तुम्हारा प्रोत्साहित प्रेम और तुम्हारी विचारशील निःस्वार्थ सेवा 'तुम्हारी श्रमसे थकी हुई माता, चिन्तासे ग्रसित पिता, कुमार्गगामी भाई, घरके बालकों और घरमें आये हुए महिमानों और घरमें रहनेवाले नोकर चाकरोंके' प्रति हो।

जिसे तुम्हारी भेटसे आश्वासन मिले ऐसा एक पडोसी यहां पर भी है और एक विधवा ऐसी है कि द्रव्यकी अपेक्षा उसकी चिन्ताको तुम्हारा उत्साह और तुम्हारी दयाका एक छोटासा कार्य भी उसको विशेष लाभ पहुंचा सक्का है। यहांपर नेत्रविहीन (अंधी) स्त्री ऐसी है कि जिसको सप्ताहमें एक दो घंटे शास्त्र बांचकर सुना देनेसे उसके अभागे मनमें बहुत ही आनंद होता है।

प्रेम हमको बहुत ही भार उठानेको कहता है अर्थात् समस्त जनताकी सेवाका भार उठानेको कहता है और यह कार्य विनय-पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करनेसे विशेषतासे होसक्का है।

जो सहृदय मनुष्य प्रसन्नचित्त और हार्दिक उत्साहसे मार्गमें मिलते हुए प्रत्येक व्यक्तिको प्रोत्साहन देता है और उन्नतिके

मार्गका उपदेश देता हुआ फिरता है, वही वास्तविक मनुष्योंमें बल, धैर्य और आशाकी प्रेरणा करसक्ता है, वह दूसरोंको दैवी सुख देता है। वह प्रत्येक मनुष्यको अधिक बलवान और धैर्यशाली बना सक्ता है। रेतीले मार्गमें चलते हुए प्रवासी जब अतिशय श्रमसे बिलकुल थक जाते हैं तब ऐसे पुरुषको देखकर 'नवजीवन' प्राप्त करते हैं। निराशासे बिलकुल हारे हुऐ पुरुष उसके आशाजनक मधुर शब्दोंको सुनकर नवीन धैर्य धारण करते हैं ऐसे उत्साही पुरुषका असर कभी भी नष्ट नहीं होता है। उसका परिमाण हम नहीं करसक्ते हैं, ऐसा जीवन ही व्यतीत करना अतिशय श्रेयस्कर है।

कितने ही मनुष्य ऐसे होते हैं कि जिनकी आवश्यकतायें उनके मित्र पूरी कर सक्ते हैं और उनकी इच्छायें संतुष्ट होती हैं परंतु उन मित्रोंके लिये वह क्या करता है? क्या इसका विचार हुआ है? ऐसे मित्र करनेकी अपेक्षा मित्र बनना, और सहायता लेनेकी अपेक्षा सहायता करना उत्तम है। हमको कुछ मिलता नहीं हैं? यह नहीं किंतु हम क्या प्रदान करेंगे यह विचार ही अधिक आवश्यकीय है।

जीवनकी सच्ची कसोटी दूसरोंके लिये गुप्त किये हुए सत्कार्योंमें छिपी हुई है, यह सिद्धान्त अवश्य ही स्वीकार करना चाहिये। जीवन पर्यन्त किये हुए कमसे कम छोटे छोटे दशहजार कार्य, श्रेष्ठ वचन और अपनी शुभवृत्तियां लोकमें ख्यातिके लिये एक दो मोटे कार्य करनेकी अपेक्षा अधिक चारित्र वृद्धिगत करती हैं—उच्च बनाती हैं।

प्रत्येक मनुष्य दो प्रकारकी सेवा करता है। कितनी ही चीजें मनुष्य हेतुपूर्वक और योजनापूर्वक (खास विचार तथा ध्यानपूर्वक) करता है और वैसा करनेको आदत होजाती है। दूसरी ऐसी कितनी चीजें हैं जो प्रथमसे नियत किये विना निश्चित कार्योंके उपरान्त भी अवकाशके समय करता है ऐसे अनिर्णीत कार्योंमें असंख्य वार थोड़ी थोड़ी विनय, दयाके कार्य और ठीक मौके पर किये हुए कार्योंमें, एक दूसरेको मिलते समय उत्साह, सांत्वना और धैर्यके मधुर शब्दोंका समावेश होता है।

हम लोग ऐसी सेवाका प्रायः कुछ मूल्य ही नहीं गिनते हैं अथवा ऐसे कार्योंको सेवारूप ही नहीं समझते हैं और जिन कार्योंको नियमित योजनापूर्वक (सभा—समितिद्वारा) करते हैं उनकी ही सराहना करते हैं। परन्तु प्रकृतिदेवी प्रायः बड़े बड़े कार्योंकी अपेक्षा छोटे छोटे उपयोगी कार्योंसे अधिक संतुष्ट होती है और यथार्थ ही ऐसे कार्योंका मूल्य बहुत अधिक है क्योंकि छोटे छोटे कार्योंमें मनुष्योंको विशेष अभिमान अथवा किये हुए कार्यके बदलेरूप अपने स्वार्थकी वासना एवं अन्य लोगोंमें अपने किये हुए कार्यकी ख्याति आदिकी इच्छा नहीं होती है, ऐसे छोटे छोटे कार्य निस्पृह और निरभिमान वृत्तिसे किये जाते हैं इस लिये हार्दिक प्रेम ऐसे कार्योंमें विशेष होता है।

कितने ही मनुष्य 'हम दूसरोंकी थोड़ी बहुत क्या सहायता कर सके हैं, इस प्रकारके विचारसे अपने जीवनको विलकुल व्यर्थ समझकर निराशाके आधीन हो जाते हैं। वे संसारमें अपने पीछे

सुखकी संतानको अधिष्ठित (कायम) नहीं कर सकते। दूसरोंको पिघला सकें, मोहित कर सकें ऐसे शब्द बोल भी नहीं सक्ते हैं। वे किसी में उत्साह हो अथवा आश्वासन मिले—आशा संचारित हो, ऐसी पुस्तकें लिख नहीं सक्ते और जिससे स्वर्गीयसुख उनको मिले ऐसा उनका भाग्यचक्र उनसे परोपकारके कुछ भी कार्य नहीं होने देता। सदा स्मरण रखना चाहिये कि छोटेसे छोटे तुच्छ कार्य स्वाभाविक, मधुर और हितकारी वचन और प्रेमी हृदयसे विकसित अस्फुट आनदी हास्यसे हम संसारको विशेष सुखकर, मधुर और उपयोगी बना सक्ते हैं। यह निश्चय समझना चाहिये कि जिसमें वास्तविक प्रेम है उसका कभी भी नाश नहीं होता है और वह निरुपयोगी नहीं हो सक्ता, इस बातको कभी नहीं भूलना चाहिये।

यदि हमको छोटे छोटे (परन्तु अधिक उपयोगी) कार्य करनेका प्रसंग मिले तो हमको निराश नहीं होना चाहिये (मनमें यह न विचारना चाहिये कि छोटे छोटे कार्य करनेसे क्या लाभ?) परन्तु जो जो प्रसंग हमको अनुकूल मिले उनका उपयोग करलेना ही अपना कर्तव्य समझना चाहिये। एकवार भी प्रकट किये हुए प्रेमयुक्त वचन, एक आदि दयाका कार्य अथवा एक क्षण भी हार्दिक उत्साह अन्यको प्रदर्शित करो तो उसका असर वर्षोंतक स्थिर रहता है और ऐसी वृत्ति फिर कभी विस्मरण नहीं होती है। इस लिये छोटेसे छोटे सेवाके कार्यमें भी अपनी शक्तिका उपयोग करना चाहिये इतना ही नहीं किन्तु इस प्रका-

रकी सेवामें ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये। इन जरा जरासी छोटी छोटी बातोंमें क्या रक्खा है? इस प्रकार अपने हृदयमें कुंठित नहीं होना चाहिये और मनको संकुचित नहीं करना चाहिये।

दूसरोंको यथार्थ उपयोगी सहाय करनेमें भी बुद्धिमानी और कलाकोविद होनेकी आवश्यता है। आवश्यकतासे अधिक सहायता प्रदान करनेमें भी भय है क्योंकि कितने ही मनुष्य ऐसे होते हैं कि यदि उनको ठीक आवश्यकताके समय पर सहायता होनेपर और अधिक सहायताकी अनावश्यकता होनेपर भी, वे दूसरोंसे मिलती हुई सहायताको अस्वीकार करनेमें मनाही नहीं करते। बालकोंको हरएक वस्तु लेनेमें स्वाभाविक मन होता है। वृद्ध सदा दूसरोंकी अपेक्षा ही करते हैं। प्रमादी और आलसी मनुष्य अपने काम करनेवालोंको कभी भी ना नहीं कहते हैं। वे पारतोषिक (ईनाम) स्वीकार करनेमें तथा अपना बोझा (भार) हलका करनेके लिये अपने कठिन और परिश्रमी कामोंको दूसरोंके पास करानेके लिये सदा तैयार रहते हैं, परन्तु ऐसे मनुष्योंकी की हुई सहायता एक प्रकारकी उनके लिये क्रूरता है। वर्तमान समयमें प्रायः इसप्रकारकी रूढ़िसे किया हुआ दान भी इसी जातिका दान है। यह दान कोई बुद्धिमानीका दान नहीं है। इस दानसे यद्यपि उनको कुछ समयके लिये लाभ मिलता भी होगा, परंतु उससे उनका भावी जीवन विशेष दुःखी और निर्बल बनता है।

अत्यन्त आवश्यकतावालोंको द्रव्य अथवा अन्न आदि देनेकी अपेक्षा उनको किसी काममें लगा देनेसे 'द्रव्यदान' की उनको आवश्यकता नहीं रहती है अथवा **'द्रव्य कमानेकी योग्यता'** की शक्ति उनके हृदयोंमें धैर्य और उत्साहके साथ भर देना ही यथार्थ उपकार और सहायता है। उपर्युक्त दोनों युक्तियां **'द्रव्यदान'** की प्रथासे बहुत उत्तम और अधिक फलप्रदा हैं। इससे मनुष्योंकी स्वतंत्रताका प्रेम नष्ट नहीं होता है और वे स्वावलबी मनुष्य बनते हैं। यह भी एक फायदा इन रीतोंसे होता है कि उनके **स्वाभिमान** में किसी प्रकारका धक्का नही लगता है और भविष्यके जीवनमें वह बलवान अधिक होता है।

अनावश्यक सहायता भी एक प्रकारकी असमझ सहायता है। क्योंकि इससे सहायता स्वीकार करनेवाले मनुष्यको लाभकी अपेक्षा हानि विशेष होती है। जो मनुष्य अपने लिये जीवन सरल बनावे उसकी अपेक्षा उससे होसके उतना अदम्य उत्साह उन मनुष्योंकी रग रगमें फूंक देना—आजीविकाके मार्गमें प्रवृत्तिकर देना, सत्याग्रहमें लगा देना और अपने कर्तव्योंका ज्ञान करा देना ही अधिक श्रेयस्कर है जो यह करता है वही श्रेष्ठ मित्र है।

---

(१)-गरीब और अनुद्योगी पुरुषोंको द्रव्यदानकी अपेक्षा उनको किसी प्रकारके धंधेमें लगाकर आजीविकाका स्वतंत्र मार्ग खोल देनेसे विशेष लाभ होता है और उसको वार वार द्रव्य दान करना भी नहीं पड़ता है परन्तु यह रीति सामाजिक महान कार्योंमें विशेष हानिप्रद है। महान कार्योंके लिये तो द्रव्यदान करना ही आवश्यक है। इसी प्रकार धार्मिक बड़े बड़े कार्य विना द्रव्यकी सहायतासे वद हो जायगे और भयानक अव्यवस्था होगी।

दूसरोंकी सहायता करनेमें और अन्य पुरुषोंकी सेवा करनेमें भी विशेष बुद्धिमानीकी आवश्यकता होती है। किसी समय अत्यन्त मन मिली हुई और वृद्धिको प्राप्त हुई ऐसी मित्रतामें उपयोगभूत आतुरताके लिये ही विघ्न आजाते हैं। भले भावोंसे–शुभ विचारोंसे परन्तु विनयविरुद्ध आग्रह (आतुरता) से उपकार किया जाय तो इसका परिणाम यह होता है कि तुमारा मित्र तुम्हारे गाढ़ परिचयसे दूर रहेगा। इसलिये हरएक प्रकारकी दया करनेमें सयुक्तिक निग्रह रखना चाहिये। हमको अत्यंत आतुर न बनना चाहिये। ऐसी (निःसीम) आतुरताको डेढ़ अक्ल कहते हैं। विना अवसर किसीको सहायता नहीं करनी चाहिये। मर्यादासे अधिक करना 'कम करनेकी' अपेक्षा बहुत ही बुरा है। हमको मित्रकी आत्माको विकसित करना चाहिये, मित्रके सद्गुण व्यक्त करने चाहिये न कि मित्रको अपने आभारसे ऋणी बना देना चाहिये। इससे यह न समझ लेना चाहिये कि हम किसीकी सहायता ही न करें किंतु मित्रोंको जब सहायताकी आवश्यकता हो, तब ही विशुद्ध हृदयसे अपनेसे जितनी होसके उतनी सहायता करनी चाहिये–सहायतामें दुराग्रह न कराना चाहिये। सहायता करनेके और सेवा करनेके कारणकलाप (सबंध) परस्पर एक सदृश (सरखे) होना चाहिये। दयाके कार्यमें हमें अपने मित्रको हराना नहीं चाहिये, दयाके लिये उसको हैरान करनेका प्रयास नहीं करना चाहिये, नहीं तो मित्रताकी समान तुलनाका नाश हो जायगा इसलिये मित्रताके संबंधमें ऐसा न बने इस बातका पूर्ण लक्ष रखना चाहिये।

हमको प्रामाणिक, सत्यवादी, उद्योगशील और धर्मिष्ठ बननेकी जितनी नितान्त आवश्यकता है उतनी ही जिन जिन कर्तव्योंको स्वाधीन करे उनको आचरणकर पद पदपर प्रेम दिखलानेकी भी अत्यंत आवश्यकता है। यदि हम वैसा न करें तो हम अपने कर्तव्योंका यथार्थ अभिप्राय नहीं समझते हैं।

हमारा न्याय होते समय (हमने अपने सारे जीवनमें क्या किया? इसका कदाचित अपने कर्म हमारा न्याय करें तो) 'हमने खराब काम नहीं किये, इतने हीकी छानबीन न होगी किन्तु करने योग्य कर्तव्य, हमने नहीं किये इसका भी ध्यान होगा।

भले ही संसारके लोग यह समझते हों कि 'मैंने कोई भी दुष्ट काम, बुरा कार्य नहीं किया, और इसी लिये 'मैं सब लोगोंकी दृष्टिमें अच्छा हूं। क्या इससे मैं यह अपना हाथ ऊचाकर कह सक्ता हूं कि 'मैंने अपने हाथसे कोई भी पाप नहीं किया है? नहीं नहीं, हमसे गम्भीर अनेक पापकार्य हुए हैं और हम अपने कर्तव्योंको करनेमें अनेक वार असमर्थ हुए हैं। पापका अर्थ लक्ष्य चूक जाना होता है। जब हम अपने हार्दिक प्रेमसे निश्चय किये हुए कार्यमें निष्फल होते हैं—अपने लक्ष्यसे च्युत होते हैं तब तो हम भी पापी ठहरे।

निरुपयोगी रहनेवाले मनुष्यको 'उपयोगी बननेवाली शक्तिका नाश, ही दण्ड है।

क्या हम अपने घरमें एक दूसरेको परस्पर चाहते हैं? हां हां अवश्य हम सबको चाहते हैं। हम एक दूसरेके लिये मर मिटते हैं, परन्तु तो भी हमलोगोंको अपने प्रेममें अन्यको भागीदार बनाना पूरी पूरी रीतिसे नहीं आता है।

हमने अपने जीवनमें एक दूसरेको 'जीवित रखना' सीखा होता तो बहुत अच्छा होता, परन्तु फिर न जाने क्यों हम एक दूसरेके लिये मर मिटते हैं? इसका कारण समझमें नहीं आता।

कितने ही मनुष्योंका कुटुंबरूपी उद्यान ऊजड़ और वीरानसा हो रहा है—निस्तेज और शुष्क हो रहा है। यदि उस कुटुम्बका एक भी व्यक्ति अपना हार्दिकप्रेम और मनके दृढ़ संकल्पसे अपनी स्वाभाविक वृत्तियोंको विकसित करे तो अल्प समयमें ही वह परस्पर प्रेमामृतके सिंचनसे हरेभरे निकुंजजैसा मनोहर हो जाय।

हमारा निजका ही भला हो इसमें भी कुछ अधिक महत्ता नहीं है, किन्तु योग्य दिलासासे, समभावसे, उत्साहित वचनोंसे और दूसरोंके जीवनमें समभाग बननेसे एवं निःस्वार्थ सेवासे अन्योंकी भलाई तथा सहायता करना ही अधिक महत्ता है। प्रभु-प्रार्थना द्वारा भी उनका भला इच्छना चाहिये।

अपने प्रेमयुक्त आग्रहसे अपनी आत्मा कितनी आनंदित होती है यह हमको भूल नहीं जाना चाहिये।

हमको बाह्य अप्रियताके आवरणसे हार्दिक प्रेमके ज्वलंत-प्रकाशको छिपा नहीं रखना चाहिये, परन्तु उस प्रकाशकी इस प्रकार व्यवस्था करनी चाहिये कि उससे समस्त मानव जातिके हृदय-कमल आनंदसे विकसित हो जांय।

हमको अपना जीवन रूपी दीपक अहंकारके गाढ़ आवरणसे आच्छादित करना नहीं चाहिये, परन्तु उसको जगतकी भलाईके लिये निःस्वार्थ सेवा रूपी दीवट (समाई) पर रखना चाहिये।

जिस मनुष्यने सेवाकी दीक्षा नहीं ली है वह वास्तविक योगी नहीं है। सेवा ही जीवनका स्वरूप है।

हमलोग अपनी मानसिक वासनाओं (वांछाओं) का पारतोषिक (ईनाम) समर्पण करनेमें अतिशय कंजूसी करते हैं परन्तु अपने जीवनका यथार्थ उपयोग यही है कि जितना होसके उतना ही सबके जीवनको मधुर, अधिक सुखी, निष्कपट, प्रमाणिक और विजयवंत बनावें, यही प्रकृति देवीका अभिप्राय है। जब हम अन्यको अपने प्रेमसे आनंदित करते हैं तब ही हमारे हृदयमेंसे उत्साह, धैर्य, सांत्वना, और आशाकी उमंगके वचन बाहर निकल सकते हैं। अथवा जब दयाके मृदुकार्योंसे अन्यके जीवनोंको विशेष सुगम और अधिक सुखी बनाते हैं तब ही हम अपने धर्ममें तत्पर होतें हैं, परन्तु जब हम ऐसा नहीं करते हैं अर्थात् दया पालन नहीं करते हैं तब हम अन्याय करते हैं। दूसरोंका बोझा (भार) हलका हो ऐसे उत्तम कार्य करनेसे, तथा अन्यको धैर्य या बल प्राप्त हो ऐसे वचनोंके कहनेसे दूसरोंका दुःख कुछ कम हो, ऐसी सहायतासे हम अपनी आत्मशक्तिका विकाश सक्ते हैं। कदाचित अपनेसे ऐसा न हो सके तो दूसरोंसे प्रार्थनाकर ऐसी संगीन दिव्यसेवा करादेनेसे भी आत्मशक्तिका उपयोग हुआ मानना चाहिये। यदि कोई अच्छे काम करता हो तो अपनेको उसकी सराहना—प्रशंसा करनी चाहिये। उत्तम कार्य करनेकी तीनें रीति हैं।

एक प्रकारसे देखा जाय तो हमारेहाथ खराब हैं क्योंकि जिन हाथोंसे हम दूसरोंको सुखी कर सक्ते थे और बलका सहारा देकर

---

१ परस्परोपग्रहो जीवानां, समस्त जीव एक दूसरेका परस्पर उपकार करते है यही जीव स्वभाव हैं और इसीको प्रकृति कहते हैं।

२ कार्य तीन प्रकार होवे कृत कारित और अनुमोदना—

बलवान बना सके थे उन ही हाथोंसे उन मनुष्योंको उलटा दंड देते हैं, दुःख पहुचाते हैं परन्तु जब हम इन हाथोंसे परमात्माकी भक्तिपूर्वक प्रार्थनाकर यह चाहते हैं कि संसारकी भलाई हो और

---

१ सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥

अर्थात्-" समस्त जीवोंके साथ मेरी मित्रता हो। जिस प्रकार हम मित्रके साथ अपना वर्ताव करते हैं ठीक उसी प्रकार समस्त जीवोंके साथ हम अपने कर्तव्योंका पालन करें-समस्त जीवोंको मित्र समझें इसी लिये उनकी हरएक प्रकारसे विशुद्ध मनसे निःस्वार्थ सेवा करें, निस्सीम सहायता करें । सचाचारी और गुणवान जीवोंका विशेष आदर कर सन्मानित करें । दुखी, असहाय, रोगी, दरिद्रतासे पीडित और अज्ञानी मनुष्योंकी सब प्रकारकी सेवाकर उनको सुखी बनावें। भले कोई हमारा वैरी ही क्यों न हो, हमसे उसके आचरण विरुद्ध ही क्यों न हों परंतु हम तो उसके विरुद्धाचरणोंको न देखकर समताभाव धारण करना चाहिये । इस प्रकारकी भावना इन हाथोंको प्रभुके चरणारविन्दमें लगाकर अपनी आभ्यन्तरवृत्तिको विशुद्ध और जगत-उपकारी बनानेसे ही हाथ पवित्र और उपयोगी होते हैं। यह तो निश्चित सिद्धान्त ह कि कोई भी कार्य विना आभ्यन्तर भावनाके नहीं होता हैं और आभ्यन्तर भावनाको विशुद्ध बनानेके लिये हमें अपने बाह्य और आभ्यन्तर विकारों (क्रोध-मान, माया, लोभ, मोह और शारीरिक अशुभ चेष्टा एवं अशुभ वचन वर्गणा)को छोड़ देना चाहिये । जब तक हमारी आत्माके साथ विकार रहेंगे तबतक हमारी आत्मा अत्यन्त विशुद्ध न होसकेगी। इसलिये विकारोंको छोड़कर शुभ भावनायें निरन्तर भानी चाहिये। ऐसा करनेसे ही यह आत्मा अपनी इतनी उन्नति करलेता है कि जिससे जगत-उपकारी महान् कार्य कर सके अथवा यह कहिये कि स्वयं परमात्मा हो जाता है । विकारोंको छोड़ देनेसे इस आत्माके बाह्य और आभ्यन्तर वह अपूर्व शांति और विशुद्ध प्रेम उत्पन्न होता है कि जिसके प्रभावसे सिंह और गाय, सर्प-नकुल इत्यादि समस्त जीव अपना प्राकृतिक वैर छोड़कर शांत और अद्वितीय प्रेमी बन जाते हैं-परम सुखी होजाते हैं ।

हमारे हाथसे सत्कार्य हों तभी हमारे हाथ पवित्र और उत्तम होते हैं। जितना उपकार इन हाथोंसे होता जायगा उतनी ही अधिक पवित्रता इन हाथोंके अंदर अधिक आती जायगी।

नीचसे नीच और पतितसे पतित मनुष्यकी भलाईके लिये, तथा उनके असहाय और घोर दुःखोंको निवारण करनेके लिये हमें चाहिये कि हम उनके पास जाकर उनके दुःखोंको दूर करें, पूर्ण सहानुभूतिसे सहायता करें। यदि वे रोगी हों तो औषध देकर सेवा करें, भूखे हो तो अन्न प्रदान कर संतोषित कर, वस्त्रोंकी आवश्यकता हो तो वस्त्र प्रदानकर शांति प्रदान करें और तृषातुर हों तो पानी पिलावें। हमें उन्हें किसी प्रकार भी सहायता देना चाहिये। जो पापी हैं, दुष्ट, हैं, व्यसनसेवी हैं और निंद्याचरणी

---

१ पतित और नीच जातिके मनुष्यकी सहायता करनेमें किसी प्रकारकी करकसर नहीं करना चाहिये न मनमें हिचकना चाहिये। यदि उनके घाव हो गया हो तो मलमपट्टी अपने हाथसे करनेमें संकोच नहीं करना चाहिये। यह नहिं हो कि वह अपनी दारुण पीडासे अत्यन्त दुःखी हो और तुम दूरसे ही वेगार भुगतकर चलते बनो-घृणाकी दृष्टिसे परहेज करो। सहायता करना और उनके साथ एकमेक होकर खानापीना और वेटीव्यवहार करना इसमें बहुत ही भेद है। सहायता करना यह अपना कर्तव्य पालन करना है और उन कर्तव्योंको सांगोपांग पूर्ण रीतिसे पालन करना चाहिये, इसमें त्रुटि किसी प्रकार नहीं करना चाहिये। परन्तु जिनके आचारविचार भ्रष्ट हैं, खानपान निंद्य है ऐसे नीच

हैं उनकी भी सहायता उनके पास जाकर ऐसी करनी चाहिये जिससे वे अपने बुरे आचरणोंको ही त्यागकर सदाचारी–पवित्र और धर्मनिष्ठ बन जांय। सेवा ही इसीका नाम है और यथार्थ सेवा भी यही है;

कुछ भी हो असहाय अवस्थामें दुःखी और अपवित्र मनुष्यकी सहायता करनेमें मन मत मोड़ो। अपने शरीरकी शुद्धि तुम कुछ प्रायश्चित्त लेकर कर सक्ते हो, परन्तु दीन हीन असमर्थ मनुष्योंके हृदय तुमारी अनुकम्पासे स्निग्ध होने दो। तलमलाते हुए उनके जीवन ज्ञानामृतसे शांत और आनंदी बनने दो। उनके शुष्क हृदयमें नवजीवनका उत्साह ठूंस ठूंसकर भर दो। इन सब कार्योंमें मानसिक उत्तम भावना और विशुद्ध दयाका ही

मनुष्योंके साथ उच्छिष्ट खाना दूसरी बात है। बाह्य क्रियाओंका असर आत्मा और आत्माकी आभ्यन्तर वृत्तिपर खूब गहरा पड़ता है। रतीभर दवा आत्माकी समस्त क्रियाओंमें परिवर्तन कर देती है तो जिनके संस्कार गर्भसे ही हीन हैं ऐसी संतानोंके कोमल मानसिकवृत्ति और उनकी परणतिपर कैसा उन संस्कारोंका असर पडता है यह शारीरिक तत्ववेत्ता ही जानते हैं। जिनके संस्कार इस जन्ममें वंशपरम्परासे निंद्य प्राप्त हुए हैं और पूर्वजन्मके संस्कार भी गर्हित हैं तो उभयका संस्कार आत्मापर ऐसा अविचल पडता है कि वह मरणपर्यंत किसी प्रकार नहीं जासक्ता इस लिये हमारी आत्मापर बुरा असर न होना चाहिये और हमारी आभ्यन्तरवृत्ति मलिन न होनी चाहिये। खानपानादिका छूत रोगोंके (कोलेरा, प्लेग) समान असर होता है।

काम है । इसलिये आशा विहीन और निरुत्साही जनोंके हृदय मंदिरमें तुमारी पवित्र अनुकंपा स्थापित करो ।

जिनके हृदयमें दयाका पवि स्रोत कल्लोल कर रहा है उनको शांत प्रकृतिलब्ध ऐसे अनेक अवसर प्राप्त होते हैं कि जिन प्रसंगोंपर ताराओंके प्रकाश समान और पुष्पोंकी सुवास समान वे अनुकंपाकी पवित्र लहरी मीठे वचनोंसे और सत्कार्योंसे साक्षात मूर्तिमन्त होकर सर्वत्र प्रसरित हो जाती है । और वह अमुक वस्तु, अमुक प्रकारका सुख और अमुक प्रकारका उत्साह प्रदर्शित करनेकी आवश्यकता है इस प्रकार व्यंजित होते ही बाहर आकर प्रकट हो जाती है । उसको निष्फलता होनेकी भी संभावना होती है परन्तु

बहुतसी बातोंका जिनको हम न कुछ जैसी समझते हैं और अर्द्धदग्ध विज्ञोंसे (जो न तो पूर्ण ज्ञानवान ही हैं और न अनपढ़ भोले हैं) सुनते हैं कि “ इसमें क्या रक्खा है । यह तो व्यर्थका झगडा है । क्या इनसे भ्रष्टता आती है ? ” बुरा असर पडता है। हमारी पवित्र वासना और मनोवृत्ति तत्काल मलिन हो जाती है । परंतु इस विषयमें हम **भारतनेता महात्मा गांधी** और **भारततिलक तिलक महोदयकी संमति देना ही योग्य समझते** हैं ।

एक समय महात्मा गांधीसे एक संपादकने प्रश्न किया कि अछूत मनुष्योंके साथ भोजन व्यवहारमें आपकी क्या सम्मति है । और वर्णव्यवस्थामें आपके क्या विचार हैं ? महात्मा गांधी-

आत्मा अपने स्वभावसे ही सद्वृत्ति, पवित्रता और प्रेमसे भरपूर है—तन्मयी है। जिनका हृदय सर्वत्र सुख हो 'क्षेमं सर्व प्रजानां' ऐसी जिज्ञासासे उत्सुक है उनकी भाषा, मृदुता, दया और शांतिके सुवास (सुगंध) से भरी हुई है, ऐसे मनुष्य जब इधर उधर विहार करते हैं तब वे अपनी दिव्य सुगंधीकी असर अवश्य चारों तरफ छोड़ते चले जाते हैं।

हम लोग इस संसारमें कुछ बाह्य वस्तु लेनेके लिये अथवा संग्रह करनेके लिये नहीं अवतरित हुए हैं, किंतु पूर्वजन्मकी संग्रहीत सत्कार्योंकी सुगंधीको प्रदान करनेके लिये और भावीज-

---

जीने ३ तीन युक्तिएं पेशकर यह सिद्ध किया कि असमझ मनुष्य भले ही कुछ करो, परंतु मेरी समझसे तो भारतकी आवहवा (प्रकृति) के अनुसार वर्णव्यवस्था ठीक है और उच्छिष्ट खाना अच्छा नहीं। उच्छिष्ट खानेसे थोड़े ही प्रेमसंचार होकर एकता होती है जिससे भारत सुधरे। क्योंकि (१) इग्लैंड और जर्मन एक जातिके एक धर्मके पालन करनेवाले और एक दूसरोंकी उच्छिष्ट खानेवाले थे तो क्यों युद्ध हुआ ? एकता क्यों न रही ? दूसरे भारतकी वर्ण व्यवस्था ऐसे संगीन और सुंदर नियमोंसे बनी है कि अन्य आवकसे हमारी प्रकृतिके अनुकूल सब वर्णोंके साथ व्यवहार चलाते हुए भी सदाचारी और निरोग तथा प्रेमी रह सक्ते हैं। तीसरे एकताका प्रेम हार्दिक आत्म-भावनासे होता है न कि एक दूसरेके साथ जूंठा खाने पीनेसे। अंतमें आपने कहा

न्ममें सत्कर्मोंके बीज बोनेके लिये हमने अपने शुभकर्मके उदयसे यह मनुष्यजन्म धारण किया है। इस लिये हम जिस प्रकार हो सके उतने सत्कार्यकर पुन्यरूपी बीजको प्राप्त करनेकी लालसा करें। दूसरोंसे सेवा और महिमानगीरी न कराकर स्वयं सबकी सेवा और अभ्यागत जनोंकी शुश्रुषा करें, यही नहीं किंतु चारित्र-विहीन मनुष्योंको अपने निर्मल और श्रेष्ठ चारित्रकी शान सर्वो-त्तम रखकर, श्रेष्ठ सदाचारी बनकर उनको अपना अनुसरण करा-नेमें दत्तचित्त बनें। सदाचारी बनानेमें हम अपने सदाचारकी छाप प्रत्येक व्यक्तिके हृदयपर डालें। हमारी भावना ही यही हो कि

ष्टाकी पराधीनता होनेपर भी दुःखी सुखी हम सदाचारी और विशुद्ध हृदयी हैं। विलायत इस समय व्यसनोंका घर और पापका पुंज होरहा है केवल दिखावा ही अच्छा है। क्या प्रथम समय भारतमें ऐसे राजा नहीं हुए? क्या उस समय यह व्यवस्था नहीं थी।

महात्मा तिलक भी यही कहते हैं कि "अपने कुलागत आचरणोंको पालते हुए समाजसेवा करनेसे ही भारतकी भलाई और सच्ची व्यवस्था रहेगी" भारतवर्षकी पद्धतिकी नीव बहुत गहरी और अभेद्य है। बहुत कालसे भारतवर्षमें यह व्यवस्था राजनैति-क कोविदोंने अधिक उपयोगी प्रमाणित की है। वर्तमानमें हम देखते हैं कि सब वर्णोंमें सहानुभूतिपूर्वक लेन देन व्यापार और अपनी व्यवस्थाके अनुसार सेवा करते हैं कैसा भी झगड़ा नहीं है।

'ये जीव कुमार्गका त्यागकर सन्मार्गगामी हों, इनका जीवन पवित्र हो चारित्रवान हो। आत्मविश्वासी हो और तत्वश्रद्धानी हो, बस यही भावना मानवजीवनमें अतिशय पवित्रता भर देती है। इस भावनासे निष्काम अभिमान नष्ट हो जाता है—पद दलित हो जाता है और घृणाके स्थानपर अनुकंपा बिराजती है। हमारे उग्र, चंचल और शासक स्वभाव बदलकर शांत धैर्य और सरल हो जाते हैं। मनुष्योंकी अनीतिकी ओर घृणा न होकर दया स्फुरायमान होती है और अपना मन उनको सुधारनेके लिये तथा उनको सुखी बनानेके लिये अत्यन्त आतुर होता है। इसी लिये उनकी अज्ञानतासे उत्पन्न हुए दोष और उनकी अविनय शांतितासे सहन करते हैं, उनके किये हुए उपद्रव सहन करते हैं इतना ही नहिं किंतु उनकी कृतिकी ओर अपना लक्ष न रखकर उनकी भलाई ही करनेकी शुभेच्छा रखते हैं। उनके किसी भी कार्यसे प्रेममें तिरस्कार बुद्धि नहीं होती है अतएव उनकी अवगणना, अपमान और निर्दयताकी असर महात्माओंके ऊपर बिलकुल नहीं होता है और वे निरंतर हित करनेमें ही जुटे रहते हैं।

जीवनप्रयाससे थके हुए असंख्य जीव मृत्युके लिये प्रयाण कर रहे हैं उनको सोत्साह बचनोंकी, आत्मबलकी और सेवाकी अभी अभी तत्काल आवश्यक्ता है यदि उनकी मृत्युके बाद बिखेरे हुए सुगंधित पुष्पोंको संग्रह करना चाहते हैं तो उनकी जीवित अवस्थामें उन पुष्पोंकी वृष्टि क्यों नहीं करते ?।

---

१ आज्ञापायविपाकविचयाय धर्म्यं।

मनुष्यके हृदयमें स्थगित रहे हुए-अवाच्य रहे हुए और जीभकी अणी (जिह्वाका अग्रभाग) पर 'कहूं-कहूं, करते हुए स्नेहयुक्त प्रेमी वचन श्रमित प्रवासियोंकी मृत्युके पीछे तो अवश्य ही कहे जांयगे तो फिर आज जब उन वचनोंकी प्रवासीको अत्यन्त आवश्यकता है-उन वचनोंके श्रवणकरनेसे प्रवासीके हृदयमंदिरमें आनंदध्वनि और उपकारबुद्धि उत्पन्न होती है तब फिर उन वचनोंको बाहर क्यों नहीं निकालते हो !

दिव्यसेवाकी 'आदर्श व्याख्या' यह है कि समस्त वस्तु स्थितियोंको अपने लिये सरल नहीं बनाना किंतु हमको स्वयं वस्तु स्थितिके अनुकुल बन जाना और दूसरोंकी सेवा करते समय यह अवश्य स्मरण रखना चाहिये।

दूसरोंको शक्तिशाली बनानेकी अपेक्षा उनके दुःखोंको कम करना कुछ सुगम है परन्तु कितनी ही वार "दुःखोंसे मुक्त करनेकी सेवा" अन्य सेवाओंसे गुरुतर है। मनुष्यको अधिक पवित्र विशेष बलवान-सद्गुणी और साहसी बनाना अनेक विघ्नोंको नाशकर देनेसे और आभ्यन्तर सेवासे होता है और वही श्रेष्ठ है।

किसीने सच कहा है कि दूसरोंकी सेवा करना हमारा सबसे अधिक पवित्र अधिकार है परन्तु अधिकतर मनुष्य भौतिक विषयमें ही सहाय कर सक्ते हैं-थोड़ेसे बाह्य कर्तव्योंमें सहाय कर सक्ते हैं, परन्तु जो मानवजीवनके अत्यन्त पवित्र कर्तव्योंमें और उनकी आभ्यंतर वृत्तियोंमें सहायभूत बन सके ऐसे मनुष्य विरले हैं।

प्रेम सदा देता है। **जो प्रेम दाता नहीं है वह प्रेम ही नहीं है।** दान करनेसे ही प्रेम हो सक्ता है अतएव अन्य जीवोंकी अत्यन्त आवश्यकताओंको पूर्ण करना दैवी आज्ञा है। हमें प्रकृतिदेवीके आज्ञानुकूल होना आवश्यक है।

जीवन निर्वाहमें सबसे अधिक आवश्यक वस्तु प्रत्यक्ष रीतिसे सहायता नहीं किंतु उत्साहका फूंकना है, क्योंकि एक जलते हुए मकानके गवाक्ष (खिडकी) में एक बालक निराश्रित और अल्प समयमें भस्मीभूत होनेकी तैयारीमें बैठा था, एक बंबावाला (फायरमेन) मनुष्य निसेनी लगाकर उस बालकको बचानेके लिये ऊपर पहुंचनेके लगभग हुआ ही था कि अग्निकी प्रचंड शिखाने खिडकीकी और पासकी जगह अत्यन्त तप्त करदी थी और तीव्र गरमी लगनेसे वह बंबावाला निसेनीके चक्करको फेरकर पीछे उतरनेके विचारमें था कि नीचेसे एक उत्साही मनुष्यने पुकारकर उसको उत्साह दिया कि तत्काल ही वह उन उत्साहित वचनोंको सुनकर अति भयानक जोखममें पड़े हुए उस बालकको मृत्युके पंजेसे बचा लाया। बहुतसे मनुष्य महान प्रयासमें थककर निष्फल हुए हैं उनको एक ही उत्साहजनक शब्द कहा गया होता तो वे सहज ही कठिन मुसीबतसे बच गये होते, उनके कार्योंमें

---

१ निष्काम प्रेम—(बुरी लालसाका प्रेम यथार्थमें प्रेम नहीं है। अपनी स्त्रीको छोड़कर और दूसरी स्त्रियोंपर मोहजनित विरुद्ध प्रेम करना और उसको प्रेम कहकर आनंद मानना प्रेमका खून करना है। यों तो चोरको चोरी करनेमें प्रेम है, कसाईको गाय मारनेमें प्रेम है, परन्तु ये प्रेम प्रेम नहीं, अधर्म है।)

सफलता अवश्य ही मिली होती और उनमें कार्य करनेकी अदम्य शक्ति इससे भी अधिक कठिनतर कार्योंको करनेमें सफल हुई होती। तुम्हारे मित्र जबतक मृत्युको न प्राप्त हों तबतक उनकी कोमल जिज्ञासाको दबाकर मत रखो। उनके जीवित कालमें ही मधुर रस भरदो। जब तक उनके कान कुछ भी श्रवण कर सके हों तबतक उत्साही, मीठे और प्रीतिसे भरपूर वचनोंको कहो। उनकी मृत्युके पीछे जो कुछ तुम कहना चाहते हो, वह उनके (जवित) रहते हुए कहो. जिस उपदेशसे तुमारा फायदा हुआ है उस उपदेशको कहो। उससे अवश्य लाभ होगा। जिस सम्पादक या लेखकके ओजस्वी लेखसे तुमको लाभ हुआ है उस संपादक या लेखकको अतिशय विनीत भावसे आभारदर्शक पत्र लिखो तो वह दूसरी वार- उससे अधिक उत्तम लेख लिख सकेगा। जिस ग्रन्थके पढनेसे तुमको अपूर्व बोध हुआ हो—सजीव ज्ञान उत्पन्न हुआ हो, पूर्ण जाग्रति उत्पन्न हुई हो तो उस ग्रन्थकारका पवित्र अंतःकरणसे आभार मानो। क्या उस कर्ताका उपकार प्रदर्शन करनेके लिये तुम कृतज्ञ नही हो? थके हुए मनुष्योंको, बिछुडे हुए मनुष्योंको और कार्यसे क्षीण हुए मनुष्योंको अनन्य भावसे परम प्रियतम बंधु बनाकर उनके निराशासे अत्यन्त क्षीण हृदयमें दिव्य तेजस्वी उत्साह फूको और उनको कार्य करनेमें शक्तिशाली बनाओ। साम्यभाव और शक्तिवादका दिव्यदर्शन ओजस्विनी मीठी भाषामें सुनाकर उनको कर्तव्यशील बनाओ—सत्याग्रही बनाओ। उनके शिथिल हाथोंमें दिव्य अखंडित कर्तव्यका त्रिशूल रखो, उनके क्षीण और कुमलाये हुए मनमें दिव्य

ज्ञानामृतका सिंचन करो, नैतिक बल पहुंचाओ, निर्बल हृदयमें स्वात्मबलका गान सुनाओ–"त्रिलोकविजयी सोऽहं" का पाठ सुनाओ। स्वाभिमानसे उन्नत करो। स्वावलंबी बनना सिखलाओ और पवित्र स्वतंत्रताका दिव्य स्वाद चखनेमें १ क्रमी बनाओ।

आर्थिक सहायतासे अपने जीवनको सरल और सुखपद बनानेवाले श्रेष्ठ मित्र नहीं हैं किन्तु अपनी हिम्मत, आत्मशक्ति और दृढताकी प्रेरणा करनेवाले ही उत्तम मित्र हैं। बाहरकी लालनपालनकी दिलासासे अनेक मनुष्योंके जीवन खिलते हुए रुक गये हैं। अनेक ऐसे मातापिता हैं जो प्रेमके अति उमंगसे अपने बच्चोंके (जितना प्रेम करना चाहिये उनसे बहुत अधिक–अमर्यादित) अमर्यादित लाड प्यारसे उनका बहुत बुरा अहित कर बैठते हैं और बालकोंके करने योग्य कर्तव्योंको वे स्वयं कर देते हैं अथवा भृत्य लोगोंसे करा देते हैं। उनको चाहिये कि बालकोंके कार्य स्वयं बालकोंको ही करने दें–उनकी कठिनाइयां और उनके कार्योंमें होनेवाली अडचनें (विघ्न बाधायें वे स्वयं दूर करें। वे अपने कर्तव्योंके सन्मुख होनेवाली बाधाओंका पूर्ण उत्साहसे सामना करें। बस यह बालकोंको बचपनसे सिखलाना चाहिये।

---

१ स्वतंत्रता और स्वेच्छाचारीमें बहुतसा भेद है। स्वतंत्रता उपासक धर्मनीति, राजनीति और व्यवहारनीतिके आधीन होकर अपनी आत्माको विकसित करता है, कर्म शत्रुकी आधीनताको छोड़कर स्वावलंबी बनता है–स्वतंत्र होता है, परन्तु स्वेच्छाचारी अधर्म करता है, मन और इंद्रियोंकी विवशतासे भलेबुरे काम या झूंठे प्रेममार्गमें चलनेको स्वतंत्रता मानता है, यहां माता पितादि गुरुजनोंकी आज्ञा न पालन करनेमें स्वतंत्र होता है यह नहीं। हमारे कार्यमें किसीकी रुकावट न होनी चाहिये, हमारी शक्तिके विकाश होनेमें कोई भी व्याघात न करें।

मित्रो ! सदा शक्तिसे अधिक सहायता करनेको चाहते हैं, जब कोई मित्र विपत्तिका मारा हुआ अपने पास आवे तब आत्माका आंतरिक मित्रभाव एकदम उसकी विपत्तिको दूर करनेके लिये प्रेरणा करता है परतु वह विपत्ति यदि हम स्वयं दूर करें तो मित्रसे दूर होनेकी अपेक्षासे हजार गुणित श्रेष्ठ है।

जब हम सर्व मनुष्योंके सच्चे प्रेमका जीवन चाहते हैं तब ही हम अपने उद्देशोंकी पूर्ति करसक्ते हैं। अपने संबंधमें आने-वाले प्रत्येक मनुष्यके लिये हमारे पास कुछ संदेशा है। हमको मिलनेवाले मनुष्योंका कभी कभी तो हमारी भेटसे (मिलापसे) लाभ होना चाहिये। हमारा कुछ असर और हमसे किसीका भी लाभ होना चाहिये। जब जब गरीब मनुष्य हमारे पास कुछ भी सहानुभूतिके लिये आते हैं तो समझना चाहिये उनके कर्म ही हमारे पास आनेके लिये प्रेरित करते हैं, हमारे निमित्तसे अवश्य ही उनका भला होनेवाला है अतएव हमको दिल खोलकर उसकी भलाई करनी चाहिये। ससार दुःखपूर्ण है किसी महान पुण्य कर्मके उदयसे यह योग हमको प्राप्त है, इसलिये हमको यह अवसर व्यर्थ न खोना चाहिये और आगत दुःखी मनुष्योंको आश्वासन देना चाहिये। दूसरी सर्व कलाओंसे आश्वा-सन प्रदान करना यह कला विशेष गभीरतासे सीखना चाहिये।

दान, अनुग्रह और सत्कार्य ये सब ही अर्थद्योतक हैं—सबका सार एक ही है। मनुष्योंकी दानपद्धतिमें भेद है। एक मनुष्य उच्च भावना और मिष्ट वचनोंसे केवल दान ही प्रदान करता है—स्वात्म समर्पण कर देता है कितने ही पुष्प देखनेमें बहुत

ही सुंदर मालूम पड़ते हैं परन्तु सुगंधित नहीं होते हैं जिन पुष्पोंमें सौन्दर्य और सुगंधी होती हैं वे ही अधिक उत्तम हैं, श्रेष्ठ है। हम लोगोंको अपने दानके साथ स्वात्म-समर्पण भी करना चाहिये। प्रत्येक परोपकारी कार्योंमें अपने जीवनका कुछ भी भाग अवश्य लगाना चाहिये।

हस्तमिलापमें स्वागत करनेमें और साधारण बातचीतमें एवं मार्ग चलते हुए अपने मुखपर विकसित हृदयके भावोंमें भी कितनी प्रबल सेवा समाईहुई है। तूफानी समुद्रकी वेगवती लहरियोंपर चटकती ज्योत्स्ना (चंद्रमाकी चांदनी) यद्यपि तूफानको रोक नहीं सक्ती तो भी उसकी छटाको भव्य (सुंदर) तो अवश्य ही बना सक्ती है। मार्गमें चलते समय यदि कोई मनुष्य मिल जाय तो उसके साथ सभ्यतासे वर्ताव करना और खुशी राजीके प्रश्नकर स्वागत करना चाहिये। इससे मनुष्यका सारा दिवस आनन्द, आनन्दमें व्यतीत होता है। किसीसे विरोध कर रहना अथवा विरुद्ध वर्ताव करना-मुर्देको लेजाते समय जितनी विकलता होती है उससे-कई गुणा बुरा है-खेदजनक है। आनंदी मनुष्य गीतके स्वर समान आनंद प्रवाहित करते हैं। इस प्रकार परोपकारका अपने लिये कितना मार्ग खुल जाता है।

जे० आर० मिलर।

इस भूमंडलपर जितने दुःख हैं उनमेंसे अधिकतर तो मनुष्यकृत ही हैं। यदि हम लोग दूसरोंके हितके लिये कुछ भी उद्योग करें तो अवश्य ही जनसमुदायके बहुतसे दुःख कम हो सक्ते हैं।

यदि हम अपने दैनिक कर्तव्योंमें अथवा दिनचर्यामें व्यवसायमें अपने मित्रोंको "वे अंतिम शयन कर रहे हैं" विचार करलें तो हमारा उनके प्रति कैसा भिन्न अभिप्राय हो ? हमारी धारणा किस रूप परिवर्तित हो जाय ? उनके प्रति २ कितने उच्च विचार स्फुरायमान हों, उनकी भलाईके लिये २ मन कितना तडफ उठता है, उस समय यदि कदाचित् उनसे कोई भूल भी हो गई हो तो प्रायः सब जनें विस्मरण कर देते हैं— भूल जाते हैं। इसके लिये कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। ऐसे मौकेपर प्रत्येक मनुष्यका स्वभाव ऐसा ही कोमल और दयार्दित सरल हो जाता है, वैरभावको भी भूलकर सेवामें तन्मय हो जाता है। उस समय अपनी दृष्टिके समक्ष मनुष्योंकी भलाई, निःस्वार्थता और प्रेम ही प्रेम नजर आते हैं और हमको इस बातका पश्चाताप होता है कि प्रेमके बदले कुछ अधिक भलाई नहीं करसके। हमलोग मृत्युको भूलजाते हैं परंतु नित्य ही ऐसी मृत्युरूप घटना देखते हैं। जिसको हम आयुष्य

(१) मृत्यु-आयुषका क्षय होजाना है-जितने श्वासोश्वासबद्ध हैं उनकी निर्जरा ही मृत्यु है। संसार विनाशीक है। इसमें सब कोई नियमसे नष्ट होता है-मरता है। पुत्र-मित्र-कलत्र और बंधुओंका कर्मजनित सयोग हुआ है। पक्षीगण एक वृक्षपर आकर वास करते हैं और प्रातःकाल होते ही उड़ जाते हैं। संसार जन्म मरण आधि व्याधि आदिसे परिपूर्ण है; इसमें जीव असह्य दुःख भोग रहा है। यदि हमको मनुष्य जन्म जो कि सर्वोत्तम है मिल गया है तो हमे सार्थक करना चाहिये। हमें और हमारे मित्रोंको संसार बधनसे मुक्त होना चाहिये इसीलिये हमे निरंतर विचार करना चाहिये कि ये जगवासी जीव कब अपने कष्टों (कर्मों)से छूटें और कब ये आत्म-लाभ प्राप्त करें-जगदुपकारी और श्रेष्ठ बने।

कहते हैं वह मृत्यु ही है। वह मृत्युकी उच्चतर जीवनकी प्रारंभ अवस्था है। इस विषयमें हम कितना थोडा विचार करते हैं। ऐसे विचारोंसे हमें हमारा जीवन निस्तेज और अनुपकारी नहीं बनाना चाहिये किन्तु सतेज और उपकारी बनाना चाहिये। जिनको हम अपना सर्वस्व मानकर बैठे हैं वे कितनी साधारण वस्तु हैं और अंतमें जहांकी तहां रहनेवाली हैं, क्यों इस बातका भी विचार उत्पन्न हुआ है। हमको (सोतेसे उठकर) जाग्रत होकर यह विचारना चाहिये कि मैं प्रातःकाल ही अपने मित्रोंको संसारके कष्टोंसे किस प्रकार दूरकर सकूंगा—ये संसारमेंसे कब निवृत्त हों। „ऐसा विचार होनेसे जिनको हम असह्य दुःख समझकर भयभीत होते हैं उनको कितने हम सहन कर सकेंगे। तुम्हें मृत्युका चिंतवन करना चाहिये। जिसको तुम अपना समझते हो वह तुमारे कर्मके निमित्तसे एक संबंध है अथवा ऐसा मानना चाहिये कि ये तुमारे कुछ भी नहीं हैं इस लिये इस अल्प जीवनमें जो कुछ तुमसे जितनी भलाई हो सके उसको अतिशीघ्र करलो। यदि हम निःस्वार्थसेवा, हार्दिकप्रेम और सच्ची भलाई करेगें तो हमें अवश्य ही शुभ कर्मका बंध होगा। और वह हमारे साथ साथ परलोकमें अतिशय कल्याणकारक होगा। वही हमारे साथ रहेगा।

मेक्समूलर.

दूसरोंके दुःख दूर करोगे तो यह समझना चाहिये कि तुमारे ही सब दुःख दूर हुए। तुमको दूसरोंकी भलाईकी चिन्ता निरंतर रहेगी तो तुम्हें अपनी चिन्ता करनेका अवसर ही नहीं मिलेगा।

जो तुम्हारा मित्र कुमार्गगामी होगया हो तो तुम पर्वतकी शिखा समान अपनी उच्च स्थितिमें पहुंचकर ऊपरसे उसके साथ वातचीत

मत करो, किन्तु उसके पास नीचे आकर उसको कहना चाहिये कि हे बंधो ! मैं और तुम कुछ जुदे थोडे ही हैं,—हम तुम सब एक ही हैं, मुझे कुछ अपनी उत्तम स्थिति (द्रव्य—ज्ञान आदि) का अभिमान नहीं है। यह जो कुछ है वह तुम्हारा ही है। तुमको कुमार्ग-गामी समझकर मैं अपनेको अच्छा समझता हूं ऐसा नहीं है । मैं तुम्हारे पतनसे दुःखी हू और तुम्हारी इस पतन अवस्थाको दूर करनेके लिये ही मैं तुम्हारे पास आया हूं—मैं तुम्हारा उद्धार चाहता हूं । इस प्रकार अतिशय नम्रभावसे मीठे हितकारक बचनोंसे उसका उद्धार करो । उन्नतिकी शिखरपरसे नहिं, किन्तु सामान्य और परिचितनिर्बलताकी कसोटीमें रहकर उसका उद्धार करो ।

लोभ ही स्वस्नेह है और उसका रहस्य 'संग्रह' है, आत्मा सर्वत्र दयाकी दृष्टि करता है और लोभ (अपना आंतरिक प्रेम) सुवर्ण बनाता है । आत्माकी दया अपने लिये नहीं किन्तु सबके लिये है ।

जार्ज मेथेसन ।

किसी भी जीवको मैं आनंदी बना सकूं अथवा आनंदका अंकुर उत्पन्नकर सकूं तो ही मैंने अपनी आत्माका कर्तव्य पालन किया ऐसा मुझे समझना चाहिये ।

समस्त जगत अनंतानंत प्राणियोंसे भरपूर है, अनंतजीव इसमें खिलरहे हैं. वे सब शक्तियें परमात्माके समान हैं ! सेवा एक प्रकारकी पूजा है । साधारणसे साधारण सेवा भी दिव्यपूजा है। यदि समस्त जीवोंकी सर्वोत्तम सेवा (जिससे वह जीव संसारके बंधनसे मुक्त होजाय—कर्ममल रहित हों ।) हम करसकें तो समझना चाहिये कि हमने परमात्माकी महापूजा की ।

रत्न अथवा पुष्पोंकी मालाके बदले अपने मित्रोंको 'सुंदर विचारों' की भेट समर्पण करना चाहिये।

लोगोंको द्रव्य, अन्न आदि बहुतसा प्रदान करना एक प्रकारसे उनको खराब करनेका मार्ग है। उनको भला करनेका तो उत्तम मार्ग यही है कि उनकी आत्माको उत्कृष्ट बनाओ।

मनुष्य मनुष्यकी सहायता करसक्ता है। मनुष्य सिवाय मात्र पैसासे कोई भी कुछ नहीं कर सक्ता। उलटा अहित होनेकी संभावना है। जार्ज मेकडोनल्ड।

अज्ञानी मनुष्य भले ही कुछ आरोप (दोष) रखें और द्वेषी मनुष्य भले ही तिरस्कार करें, परंतु जीवमात्रको प्रेम करनेवाले कभी उससे डरेंगे नहीं। जिनकी आत्मामें प्रेम है वे प्रतिदिन अधिक बलवान बनेंगे, उनको अधिक समय सहन नहीं करना पड़ेगा।

जो दूसरोंकी भलाईके लिये स्वयं दुःख सहन करता है इतना ही नहीं किंतु अन्यकी भलाईके लिये जो अपने प्राणोंकी आहुति कर देता है वह स्तुत्य आत्मा है, पवित्र है।

लु मोरिस।

अन्य जीवोंकी मुक्तिके लिये परिश्रम किये विना अन्य किसी दूसरी रीतिसे मुक्ति नहीं मिल सक्ती है।

भले ही किसी भी प्रयत्नसे सद्विचार अथवा अपनी शुभेच्छाके आधीन होकर किसी भी पुण्यकार्यमें अपनेको लगना चाहिये, अन्यथा हम पाप भागी हैं, इसमें संदेह नहीं। मेझीनी।

महान कार्य करनेकी मार्ग-प्रतीक्षाका अवसर देखते रहना '**कोई मौका मिले तो बड़ा कार्य करें**' इस बातकी

प्रतीक्षा करते रहना ठीक नहीं, क्योंकि तुम्हारा समग्र जीवन इस प्रकारका प्रसंग देखनेमें ही व्यतीत होजायगा और प्रसंग हाथ आयेगा नहीं। अपनी आत्माको प्रसन्न करनेके लिये और संसारीकी भलाईके लिये जो अवसर छोटेसे छोटा सहज मिल गया हो उसका तो लाभ लो। बड़ा मनुष्य बनकर उच्च कोटिका महान कार्य अनेक प्रति स्पर्धिओंके बीचमें होकर और अनेक विघ्नबाधाओंको सहनकर महा पराक्रम प्रसिद्ध करनेकी अपेक्षा गुप्त रीतिसे छोटे छोटे कार्योंमें निरंतर लगे रहना विशेष कठिन और पराक्रम भरे हुए हैं।

प्राप्त स्थितिमें प्रामाणिकतासे कर्तव्य पालन करना, प्राप्त साधनोंका प्राप्त सेवामें उपयोग करना, धर्मवीरोंके समान अतिशय पीडा और क्रोधको सहन करना, उससे दुःखित होते हुए पुरुषोंके उच्च गुणोंको ढूंढ़ निकालना। निर्दय कार्यों और बीभत्स शब्दोंका भी अच्छेसे अच्छा सार ग्रहण करना, तथा कृतज्ञ और दुष्ट पुरुषोंकी चाहना करना आदि सब कुछ आत्मप्रशंसाके लिये नहीं किंतु आत्मवृत्तियोंका उपयोग करने और उनका विकाश करनेके लिये हैं तथा यही आत्मधर्म है। और ऐसा समझना ही अपने जीवनको महान जीवन बनाना है। एफ० बी० मेअर।

साम्यभाव दृष्टि (जिसको अपनी आत्मा ही जान सके) से दयासे अस्फुट मधुर वचन और मनुष्योंसे गुप्त परन्तु आत्मभावनासे प्रकट शुद्ध स्वार्पण किये हुए कार्य कभी भी व्यर्थ नहीं होते।

परमार्थवृत्तिसे की हुई दयाकी योजना, और विपथगामी पुरुषको पापमार्गसे छुडाकर पुन्यमार्गमें प्रवृत्ति करनेवाली मधुर अनुकंपा कभी भी व्यर्थ नहीं होती। मेटकाफ।

जीवन क्षणभंगुर है और कर्तव्योंकी सीमा नहीं है तो तुम अपने कुटुंबके निमित्त ही अपना जीवन व्यतीत करो।

क्या! तुमने अपने बालकोंको शिक्षण दिया है? गरीबोंकी भेट कुछ ली है? और प्रार्थनाका कार्य किया है?

जो दयापूर्ण प्रतिशोध करे विना कभी सहायता नहीं करती है और जो अत्यन्त आवश्यकीय आवश्यकताओंका भी विश्वास नहीं कराती है उसको मैं नहीं चाहता। मेसीलोन।

जगतमें जो जो उच्च है, जो कोई सर्वोत्कृष्ट हैं, महान् उपयोगी हैं और जगतके भूषण स्वरूप हैं वे स्वार्पण (आत्म समर्पण) से ही सिद्ध हुए हैं। व्हाइट मेलविल।

सहायता न मिल सके ऐसे तो अनंत प्रसंग होते हैं परंतु हम सहायता न प्रदानकर सके ऐसा एक भी प्रसंग नहीं है।

ज्यार्ज ऐस०

जब तक कोई भी मनुष्य दुःखी है तब तक प्रेमसे संतुष्ट नहीं है। और जबतक पापसे संतुष्ट नहीं हुआ है तब तक प्रेमसे निवृत्त नहीं होना चाहिये।

भावार्थ--हमें इतना प्रेम करना चाहिये कि एक भी मनुष्य दुःखी न रहे और सर्व मनुष्योंको पापमार्गसे जबतक मुक्त न कर दें उनको शुभमार्गगामी न बना दें तबतक अपने प्रेमसे संतोष नहीं मानना चाहिये। ए० मेकेनल।

अपनी स्वार्थवासनाके लिये मात्र जीना यथार्थमें श्रेष्ठ नहीं है, किंतु कुछ भी तो परस्पर एक दूसरेकी सहायता अवश्य करनी चाहिये । मीनेन्डर ।

जब कोई तुमको सहायता करना चाहता हो तब तुमको यह स्मरण रखना चाहिये कि तुम सहाय लेते समय अपनेको कितने प्रमाणमें भूल गये हो, ठीक उतने प्रमाणमें तुम भी उसकी सहायता खूब अच्छी तरहसे करो । मोन्सेल ।

हमने अपना जीवन (मनुष्य जन्म) बहुत ही पुण्यकर्मसे प्राप्त किया है, वह अलभ्य जीवन आलस्य और निरर्थक विचारोंके लिये नहीं किंतु शुभ कार्योंके लिये है । हमको हमारे विचार जल-कल्लोल समान (उत्पद्यन्ते विलीयंते) बड़े बड़े ही मात्र नहीं करने चाहिये किंतु सत्कार्योंका पालनकर जगतमें अंकित करना चाहिये । ईश्वर प्रार्थनासे अपने ऊपर संतुष्ट नहीं होता किंतु कार्योंसे सन्तुष्ट होता है । ई० एल० मेगुन ।

पत्येक मनुष्य यथाशक्ति मनुष्योंकी आवश्यताओंकी अधिक सहायता कर सक्ता है । हमको हमारी शक्ति (कर्तव्योंकी) विकसित करना चाहिये । और 'हममें शक्ति' है, इस बातसे अपने मनमें दृढ रहना चाहिये । कार्य कैसा ही हलका और छोटा

---

(१) ईश्वर (God) न किसीसे प्रसन्न होता, न ईश्वरको भलाबुरा कहनेसे अप्रसन्न होता है। ईश्वरके न राग है न द्वेष है । ईश्वर अपनेसे प्रसन्न होकर अच्छा करे तो ईश्वरके इच्छा, द्वेष आदि होनेसे अनेक दोषोंका भागी होगा । जबतक मनुष्यके इच्छा होती है तबतक अनेक विडंबनायें स्वयं अभ्यंतर प्रादुर्भाव होती हैं-इच्छा जीत लेना ही परम मोक्ष है ।

हो परन्तु उसको करनेके लिये सदा सन्नद्ध रहना चाहिये। आत्म विश्वाससे कार्योंमें निरंतर लगे ही रहना चाहिये और मृत्युपर्यन्त यह व्यवसाय नहीं छोडना चाहिये। नोरमन मेकलाउड.

अपनी एक सर्व चिंता यही होनी चाहिये कि अपने मित्रोंमें अधिक प्रेम-संचार हो; पर्वतकी उच्च चोटीसे प्रवाहित प्रेमका एक अल्प झरना भी साधारण उदारतासे व्याप्त सैकडों कुंडोंसे अधिक सुखकर और मूल्यवान है। मेटरलीन्क।

चाहे हम जीवन अवस्थामें हों, अथवा मृत्युरूप हों परंतु हमारा मुख्य उद्देश 'सेवा' है। यही हमारा मूल मंत्र है। इसलिये हमें अपने जीवनमें दूसरोंकी सेवाकर आनंदित रहना मुझे अधिक प्रिय लगता है। जहांपर मुझे सेवा करनेका अवसर मिलता है वहांपर ही मेरा गृह है ऐसा मालूम पडता है। जार्ज मेरीडीथ।

जो कोई एक महान कार्य कर ले तो उसको ही परमात्मपद प्राप्त होगा ऐसा नहीं समझना चाहिये। रत्नजड़ित सुवर्ण प्यालेमें रक्खे हुए सुगंधीयुक्त अल्प जलकी अपेक्षा स्वाभाविक शीतल और मधुर झरनेके जलका माहात्म्य अधिक उच्च है।

मेक्लेरन।

इस संसारमें सेवा करनेके प्रसंगोंकी कमी नहीं है, परंतु अपने मोहके लिये मकरंद (शहद) लेनेमें पुष्पोंका स्पर्श करते ही प्रथम कांटे चुभ जाते हैं। मेसी।

कोई असामान्य विरली वस्तुके प्रदान करनेसे ही जनसमूह अधिक सुखी होंगे ऐसा नहीं है, किन्तु सामान्य और सर्व साधारण उपयोगी वस्तुएं प्रदान करनेसे तथा आरोग्यज्ञान, सूर्यको

अरुण अरुण बाल किरणें, ताजी हवा, मित्र, प्रेम, मार्गमें प्रदर्शित किये स्नेहयुक्त एक भी शब्द, स्नेहभरी दृष्टि, करुणा पूरित मधुर हास्य और छोटी छोटी वस्तुयें मनुष्योंको सुखी करनेमें गुप्त रीतिसे विशेष उपयोगी होती हैं। जी० एस० मोरीसन।

मानव जीवन वर्षोंसे परिमाणित नहीं होता है, किन्तु खाना पीना सोना तिमिरावृतमें अज्ञरूप निर्जीव पड़े रहना, ज्ञानप्रकाशमें देदीप्यमान सुंदर अवस्थामें सचेत रहना, निन्यानवेके फेरमें पड़कर हाय द्रव्य हाय द्रव्यके चक्करमें गोता खाना, बुद्धिबलकी परीक्षा हिसावमें ही कर उसमें मस्त रहना और व्यापारवृद्धिकी चिन्ता करना ये सब क्या जीवनके साधन नहीं है? इन सबमें एक प्रकारकी मानसिक भावना जागृत होती है, परतु जबतक हमारे हृदयमें इन भावनाओंकी ही जाग्रति है और आत्मीक अन्य वृत्तियोंका लक्ष नहीं है तबतक तो जीवनकी श्रेष्ठ और अमूल्य वृत्तियां निद्रित रहती हैं। ज्ञान, सत्य, प्रेम, सद्वृत्ति,

(१) आत्मामें अनंत गुण हैं। वास्तविक आत्मा अनतज्ञान-अनंतदर्शन अनत वीर्य-और अनंत सुखमयी है और आत्मधर्म (ज्ञान-सत्य-क्षमा-सरलता-निरहंकारता-सच्चरित्रता-पवित्रता-क्रोध मान माया लोभ-मद काम मोहका अभाव, परमशातता आदि अमूर्तिक गुण है। इन धर्मों (गुणों) पर कर्मका आवरण होरहा है इससे आत्माका स्वभाव बिलकुल ढक गया है-विपरीत होरहा हैं। ज्यों ज्यों हम अपनी आत्माके गुण विकसित करते जायंगे त्यों त्यों कर्मोंका वह आवरण हलका होता जायगा अतएव हमको आत्मगुणोंको विकाश करनेके लिये हिंसा-झूठ, चोरी, कुशील (व्यभिचार) परिग्रहका त्याग करदेना चाहिये और सप्त व्यसन (जूआ खेलना-मास खाना-शराब पीना-वेश्यागमन करना-शिकार खेलना-

सर्वज्ञ परमात्माकी आस्था और आत्म भावना ये सर्व आत्माके विकसित करनेकी जननी हैं, इन हीमें आत्माका अनंत सुख और अनंत वीर्य भरा हुआ है। मिस मार्टिनो।

जिस जिस प्रकार जनसमूहकी अधिक सेवा की जाती है उसी २ प्रकार अधिक मिष्ट फल लगते हैं। मिल्टन।

सच्चा साम्यभाव सदा पवित्र है। वह उत्साह फूंकता है—और अपनी सहायतासे हमको सत्य वस्तुओंका निरीक्षण कराता है, बल प्रदान करता है और मनुष्योंको उन्नत बनाकर अंतमें परमात्मपदपर पहुंचा देता है। वह दुष्ट आचरणोंको चूर चूर-कर निःशेष कर देता है। और सदाचरणादि पवित्र गुणोंको विकसित करता है—जागृत करता है। वह आत्माकी सद्वृत्तियोंको प्रकट करता है और कुवृत्तियोंका नाश करता है तथा दुष्ट मार्गका पिंड छुड़ाकर सन्मार्गगामी बनाता है। उसके अंदर स्वर्गीय सुखका प्रवाह चमक रहा है इसलिये अपलक्षण अथवा स्वेच्छा-चारी उससे कभी उत्पन्न नहीं होती, नीच मार्गका उत्तेजन नहीं मिलता है। वह क्रोध शांत करता है मोह, मायाको विलीन कर देता है, दुःखोंको नष्ट करता है, नीचताको धिक्कारता है।

चोरी करना और परस्त्रीसे व्यभिचार करना) छोड़ देना चाहिये, दया पालन करना चाहिये, उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव (अहंकार न करना), उत्तम आर्जव (सरलता) उत्तम सत्य, शौच (लोभ नहीं करना), संयम (मन और अपनी इंद्रियोंको वश रखना), उत्तम तप, उत्तम त्याग, (दान करना, रागद्वेष त्याग करना), उत्तम आकिंचन (पर पदार्थोंसे मोह न करना), व उत्तम ब्रह्मचर्य धारण करना चाहिये। कर्मोंसे छूट जानेपर आत्मा स्वतंत्र और सुखी होता है।

उच्च सच्चरित्रताकी इच्छा करता है। और वही मनुष्योंको मित्र बनाता है। वह पद आकाशके तारोंसे उच्च है, अन्नकी अपेक्षा वह अधिक स्वादिष्ट है। प्रकाशकी अपेक्षा विशेष आह्लादित है, अधिक सुवासित है और संगीत अपेक्षा अधिक मधुर है।

एफ० ए० नोबल।

मानव हृदय ऐसा है कि ज्यों ज्यों वह अधिक व्यय हो त्यों त्यों वह सद्विद्या और कूपजल समान अधिक बढ़ता है, पूर्ण रूप होता है। सेवा करनेसे हम अधिकार चला सक्ते हैं। जो वस्तु दानमें देना है वह अपने पास ही है। हम लोग स्वयंसेवक बनकर दूसरोंको सेवक बनायेंगे तभी हम विजयी कहलावेंगे। और स्वार्थको निमग्ण करने ही हम लोग उन्नत होंगे।

जे० एच० निमेन।

एकका बोया हुआ दूसरा लुनना है-फल प्राप्त करता है। 'हम लोग बोते हैं तभी हमारे वंशज भोगते हैं', यह कहावत (उक्ति) बहुत अंशोंमें सत्य है परन्तु वह सर्वांशमें सत्य नहीं है क्योंकि कुछ अधिक विचारकर देखेंगे तो यही निश्चय होगा कि हमने अधिक श्रमसे कुछ बोया नहीं है इसलिये हम अधिक सुखी नहीं है।

डब्ल्यु रावर्टसन निकोल।

दयाके आवरण नीचे छिपे हुए (गुप्त) स्वार्थसे हम ऐसा

---

१. हम बोंगे और फल अन्य कोई दूसरा भोगेगा, यह उक्ति सत्य नहीं किन्तु 'हम बोंगे और हम ही फल भोगेंगे, 'जो जैसा करेगा वह वैसा पावेगा' सत्य है। अर्थात् हम जैसे भलेबुरे कर्म करेंगे उनका फल (पाप पुन्य) हमको ही भोगना होगा। ईश्वर भी उन कर्मोंको नहीं हटा सक्ता इसलिये सदा भला करना चाहिये।

मानते हैं कि हम दूसरोंकी भलाई नहीं करते हैं किन्तु अपना कल्याण।

जो अपने जीवनमें गरीब मनुष्योंके प्रति प्रेम रखता है वह मृत्युसे नहीं डरता है।

'सब जीवोंके साथ साम्यभाव रखो' यही परमात्माकी आज्ञा है अतएव हम गरीब मनुष्योंसे हार्दिक करुणाभाव व्यंजित करें—दया बतलावें—बंधुभावसे बर्ताव करें तो ही हम इस आज्ञाका पालन करसक्ते हैं। हम सब जीवोंको आत्मीय जनके समान समझना चाहिये इसी लिये उनके प्रति दयाभाव प्रदर्शित करना ही आज्ञापालन और साम्यभाव है।

हमारी आत्मा हमें साक्षीसे कहती है कि 'सत्कार्य कीर्ति प्राप्त करनेके लिये नहीं किन्तु कार्यसे होनेवाले परिणामके लिये करना चाहिये। इसी लिये अपने पड़ोसियोंको बन्धुभावसे सुधारनेके लिये हमको भी आत्मभावनामें दृढ़ होना चाहिये। अथवा परमात्म पदका ध्यान करना चाहिये—परमात्ममय होना चाहिये। विशेषकर जबसे हमारी अशुभ परिणति बहुत समयसे स्वाभाविक पापमय हो रही हो ऐसी आदत पड़ गई हो तो बका-

२. साम्यभाव और साम्यवाद इन दोनोंमें बहुत भेद है। सब जीवोंको आत्म समान बंधु समझकर जिसप्रकार सुख हमको प्यारा लगता है उस प्रकार सब जीवोंको, इसलिये सब जीवोंपर दयाभाव सदा रखना—सबको सुखी करना—और दुखसे मुक्त करना इस प्रकार अहिंसा तत्वका पालन कर किसी जीवका घात नहीं करना साम्यभाव है। और जीव मात्र (मनुष्यमात्र) एक सदृश है—समान है इस बुद्धिसे नीतिको तिलांजुलि देकर एकसा बर्ताव करना।

एक ऐसी बुरी आदत एकदम नहीं जासकती, ऐसा मानकर अपने कर्तव्योंसे च्युत नहीं रहना चाहिये क्योंकि पापके कारण भले ही कुछ हो परन्तु अपनेको तो ऐसी आदतको दूर करनेमें लगा ही रहना चाहिये । सेइन्ट विन्सेन्ट ड. पाल ।

अपकारको भूल जाकर अपने हृदयपटपर उपकारको चित्रित करो । प्लेटो ।

एक छोटेसे वादलका टुकड़ा भी सूर्यको आच्छादित कर देता है । हारमेंसे लरका एक गुण (डोरा) टूट जानेसे समस्त मोती विखर जाते हैं । एक ही विचारसे आत्मा क्षणभरमें भ्रष्ट हो जाती है । एक ही (क्रूर) वचनसे हृदयमें गहरा आघात होता है । इसलिये हृदयकी श्रेष्ठ विभूतियोंका दान करो : प्रकृति सब कुछ प्रदान कर देती है उससे कुछ शिक्षण लेकर तुमारे आभ्यंतर रही हुई श्रेष्ठ वस्तुओंका दान करो । और कुछ प्रतीकार (वदला) लेनेकी इच्छा मत करो । यदि तुम अल्प संचित किये हुए-मेंसे कुछ भी प्रदान करोगे तो उन कर्मोंका फल सहस्र गुणा फलित होगा ।

ऐ० ऐ० प्रेक्टर ।

गुप्त सेवाकर और वह कदाचित् प्रसिद्ध होजाय तो लज्जाको प्राप्त हो । एक भी गरीव मित्र विपत्तिमें ग्रसित हो और मैं अपना स्मारक बनानेके लिये बहुतसार द्रव्य मरण समय प्रदान करूं तो मैं लज्जाका पात्र हूं । इसकी अपेक्षा तो वह द्रव्य किसी अन्यको प्रदानकर उसको सुखी और आनंदी देखकर मुझे असीम आनंद प्राप्त होगा ।

दूसरोंके दुःखसे दुःखी होना और उनके दोषोंको गुप्त रखना मुझे सिखाइये, कि जिससे मैं उनके प्रति दया बतला सकूं और इस प्रकार मैं भी दयाका पात्र हो सकूं।

भू गर्भमें स्थापित लक्ष्मी पक्षियोंके बच्चोंके समान पंख आनेकी प्रतीक्षाकर रही है। और योग्य समय आनेपर तत्काल उड़ जाती है। **उदार और न्यायी** बने सिवाय कोई भी द्रव्यसे कीर्ति, विश्वास और संतोष, एवं सुख नहीं मिलता है।

संसारमें धर्म और परलोक (जमान्तर) के विषयमें अनेक मत मतान्तर रहेहींगे परन्तु दया (**अहिंसा**) के सिद्धान्तोंकी तो सर्वत्र मान्यता है। इस विषयमें सर्व मनुष्योंका एक ही मत है।

पोप।

प्रेम पूर्वक छोटेसे छोटा भी दान यथार्थमें महान है। जो कंजूस अलग रहकर अपने निरुपयोगी द्रव्यका जगतकी भलाईके लिये उपयोग नहीं करता है वह धिक्कारपात्र है। उदार मनुष्य ही लक्ष्मीका उपभोग कर सके हैं, उनका ही द्रव्य परोपकारमें लगता हैं जिससे वे अनायास ही कीर्ति और मित्रोंकी प्राप्ति कर लेते है। और विपत्तिके समय वे सुरक्षित आश्रय प्राप्त करते हैं।

पिन्डार।

प्रेमपूर्वक प्रदान किया हुआ अति अल्प दान भी महान् है। फिलेयन 'प्रेमकी सेवा' सत्तासे मिल नहीं सकी और द्रव्यसे क्रय (खरीदना) नहीं हो सकी ?

प्रेस्कॉट।

हमको मानव बंधुओंके सिद्धान्त मानना चाहिये इतना ही नहीं किन्तु उसके अनुसार अपना वर्तन भी रखना चाहिये।

पाटेर।

धर्मोंकी प्राचीनताकी चूंथचांथकर समय निष्काम व्यतीत करना मूलता है किन्तु उन धर्मोंके आश्रय असंख्य परोपकारके कार्य करते रहना ही श्रेष्ठ है। सबसे अधिक विज्ञ पुरुष भी भावी घटनाओंका अनुमान तक नहीं कर सक्ते हैं परन्तु निर्बलसे निर्बल मनुष्य अपना सच्चा जीवन व्यतीत कर सक्ता है।

फ्रेंक पुर नाम।

तुमसे जितना हो सके प्रत्येक स्थलपर, हरएक समय सर्व प्रकारसे समस्त मानव जातिका पूर्ण शांतितासे शक्तिसे अधिक भी कल्याण करो। फ्रांसिस विग्र।

मेरे पास जो कुछ थोड़ासा है उसमेंसे भी अन्यको प्रदान करता हूं। और परमात्मासे आनंद पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि मुझे कल अधिक दे जिससे मैं बहुत अधिक दे सकूं।

जे० पी० विवाडी।

मीठे वचन कहनेमें कुछ द्रव्य देना ही नहीं पडता। उससे जीभ अथवा ओष्ट पर छाले नहीं पडते और न मानसिक व्यथा (पीडा) ही होती है यद्यपि उसका मूल्य नहीं देना पड़ता है तो भी वे बहुत ही कार्य करते हैं। उनसे (मीठे बोलनेसे) ही अन्य मनुष्योंका भी स्वभाव अच्छा होता है। मीठे बोल मनुष्योंकी आत्मा पर छाप डालते हैं और वह छाप भी अतिशय सुंदर पडती है। वि० पास्कल।

मुझे तेरा जैसा श्रद्धालु हृदय दे कि जिससे आजसे प्रति दिन मैं अपनी सेवाका कार्य प्रारम्भ करूं, कुछ भी दयाके कार्य करूं और किसी भी अनिष्ट मार्गपर चलनेवालेको प्रतिशोध (ढूंढ़-कर) कर आपके शासनाधिष्ठित करूं। ऐस. डि. फेल्प्स।

'द्रव्य न हो' तो कुछ मानसिक दान देना चाहिये ।

वेस्कवीअर क्षेसनल ।

'दान करनेमें' पात्रका प्रतिशोध (तलास) करनेकी अपेक्षा उनकी आवश्यकताओंका अधिक शोधकर प्रकृति पात्रकी अपेक्षा आवश्यकताओंकी सफलतापर अधिक वर्तन करती है। तथा सफलता ही उसकी पद्धतिका मूल है।

महान कार्य करनेकी इच्छावाले अनेक मनुष्य हैं परन्तु उनका समस्त जीवन मात्र महान कार्योंके प्रसंगकी प्रतीक्षा करनेमें व्यतीत होजाता है और प्रेमके कार्य बिलकुल नहीं होते।

दयालु–नम्र और प्रामाणिक बनो। अल्प सेवाके कार्योंमें भी संलीन बनो। दूसरोंके कल्याण करनेमें प्रयत्नशील हो। और अपने कर्तव्योंमें अविचल रहो। निष्कंप रहो। दुसरा और कुछ भी अनिश्चित हो परन्तु इतना तो निश्चयरूप होना ही चाहिये।

दुर्बलसे दुर्बल और गरीबसे गरीबको भी यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि उसकी इच्छा है तो वह अपने दैनिक जीवनसे ही अपने चारो तरफ स्वर्ग बना सक्ता है। मीठे बोल, सानुकंपा दृष्टि, जीवोंको कष्ट नहीं देनेकी उत्तम भावना (अहिंसाणुव्रत पालनेकी दृढ़तर प्रतिज्ञा) इन सबका कुछ मूल्य नहीं देना पड़ता है। ये बातें अतिशय अमूल्य हैं। क्या ये हमारे प्रति दिवसके सुखके साधन नहीं हैं?

हमारे दयाके कार्य घड़ी घड़ी और क्षण क्षण क्या सुख नहीं देसक्ते है? महान कार्य करनेका प्रसंग क्वचित कथंचित् ही आता है। क्योंकि हमारा शरीर अति सुक्ष्म परमाणुओंसे बना है। कदाचित् तुम अपने दैनिक सुखका आंकडा पूरा करोगे तो

तुमको मालूम होगा कि मानव जातिके शरीरके परमाणुओंमें अपने द्वेष बुद्धिसे उत्पन्न हुए संस्कार आत्माकी आभ्यंतर शक्तियोंका प्रतिरोध करते हैं, अंतरंग जीवन प्रवाहमें व्याघात पहुंचाते

---

१ नामकर्मके उदयसे जीवोंके शरीरकी रचना होती है। जबतक हमारी आत्मामें आत्माके साथ कर्मोंका सम्बन्ध है तबतक शरीरका सम्बन्ध भी आत्माके साथ रहेगा ही। शरीर पुद्गल परमाणुओंका पिंड है। पुद्गल परमाणु सूक्ष्म और स्थूल दो प्रकारके होते हैं। हमारे शरीरमें दोनों प्रकारके परमाणु हैं। मृत्युके बाद सूक्ष्म परमाणुका पिंड (कर्म) आत्माके साथ २ रहता है और वह नवीन शरीर धारण करनेमें सहयोगी है। जिस प्रकार बीजसे वृक्ष और वृक्षसे बीज पैदा होता है ठीक उसी प्रकार सूक्ष्म कार्मणवर्गणा (परमाणु) से शरीर उत्पन्न होता है। जीवका कोई शरीर ईश्वर नहीं बनाता है। जब हम अपनी आत्मासे बुरे भले विचार करते हैं तो उन विचारोंके करनेसे हमारी आत्माकी मानसीक शक्तिएं हिलती हैं, मनसे कार्य उत्पन्न होता है और मानसीक शक्तिके हिलनेसे आत्माके प्रदेश भी हिलते हैं, क्रियावान होते हैं। आत्म-प्रदेशोंके हिलनेसे (क्रिया करनेसे) जिस प्रकार गीले गुड़पर धूलके उड़नेसे अति सूक्ष्म परमाणु चिपक जाते हैं अथवा गर्म लोहा पानीमें डालनेसे सर्वतः जलकणोंको आकर्षित करता है वैसे ही हमारी आत्माके साथ बहुतसे परमाणु संबंधित होजाते हैं और भिन्न२ निमित्त मिलने पर उनमें भिन्न २ शक्ति उत्पन्न होती है। उस शक्तिका नाम अपनी करनीका फल है। जब हम राग, द्वेष, क्रोध, मान करते हैं तो हमारे मन वचन और शरीरमें क्रिया होती है और उस क्रियासे आत्मप्रदेशमें व्याघात होता है (कर्मबंध होता है), कर्मबंधसे शरीर होता है उससे पुनः रागद्वेष होता है, इस प्रकार यह एक चक्कर है और यह चक्कर ही जन्म मरण कराता है इसलिये रागद्वेषरूप बुरे कर्म हमको नहीं करना चाहिये और शुभकर्म-परोपकार सेवा सच्चरित्र पालना चाहिये जिससे शुभ बंध हो, पुन्य प्राप्ति और आत्म कर्तव्य पालन हो।

है अतएव उनको दूर करनेके लिये सदा सावधान रहना चाहिये जिससे दुष्ट बंध अपनी आत्माके साथ सम्बंध न कर सके। सानुकंपा दृष्टि ही सुखका मूल कारण है।

मात्र स्वार्थ त्यागसे कुछ भलाई नहीं होती किंतु प्रेम पूर्वक स्वार्थत्याग करना ही स्वार्थत्याग कहलाता है। और वही सच्चा त्याग–सत्य जीवन—यथार्थ सुख और मनुष्यत्व है।

साम्यभाव (आत्मसमान सर्व जीवोंको समझकर पूर्णरीतिसे और पवित्र हृदयसे किसी भी जीवका दिल नहीं दुःखाना, उनकी मानसिक भावनामें भी घात नहीं करना) से निर्जन प्रदेश भी जनसमूहसे परिपूर्ण होजाता है। रात्रिके समय समुद्रमें (नावपर) सोते हुए धीवरकी रक्षाके लिये उसका कुटुम्ब प्रभुप्रार्थना[1] करता है और उस प्रार्थनाके सातिशय पुण्यसे उसकी निर्विघ्न रक्षा होती है। इतना ही नहीं किंतु उस प्रार्थनाके प्रभावसे धीवर भी यह विचारता है कि मैं किस पुण्यके प्रभावसे बचा, ऐसा विचार होते ही अपने कुटुंबी जनोंका स्मरण हो आता है उसमें बहुत बल प्राप्त हो जाता है और उसका अकेलापन नष्ट हो जाता है। ठीक उसी प्रकार एकान्तवासी साधु भी अपना आत्मध्यान इस प्रकार करता है कि समस्त जीवोंकी भलाई हो और समस्त जीव संसारके कष्टोंसे मुक्त हों, ऐसी भावना होते ही समस्त जीवोंके प्रति अटूट प्रेम उत्पन्न होता है, समस्त जीवोंको अपनी आत्माके

१ आत्माकी शक्ति अनंत है। हम जो कुछ शब्द बोलते हैं उनका असर बहुत बड़ा और विस्तृत होता है। प्रभु प्रार्थनासे प्रार्थना करनेवालेके भी सातिशय पुण्य होता है।

समान मानने लगता है, अनंत बलवान बन जाता है और अपना साम्यभाव जनताको श्रवण कराता है इससे उसका एकान्त दूर हो जाता है।

भलमनसाईसे हृदय प्रफुल्लित होता है, खिलता है नम्र होता है। जितने प्रमाणमें हमारा हृदय विशाल, पवित्र और उन्नत होगा उतने ही प्रमाणमें हम अन्यके लिये कुछ सहन करनेके लिये अधिक शक्तिशाली होंगे। हम अपने हृदयसे नित्य ही दृढतासे कहें कि हे प्रभो! मेरे जैसे पापी हृदय पर दयाकर।

एफ. डब्ल्यू रोबर्टसन।

जो तुम सर्व जीवोंपर भलाई करनेकी तीव्र इच्छा नहीं रखोगे तो तुम अवश्य ही क्रूर बनोगे? जो मनुष्य अपने हाथसे दान नहीं करता है उसके हृदयमें दया प्रेम जाग्रत नहीं होता है। जिनकी खराब आदतें होगई हैं, और हिताहित-सद् असद् विचार करनेकी शक्ति निर्बल होगई है वे अवश्य ही नीच हैं। जितने प्रमाणमें उनमें दूसरोंके लिये साम्यभाव नहीं हैं उतने प्रमाणमें वे नीच हैं।

जो मनुष्य अपने जीवनके कार्य संपूर्ण रीतिसे पालनकर दूसरोंके जीवनके लिये तन-मन और धनसे यथाशक्ति सर्व प्रकारकी सहायता करता है वही सबसे अधिक धनिक है।

प्रत्येक प्रभातको अपने जीवनका प्रभात रूप और संध्याको अंत रूप गिनना चाहिये। ऐसे अति अल्प जीवनमें दूसरोंके लिये कुछ भी सेवाका कार्य करना चाहिये। अथवा अपने लिये तो शक्ति और ज्ञान संपादन अवश्य करना चाहिये।

हम लोगोंको जिस जिस स्थलपर रहनेका निमित्त मिले उस उस स्थलको स्थिर स्थान समझना चाहिये ऐसा मानकर सत्कार्य

करनेका–सद्वचन बोलनेका और अन्यको मित्र बनानेका एक भी क्षण और एक भी प्रसंग न चूकना चाहिये। यह अच्छा और सुखप्रद व्रत है।

रस्किन।

एक ही मनुष्यको यथार्थ और पवित्र प्रेमसे चाहो। इस लिये संसारी तुमारी चाहना करेगा। प्रेमके दिव्य क्षेत्र (खेत) में विचरता हुआ हृदय गतिमान सूर्य समान है।

कठिन हृदयके मनुष्यके साथ कोमल और सरल रहना, वैरभाव रखनेवालोंके ऊपर दया करना–क्षमा रखना, अनुपयोगी मनुष्योंके साथ उपयोगता प्रदर्शित करना तथा अहंकारी और द्वेषी मनुष्योंके साथ सात्विक प्रेम रखना अतिशय दयालु पुरुषोंमें सबसे अंतिम और अच्छेसे अच्छा फल है परंतु उसको पकनेमें बहुत ही समय लगता है।

रिष्टर।

इस विशाल जगतमें अन्य पुरुषोंके लिये जो अपना जीवन व्यतीत नहीं करता है उसको एकाकी समझना चाहिये।

मनुष्यमात्रको शांतिदायक संस्कारोंकी आवश्यकता है इसलिये उनको परस्पर एक दूसरेके साथ मैत्रीभाव रखना चाहिये। निःस्वार्थ सेवा ही जगतको स्वर्ग बनाती है।

नेथेनीअल पीबोडी रोजर्स।

हम जिसको उदारता कहते हैं उसका यथार्थ अर्थ "विचारपूर्वक दान देता है" परंतु हम लोग कार्योंकी महत्ताके लिये ऊपरके ढोंग अधिक पसंद करते हैं।

दूसरोंके दुःखोंको अपने दुःख मानना ही 'दया' है। हम लोग जबतक जीवमात्रके प्रीत्यर्थ दया करना नहीं सीखे हैं तब

तक जो कुछ हम दूसरोंकी साधारण सहायता करते हैं उसका यही अभिप्राय है कि वे भी ऐसे अवसरोंपर हमारी सहायता करें।

रोशफोकोल्ड।

सेवा स्वीकार करनेवाले पुरुषको अपनी की हुई सेवाका बार बार स्मरण करना भी सेवाका बदला लेना है। रेसीन।

दयामें अनिवार्य जादूकी शक्ति भरी है। दूसरी सर्व योग्यतायें दयाकी अपेक्षा कम शक्तिशालिनी है। **दया उग्र कोपको दूर करती** है और चंचल प्रेमको स्थिर बनाती है। सुंदरतासे मात्र मन मोहित होता है परंतु दया पशुवृत्तियोंको भी उन्नत बनाती है। रोचेष्टर।

हमलोग दूसरोंको सुखी करनेके प्रसंग जितने अपने मनमें संकल्पित करते हैं उनसे बहुत ही कम हैं। और ऐसे प्रसंग जो हाथमेंसे निकल जांय तो पुनः प्राप्त नहीं होते यही उसको खोदेनेकी पूर्ण शिक्षा है। ऐसे प्रसंगोंके उपयोगसे निरंतर संतोष और अनुपयोगसे सदा पश्चात्ताप होता है। रुसो।

सच्चा प्रेम कभी भी बंधनबद्ध नहीं रहता। उसकी कभी भी अवहेलना नहीं होसक्ती है, उसका स्वभाव ही विकसित होनेका है। तुम उसको अपने हृदयमंदिरमें रोक नहीं सकोगे। प्रेम मानव हृदयमें नहीं रुकेगा। समग्र जीवोंतक पहुंचनेका वह प्रयत्न करेगा। वह सर्वदा दयाके कार्योंमें ही प्रवृत्त रहता है।

फ्रेडरिक० ऐ० रीज

प्रेम और साम्यभावके खिलनेका मार्ग सबके लिये सदा खुला है। तुमको उसमें प्रवेश करते समय कोई भी

नहीं रोकेगा अथवा वहांपर जानेके लिये कोई भी हैरान नहीं करेगा। प्रत्येकको उसमें प्रवेश करनेका अधिकार है। स्मितयुक्त मुख और दयालु हृदय ये उसके प्रत्यक्ष और परोक्ष चिह्न हैं। जिस प्रकार सूर्यके तेजसे पुष्प विकसित होता है उसी प्रकार हास्यपूर्ण मुख प्रत्येक मनुष्यके हृदयको प्रफुल्लित करता है— हर्षित करता है। जिस प्रकार वृष्टिसे भूमि आर्द्र होती है और शस्य (अनाज) उत्पन्न होता है, उसी प्रकार दयालु हृदयकी सहायतासे हृदयका भार हलका होता है। *डब्लु टुअर्ट रोयस्टन।*

हमने जिन शब्दोंका उच्चारण कभी भी नहीं किया है वे शब्द भू गर्भमें पड़े हुए धनके समान निरर्थक हैं। जबतक वे गुप्त हैं तबतक अनुपयोगी हैं। सुंदर बीनासे लयके साथ यदि स्वर बिलकुल ही नहीं निकले तो कितना खेद मालूम होता है। स्नेही हृदय प्रेमके तार छेड़ने पर भी मौनावलंबी बन जाय तो वह उस बीनासे भी विशेष खेदजनक है। अतएव आत्मासे आविर्भूत होते हुए मधुरगान—स्नेह युक्त साम्य भावको गुप्त मत रखो। परन्तु उसको उमड़ती हुई नदियोंके समान शुष्क और दुःखी हृदयोंके प्रति द्रुत गतिसे प्रवाहित होने दो। अरे! मीठे वचन गरीब, असहाय और निर्बल मनुष्योंके प्रति उच्चारित हो। तेरे शुभ कर्म तुझको सुखी बनायेंगे। और जिस प्रकार तेरे हृदयके तारोंको दूसरोंके लिये छोड़कर सुख प्राप्त करनेकी जिज्ञासा है उसी प्रकार ऐसे समय दूसरोंके हृदयके तार तेरे सुखके लिये छेड़े जायेंगे।

जे. ओ. री. ली.।

स्त्रियोंके सुन्दर वदनकी अपेक्षा उनके आभ्यंतर विराजित दया विशेष आकर्षित करती है। उदारता प्रेमको सफलमनोरथ बनाती है। और कोई भी उदारताको प्रेमसे भिन्न नहीं कर सक्ता है। हम सेवाके लिये ही जन्में है। जब दाता दयालु नहीं होते हैं तब उनकी मूल्यवान भेट भी क्षुद्र दिखती है।

निवलको एकवार ही सहायता करना परिपूर्ण नहीं है परन्तु सहायताकर देनेके बाद भी वह सुस्थितिमें रहे ऐसी योजना कर देनी चाहिये। दुःखके समय दुःखमेंसे भाग लेनेसे कुछ दुःख कम होजाता है। अनिष्ट वस्तुओंमें भी कुछ न कुछ महत्ता रहती है। मनुष्योंको ध्यान पूर्वक उसको बाहर लाना चाहिये। स्नेहयुक्त मीठे बचन कहना भी एक प्रकारकी सेवा है—सत्कार्य है। जिस प्रकार मशालको हम अपने लिये ही नहीं जलाते किन्तु विश्वके प्रकाशके लिये जलाते हैं उसी प्रकार हम अपना ही भला करने मात्रसे मनुष्य जन्म सफल नहीं कर सक्ते—अपने स्वार्थमें मस्त रहनेसे मनुष्यत्वको नहीं प्राप्त कर सक्ते क्योंकि अपने सद्गुणोंका प्रकाश हमारे पाससे कुछ भी आगे नहीं बढ़े तो वह न जैसा है। **मानवजातिकी सुंदर विभूतियां सदुपयोग होने ही के लिये हैं।** प्रकृति जो कुछ हमारे साथ करती है वह उसकी गणना साहूकारके समान हिसाबमें है।

शेक्सपीयर।

जिस प्रकार हम लेनेकी इच्छा करते हैं उसी प्रकार बिना कुछ भी संकोचके एकदम आनंद पूर्वक प्रदान करना भी चाहिये। जो दान अंगुलियोंसे चिपक रहा है उसमें बिलकुल महत्ता नहीं है।

मुझसे जो दूसरोंकी सेवा बिलकुल न हो सके तो मुझे भी दूसरोंसे सेवा नहीं कराना चाहिये। **सेवाका बदला नहीं देना भी भारी पाप है। और सेवा न करना पापकी प्रारम्भ दशा है।**

जो अभिमान पूर्वक ढोंगसे दान दिया जाता है वह दान नहीं है किंतु लोभ है।

जो सत्कार्य दूसरोंका कल्याण करता है वह अपना भी करता है परन्तु अकेले सत्कार्य मात्रसे नहीं किंतु परिणामसे—शुभ भावोंसे क्योंकि सत्कार्य करनेसे जो संतोष होता है वह भी एक प्रकारका बदला है।

दूसरोंके लिये करे हुए कार्यसे उत्पन्न हुए आनंदका ऐसा नियम है कि कार्य करनेवाला कार्य पूर्ण होनेपर तत्काल ही विस्मृत हो जाता है और जिसके लिये किया है वह स्मरण बना रहता है।

चतुर धनवान लेंपकी चिमनीके पार्श्वभागमें प्रतिबिंब देने-वाले प्रकाशको उत्कर्ष बनानेवाले काचके समान है। और उसका द्रव्य लेंपकी ज्योति समान है। वह अपने लिये नहीं किंतु दूसरोके लिये द्रव्य संग्रह करता है।

दानकी महिमा दान देनेमें नहीं किंतु प्रशंसनीय दानपद्धतिमें है। वह ही मधुर और सुंदर दानको बनाती है। उपकारकी वास्तविक खूबी और शोभा दान पद्धतिमें ही अंतर्गत है।

सेनेका।

नीच स्वार्थसे हमारी उदारता संकुचित होती है। इससे सर्पके समान हममें रही हुई शक्तियां अपना ही हित करनेमें लगी रहती हैं, और विष संसारके लिये बाहर आता है।

शारीरिक अथवा मानसिक विपत्तिओंके प्रसंगपर अथवा गरीब और अमीरकी मृत्युके प्रसंगपर हमने अपने स्वार्थके लिये जो कुछ किया हो उससे नहीं किन्तु दूसरोंकी भलाईके लिये किये हुए कार्योंसे विशेष आनंद होता है।

जो मनुष्य अपने लिये नहीं किन्तु दूसरोंकी भलाईके लिये श्रेष्ठ विचार और प्रयत्न कर रहा है, जो उच्च नियमोंके उद्देशसे अपने कार्योंको सावधानीसे कररहा है और अपनी शक्तिसे उनको सांगोपांग पूर्ण करनेके लिये प्रयत्नशील होरहा है वही सन्मानका पात्र है व बाहरके सुंदर दिखाते हुए ललित शब्दोंसे मात्र परोक्ष लाभ लेना नहीं चाहता है अथवा शुभ कार्य करनेके लिये दुष्ट मार्गका अनुसरण नहीं करता।

गुप्त अनुकंपा मनसे मनको, और हृदयसे हृदयको जोडनेवाली दोरी है अथवा चांदीकी सांकल है।　　वोल्टर स्काट।

हमारे पड़ोसी कौन है ? दुःखी-दीन-असहाय-और विपत्तिमें फंसे हुए पडोसी है। भले ही वह कहीं भी क्यों न रहता हो, कैसा ही हो, जहां जहां दुःखकी पुकार सुननेमें आवे वहां पर अन्याय-बलात्कार-दुराचरण-अथवा स्वार्थके लिये कुछ सहन करना पडता हो और जहां जहां अशुभ कर्मोंके उदयसे दरिद्रता छा गई हो, दीनहीन स्थिति प्राप्त होगई हो, वहां वहांपर सर्व दुःखी मनुष्य भले ही वे अपने शत्रु हों अथवा प्रवासी हों वा परदेशी हों तो भी वे प्राकृतिक नियमसे अपने पडोसी हैं।

हममेंसे प्रत्येक मनुष्य अपने अपने छोटे मंडलों (समिति-सभाओं)को अधिक सुखी और अच्छा बनानेके लिये बाध्य है। ऐसे छोटेसे मंडलमेंसे अधिक सत्कार्योंका प्रवाह प्रसरित हो एक ही कुटुंबको अथवा समग्र राज्यको वा सभ्य संसारको प्रोत्साहित करनेकी द्रुतगामी तरंगें लहराय ऐसा करना प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है।

अनिष्टको दूर करनेके इच्छुक प्रत्येक पुरुषको अपने हृदयमें सद्वस्तुओंका समावेश करना चाहिये। यद्यपि हमारे हृदयकी नीचताको दूर करनेके अनेक मार्ग हैं। तथापि सरलसे सरल सीधेसे सीधा और अच्छेसे अच्छा मार्ग यह है कि हम उसको (मन) सद्विचार अथवा सत्कार्यमें प्रवृत्त करें। ऐ. पी. स्टेनली।

अनुकंपा जीवनकी उपमाता (धाय) है। वह अनिष्टोंको दूरकर सद्विचारोंको पुष्ट करती है, सद्वृत्तियोंका पालन करती है, वह विरोधको दूर करती है और कठोरसे कठोर हृदयको कोमल बनाती है और मानव स्वभावके श्रेष्ठ अंशोंको विकसित करती है।

' दया ' दयासे मिलती है। सत्य-विश्वास और आत्मश्रद्धाके पुष्प संग्रहीत करती है। अनिश्चित शब्दोंकी अपेक्षा दयाके छोटे छोटे कार्योंसे विशेष अच्छा मालूम होता है।

" विनय " सत्कार्यका भूषण है और स्नेहयुक्त मीठे वचनोंसे तथा प्रेमजनित कार्यसे इसका मूल्य बढ़ जाता है। अनिच्छा पूर्वक तथा कृपा दृष्टिसे किया हुआ कार्य क्वचित भाग्यसे उपकारार्थ माना गया है।

सेम्युअल स्माइलस।

सामाजिक जीवन व्यवहारमें प्रति दिन और पल पलपर मिलते हुए प्रसंगोंमें दयाके छोटे छोटे कार्योंसे प्रेम मिलता है। और उसको स्थिर भी रख सकते हैं। यदि ऐसे प्रसंगोंकी शोध की जाय तो 'मीठे बोल' अथवा 'करुणा दृष्टि' हरएक अवसर पर तैयार मिलेगी जो ऐसे प्रसंगोंको खोकर महान अवसरकी प्रतीक्षा करना चाहता है वह प्रेमको भाग्यसे क्वचित प्राप्त कर सकता है। हां, संभावना तो यह होती है कि महान् स्वार्थ त्यागका प्रसंग मिल ही नहीं सके। कदाचित हो भी तो स्वार्थ साधनके लिये।

मनुष्य अपने स्वार्थसे मनुष्यजन्म सफल कर सकता है यह सिद्धांत भूल गया हुआ है। वह अपनी स्त्रियोंके लिये, बालकोंके लिये, सगे सम्बंधियोंके लिये व्यवसायियोंके लिये, ग्राहक अनुग्राहकोंके लिये और इतर समाजके लिये कार्य करनेको बाध्य है, उनके कल्याणार्थ ही जीवित है और कार्य करता है। वह अपनी कमाईका कुछ अंश अपने सुखके लिये उपयोग करता है। वह उनकी कृपाका पात्र मात्र है। उसकी तो छाया मात्र है (वह भी यथार्थ सरल नहीं) इसलिये उस अंशोंको पूर्ण करनेके लिये समाजका वह ऋणी है। संक्षेपमें यह कहो कि समाज सेठ है और वह व्यक्ति सेवक है। व्यक्ति जैसी भली या बुरी सेवा करेगी समाज भी तदनुसार वैसा ही अनुसरण करेगी। जी० ए० साला।

प्रत्येक स्त्री पुरुषको अपने आत्मशिक्षणमें बहुतसे त्याग करनेकी कला सीखना चाहिये। सभ्यसमाजका यथार्थ महत्त्व समाजकी प्रत्येक व्यक्तिकी स्वतंत्रता और अनुकूलतासे ही विशेष

संबंध रखता है। क्योंकि स्वातंत्र्य और अनुकूलता जितने अंशोंमें अधिक होती जायगी उतने ही अंशोंमें कार्य करनेकी सरलता अधिक होती जायगी।

मनुष्य एक दूसरेके साथ परस्पर सम्बंधित है, व्यवहारवद्ध है अतएव परस्पर प्रेम रखना चाहिये ऐसा मान लेना भूल भरा हुआ है। क्योंकि जिस प्रकार प्रवीण मालीके हाथसे एक ही वृक्षपर द्विगुणित फल हो सक्ते हैं उसी प्रकार जंगली वृक्षपर विवेकयुक्त प्रौढ संस्कारसे प्रेमकी वृद्धि हो सक्ती है। वैसा करनेका हमें सत्व है। और जिस प्रकार सर्वोत्तम फूलके बीज दूषित भूमिमें बोनेसे कम उगते हैं अथवा नाश हो जाते हैं उसी प्रकार प्रेम भी दूषित पात्रमें और अपनी स्वेच्छाचारकी दुष्प्रवृत्तिसे कम होता है अथवा नष्ट होकर विशेष होजाता है।

जो प्रेमके प्रत्येक गुप्त विचार कार्यमें परिणत किये जांय तो हम अपने कुटुम्बके लिये तथा अपने मित्रोंके लिये कितना विशेष कर सक्ते हैं। श्रीमती एच० बी० स्टो।

निरंतर-सत्कार्य करनेकी जिज्ञासा मनुष्यकी स्वाभाविक परणतिके पर अवलंबित है। हां, क्वचित् कदाचित् कोई सत्कार्य साधारण प्रवृत्तिसे हो सक्ता है।

यदि तू द्रव्यवान हो तो अपनी स्थितिकी महत्ता अथवा अपनी आत्म महत्ता 'नम्रतासे वातचीत करनेमें' 'साधारणसे साधारण और गरीबसे गरीब मनुष्यके विनय युक्त मीठे वचन बोलनेमें' उनके साथ दया करनेमें' 'दुःखी मनुष्योंकी सुश्रुषामें'

और निरपराध मनुष्योंके आश्रय देनेमें' दिखला। तू इस प्रकार ही महान होगा। स्टर्न।

जिस प्रकार तारागण एक ही नियमसे आकाशको उज्वल करते हैं, चमकदार बनाते हैं, उसी प्रकार एक 'मेरे समान सबकी आत्माये हैं' यह साधारण नियम समस्त प्राणियोंमें उपयुक्त होता है। उस नियमकी तालिका 'स्नेहयुक्त दया' है।

डेविट स्वींग।

एक ऐसी दंतकथा है कि एक मनुष्यसे पूछा था कि "तुम किसके लिये अधिकसे अधिक परिश्रम करते हैं?" उसने प्रत्युत्तरमें कहा कि "अपने मित्रोंके लिये"। पुनः दूसरीवार उसको पूछा कि 'कमसे कम किसके लिये श्रम करते हो' उसने प्रत्युत्तर दिया कि 'किये हुए उपकारको भूल जानेके लिये'। सारांश—प्रेम अधिकसे अधिक काम कर सक्ता है परन्तु उसका स्मारक कुछ न कुछ बना ही रहता है। सेकर।

जितने प्रमाणमें हम दान करते हैं उतने ही प्रमाणमें हम धनवान होते हैं। जितने प्रमाणमें दान प्रदान नहीं कर सक्ते उतने ही प्रमाणमें हम गरीब हैं। मडम स्वेटशिन।

हम अपने पीछे जगतको अधिक प्रवीण और श्रेष्ठ छोड़ जायंगे तो वह अधिक सुखी होगा। सामाजिक जीवनमें प्रादुर्भाव हुआ मनुष्यके पापका प्रबल वेग किस प्रकार रोका जासक्ता है? ऐसी युक्तिसे कोई पूछे तो मैं तो यही प्रत्युत्तर दूंगा कि दूसरोंके ख्यालसे क्या प्रयोजन? तुम इस विचारसे अपना अमूल्य समय व्यर्थ मत खोओ। तुम अपना कर्तव्य किये ही जाओ अपनी सर्व

शक्तियोंका उपयोग करते ही रहो। तब ही सामाजिक सुधारमें सफलता प्राप्त होगी। शटलवर्थ।

प्रेम करो। मात्र अपने आपके लिये नहीं, परन्तु मनुष्य-मात्रको अपना बंधु समझकर आकाशमें गतिमान सूर्यके समान सर्वकी सेवा करो। शिलिर।

यथाशक्ति जनसमूह पर प्रेम करो। सबके कल्याणके मार्गका अभ्यास करो। जीवमात्रको सुखकी वृद्धि करना ही परोपकारकी पराकाष्टा है, चरम सीमा है। जिसको हम 'दिव्य शक्ति' कहते हैं वह यही है। शाफट सबरी।

स्वार्थकी ओर दृष्टि रखकर भला कौन स्वर्ग प्राप्त कर सका है?

दूसरोंको सुखी करनेसे ही हम सुखी हैं, दूसरोंके लिये श्रम करनेमें ही हमें आराम है। यदि हम तन मन और धनसे जगतका कल्याण नहीं करें तो हमारा जीवन व्यर्थ है।

सि० समर।

कोई भी स्थिति ऐसी नीच अथवा क्षुद्र नहीं है कि जिसमें रहकर हम लोग सत्कार्य न कर सकें। यदि अपनी शक्तियोंका उपयोग किया जाय तो क्या युवा क्या वृद्ध, स्त्री या पुरुष, निर्धन, धनवान-ऊंच नीच, शिक्षित अथवा अशिक्षित प्रत्येक अपनी स्थितिमें रहकर संसारका भलाकर सकता है, दूसरोंकी सहायता कर सकता है और अपने युगमें कल्याणका साधन कर सकता है। सार्व।

एक दिन ऐसा आवेगा कि हम लोगोंमेंसे जिन्होंने जितने पैसोंका दान किया है वे पैसे उतने ही रुपयोंकी बराबर होंगे। और जो लोग '**हमको दान दो**' '**हमारी सहायता करो**' ऐसा कहते थे वे अपने बड़े भारी उपकारी दिखेंगे। सेठ और श्रीमंतोंके घर पर बहुत दिवस भोजन करनेकी अपेक्षा गरीबके झोंपडा (कुटी)में मीठा अन्न अधिक मूल्यवान होगा।

जे० स्टाकर।

मनुष्यका यथार्थ जीवन और सुख उसके कर्माधीन है। यदि हमारा पुण्यकर्मका प्रबल उदय है तो हमको उच्च जीवनके योग्य उपयोग करना चाहिये। सर्व जीवमात्रकी दया पालनेमें **धार्मिक** और पारमार्थिक कार्य करनेमें लगे रहना चाहिये। यही हमारा कर्तव्य है और प्रेममुद्रा है। जे० सर्विस।

वह अपने जाति बन्धुओंके सर्व कार्य करनेको बाध्य नहीं है, ऐसा कोईएक कहते है परन्तु अपनेसे जितने प्रमाणमें जनसमूहकी हानि अथवा पीड़ा हुई हो उतने प्रमाणमें हम दोषी हैं। यदि यह उपर्युक्त महान युक्ति राष्ट्रके आधे भागमें प्रचलित हो जाय तो अवशेष भाग स्वयमेव शीघ्रतासे सुधर सक्ता है। यदि अमीर और मध्यम स्थितिकी जनता यह युक्ति स्वीकारकर तदनुसार अपने अपने कार्य करने लग जाय तो **आधी विजय** प्राप्त होगई समझनी चाहिये। जेम्स स्मिथ।

प्रातःकाल उठते ही एक बंधुको सुखी करनेका निश्चय करो। यह काम सरल है। 'पुराना वस्त्र आवश्यकतावालेको दे दिया जाय 'शोकातुर और उद्वेगवाले पुरुषको मीठे वचन कहे जाय।'

'प्रयत्नशीलको प्रोत्साहित किया जाय, तो यद्यपि ये सब बातें
हवा जैसी हलकी मालूम पड़ती हैं तो भी चौवीस घंटेकर सकने
योग्य हैं । सरलसे सरल गणितके हिसाबसे इसका परिणाम (फल)
निकाला जाय तो प्रति दिवसके हिसाबसे एक वर्षमें ३६५ मनु-
ष्योंको सुखी करसक्ते हैं। केवल चालीस वर्ष मात्रके जीवनकी सेवामें
१४६०० मनुष्योंको सुख होसक्ता है । सीडनी स्मिथ ।

मनुष्यकी पूर्णता परमात्माकी पूजा करनेमें, नीतिके नियम
पालन करनेमें तथा विशेषकर दयाके पालन करनेमें है । जिसमें
दया है वही मुक्तिमार्ग प्राप्त होनेके लिये आवश्यक वस्तुका शोध
कर चुका है । सेवोन रोल ।

सच्चा मनुष्य स्वयं अकेला सुख नहीं भोग सक्ता किन्तु
दूसरोंको सुख प्रदान करनेमें आनन्द मानता है और उनकी
चाहना करता है । क्योंकि वह समझता है कि 'मेरा सुख
दूसरोंको सुखी करनेमें है, ऐसे मनुष्योंके नामका उच्चा-
रण करनेसे अथवा उसके दर्शनसे सद्वृत्ति जन्म लेती है । और
हम सबको उस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करनेका मार्ग
होता है । आर० एल० स्टीवन्सन ।

यदि मानव हृदयमें उद्भव होते हुए सर्वोत्कृष्ट आनंदका
तुम अनुभव करना चाहते हो ? यदि तुम्हारे हृदयमंदिरमें गुप्त
अंधकारमें पडी हुई इस प्रकारकी अमूल्य निधिको प्रकाशित कर-
नेकी इच्छा करते हो ? तो उस निधिका विचार करो, उसके
लिये काम करो, तुम अपनी आत्माको एकदम पीछे रखो, मनुष्य-
मात्रको भाई बहिन प्रमाण समझो और उनके प्रति अति उदार
और प्रेमसे रहो । डब्ल्यु० स्नोड ।

तुम अपनी आभ्यंतर निधिकी रक्षा करो। जरासी भी किसी प्रकारकी शंका किये बिना किस प्रकार देना! और बिना कुछ शोक और पश्चात्ताप किये किस प्रकार विसर्जित करना, आदि सब बातें उसके लिये सीखो। तुम अपने मित्रोंके सुखके लिये अपने अपूर्ण सुखको पूर्ण सुख मानना सीखो। भविष्यजीवनमें श्रद्धा करो, सर्व जीवमात्रको सुखी बनाना सीखो और सबको प्रेमदृष्टिसे देखो। ज्यार्ज सेन्ड।

मनुष्यमात्रके हृदय अनुकंपाको पुकार रहे हैं। जिस प्रकार मृग पानीके झरनेको तरसता है उसी प्रकार आत्मा अनुकंपाके लिये तृषातुर है। ऊंच और नीच, धनवान, गरीब, युवा वृद्ध सब उसकी इच्छा करते हैं। वह जीवनकी गुप्त तालिका है। इसलिये नहीं किंतु वह आत्माका स्वभाव है, आत्म धर्म है इसी लिये उसके भूखे हैं। गरीब भिखारी धनवानके पाससे भिक्षाकी याचना करता है परन्तु अंदर तो वह दाताकी सानुकंपा हास्ययुक्त मुद्रा देखकर प्रसन्न होता है। द्रव्यका अखूट भंडार भी अनुकंपाकी एक छोटीसी कनीकी तुलना नहीं करसक्ता है। गर्विष्ट (अहंकारी) मनुष्य भी प्रेमसे गद्गद् कुत्तेकी पूंछ हिलानेसे प्रसन्न होता है। पुष्प बिना गर्मीके रह नहीं सक्ते। अनुकंपा बिना जीवन भी अशक्य है। अनुकंपाके बिना गरीब मनुष्योंको उद्योगमें आजीविकार्थ लगाना एक अंधेरी कोठरीमें कैद रखनेके समान है। सूर्यको विश्व भू मंडलमेंसे निकालकर अलग कर दो, परन्तु अनुकंपाको रहने दो। कानोंमें श्रवण करनेकी और आंखोंसे देखनेकी शक्ति भले ही नष्ट होजाय तो भी कथंचित् निर्वाह होगा, परन्तु अनुकंपा बिना

किसी प्रकार निर्वाह नहीं हो सकता । अनुकंपाको छोड़कर और कोई प्रियसे प्रिय वस्तु बिलकुल नष्ट होजाय तो उसकी चिन्ता नहीं है । किंतु **अनुकंपा बिना जीवन व्यर्थ है** । निराश और बिलकुल हताश हुए मनुष्योंको अनुकंपाका सहज मधुर और कोमल स्पर्श होते ही उनकी चिरकालकी मूर्छा नष्ट होजाती है, सचेतनता प्राप्त होती है, आनंदके अंकुर प्रादुर्भाव होते हैं । वे सोते हुए सहसा जाग उठते हैं और निराशासे पतित मस्तकको पूर्ण आनन्दसे ऊपरको उठाते हैं । अनुकम्पा ही जीवोंमें प्रेमकी ऐसी अदभुत पंख (पक्ष) लगायेगी कि जिनसे स्वर्गद्वारपर पहुंचनेकी शक्ति उद्भव होजायगी । निराशावादियोंके लिये वह रामबाण औषध है । लोभियोंके लिये वह अमृत है । और वह अनुकंपा ही सर्व जीवमात्रको बंधुभावसे एकत्रित करती है ।

डेविट सीन्कलेट ।

जिस दयाके सामनेके मनुष्य (दया स्वीकार करनेवाले मनुष्य) की स्वतंत्रताका अभिमान और भिक्षावृत्तिकी लज्जा नाश होजाय वह दया अयोग्य है । सधे ।

अपनी आत्माको भूलकर दूसरोंके लिये विशेष अनुकंपाका होना, अपने स्वार्थपर पूर्ण अंकुश रखना और उच्च प्रेममें मस्त रहना ही मानव जीवनको पूर्ण बनाना है । एडम स्मिथ ।

अन्य कार्योंकी अपेक्षा 'दान' अधिक चारित्रकी वृद्धि करता है । साउथ ।

संसारमें प्रायः अधिक जन वस्तुओंका दान रूप दया अधिक करते हैं, परन्तु समस्त जीवोंमें बंधुभावका वर्ताव नहीं करते हैं

अथवा आभ्यंतर प्रेम और वाणीकी मधुरता रूप दयाका उपयोग नहीं करते हैं। पी. सेडनी।

प्रेमसे लबालब भरी हुई भाषा ही धर्म भाषा है। सेवेटीअर।

दूसरोंके नेत्रोंसे निकलते हुए अश्रुओंको पोंछनेका प्रयत्न करना ही यथार्थ कीर्ति है। हेनरी ऐस सटन।

जिस प्रकार सुवर्ण सर्व धातुओंमें श्रेष्ठ, मूल्यवान, सुंदर और टिकाऊ है तथा स्वल्प भाग्यसे मिलता है उसी प्रकार दया सर्व सद्गुणमें उत्तम, और सुंदर है; वह कहीं भी प्रतिरोधित (रोकी जाना) नहीं होती है वह अभेद्य और स्थिर है।

स्पेसनर।

अपने मित्रोंके प्रति उच्चारित मधुर वचन और प्रेमपूर्वक किये हुए सत्कार्य अमर बीज हैं। वे बीज अपने ही जीवनमें नहीं किंतु अपने वंशजोंके जीवनमें भी शाश्वत सौंदर्य सहित स्फुरायमान होते हैं। सी० एस० स्पर्जन।

प्यारे मित्रो! तुमने जो काम किये हों वे नहीं किन्तु तुमने जो काम नहीं किये वे ही तुमारे हृदयमें अस्त होते हुए सूर्यके समान दुःखदायक हैं।

विस्मृत हुए कोमल और मधुर शब्द लिखनेसे रह गया, एक पत्र और भेट करनेसे रह गये, पुष्प तुमको भूतके समान रात्रिमें स्वप्नमें दीखेंगे।

तुमारे भाइयोंके ऊपर पड़े हुए ढेले अथवा उनके कार्योंमें रुकावट करनेवाले आड़े पत्थरोंको तुम्हें दूर करना चाहिये था। क्या तुम अपने काममें इतने अधिक लवलीन थे कि तुमको अपने

सच्चे हृदयकी सलाह देनेके लिये अवकाश तक न मिला ? दयाके ऐसे ऐसे छोटे छोटे कार्य जिनको हम शीघ्रतासे भूल जाते हैं, स्मरण रखिये कि मनुष्यको देव वे ही बना सक्ते हैं।

एम० ई० सेन्गास्टर।

अन्य सर्व मनुष्योंको तुम्हारे चाहनेकी कितनी इच्छा है ? तुमको भी प्रथम उनकी चाहना करना चाहिये। इस संसारमें और किसी प्रकार भी किसी द्रव्यसे प्रेम नहीं खरीदा जासक्ता है।

प्रेमके झरनेके लिये अतिविस्तृत और अतिविशाल पाटवाली नदियां तैयार हैं क्योंकि उस झरनेका पूर इतना भारी है कि उसको लेजानेवाली नदियां उभरा उठती हैं।

ऐसा होनेपर भी कदाचित् किसी समय ऐसी नदियोंके बनानेका काम बंद करनेमें आवे तो प्रेमका झरना स्वयमेव सूख-कर (शुष्क) अंतर्लीन होजायगा। जो हम उस स्वर्गीय वस्तुको अपने पास ही रखना चाहते हों तो उसको सर्वत्र और सबके पास वितरण करना चाहिये—सबसे प्रेमकर सर्वत्र व्याप्तकर देना चाहिये। जिस समय हम उसको वितरण करते हुए बंदकर देंगे उसी समय वह भी नष्ट होजायगा। प्रेमका यही सिद्धान्त अटक है।

आर० सी० ट्रेनच।

जो जीवन सबको प्रेमसे मिलता है वही पूर्ण, समृद्धवान, सुंदर शक्तिपूर्ण और निरंतर प्रफुल्लित है।

यदि जगतमें प्रेमका सिंचन करोगे तो सर्व श्रेष्ठ और प्राभा-विक स्वर्ग यहांपर ही है, ऐसा अनुभव होने लगेगा।

प्रेम ही सर्वस्व है। वही जीवनकी तालिका है। और उसकी ही सत्तासे समस्त जगत चल रहा है।

आर० डब्ल्यू० ट्राइन।

जब तुम किसी वस्तुका दान करो तब तुमने देने योग्य किसी बातका त्याग नहीं किया तो वह दान नहीं है।

जो मनुष्य अपने जलते हुए घरको जलांजुलि देता है उसमें थोडी भी उदारता नहीं है क्योंकि दानका तत्व त्याग है।

हेनरी टेलर।

प्रेम, कर्तव्य और उससे भी कुछ अधिक है अथवा प्रेम कर्तव्यरूपी थडवाला वृक्ष है।

अति अल्प कर्तव्य करनेकी प्रेरणा आत्माकी विशुद्ध भावना है। टेंपल।

उन्नत स्वभावके मनुष्य दूसरोंके सुखमें भाग लेते हैं तब ही अपनेको सुखी मानते हैं।

हम किसी सद्गुणके लिये प्रभु–प्रार्थना करते हैं तो हमको उसके पात्र बननेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिये तब ही प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थनाके वचन ही हमारे जीवन नियम होने चाहिये। प्राकृतिक नियम ही हमारे लिये शासक हैं और उन नियमोंका पालन करना ही अपने कर्तव्योंका पूर्ण करना है। कर्तव्योंको मुक्तिमार्ग मान बैठना ही नहीं, किंतु कर्तव्यके अखंड उपदेशको भी मानना चाहिये। हम जिन जिन भावोंकी परमात्मासे प्रार्थना करते हैं, जो जो गुण परमात्मासे चाहते हैं वे वे गुण और भाव हमारी आत्मामें हैं। उनका विकाश होना ही

परमात्मा होना है । आत्मगुणको विकाश करनेवाले अध्यात्मग्रंथ और धर्म पुस्तकोंका मनन करो । आत्म श्रद्धा रखकर स्वशक्तिका विकाश करो। स्मरण रखो कि आत्म विकाश करना चाहते हो तो सबसे प्रथम श्रेष्ठ सदाचार (बाह्य और आभ्यंतर) चारित्रको धारण करो और दया स्वीकार करो । जोरेमी० टेलर।

अपने अपकारी जनोंपर उपकार करो यही उनको जीतनेका श्रेष्ठ मार्ग है । टिलोटसन ।

द्रव्यवान पुरुषोंको चाहिये कि वे प्रतिदिन द्रव्यका सदुपयोग करें यही उस द्रव्यका भोग है । एक ऐसा भी समय आवेगा कि अतुल धन अपनी मृत्युके बाद छोड़ जाना लज्जास्पद होगा ।
आर० ट्रीव ।

सत्कार्योंकी दुकान कभी भी देवाला नहीं निकालती है ।
थॉरो ।

प्यारे मीठे वचनोंको वातावरणमें उडने दो । उनका असर कितना पहुंचता है यह किसीको मालूम नहीं है ।
डि. डब्ल्यू टेल्मेज ।

तुम अपने दुःखोंको भूलकर मित्रोंकी सहायता करो । सुवर्णको सेवक बनाओ, तुम स्वयं उसके दास होकर मत रहो । भिक्षुककी झोलीमें खुले हाथ (उदार हाथ) से भिक्षा दो । विपत्तिके

१ जो सभ्य धार्मिक ग्रन्थोंका बालवयसे पढ़ना अनुपयोग बतलाते हैं, उनको ये वाक्य सदा स्मरण रखना चाहिये । एवं जो मनुष्य चारित्र धारण करनेको ढोंग समझते हैं उनको उपर्युक्त वचनोंपर श्रद्धा करनी चाहिये ।

निविड अंधकारमें शुद्धि हीन और विस्मृत मनुष्योंकी सहायता करो । उनको सुख रूपी सुर्यके प्रकाशमें लाओ । श्रेष्ठ विचारोंका पाठ निरंतर करते ही रहो क्योंकि उनके पीछे सत्कार्य आयेंगे ही।

टेनिसन ।

प्रेम हम सबको कैसा आश्वासन देता है, सहायता प्रदान करता है, बल देता है और हमारा उद्धार करता है वह देखो। जीवनको मधुर और सुदर बनानेवालेके कल्याणकारी असंख्य प्रसंग प्रेममेंसे हमको मिलते हैं ।

सेलिया थक्स्टर ।

जो यथार्थमें सेवा करनेकी अमूल्य शक्ति हमारे पापसे ले ली जाय तो सचमुच हमारा जीवन बहुत ही दयापात्र हो जाय । जो दयाका झरना हमारे हृदयमेंसे शुष्क होता हो अथवा संभावना हो तो पुनः हमको आनंद और उत्साहकी आशा त्याग देनी चाहिये । जो मनुष्य दान करना जानता है वह यथार्थमें अधिक कमाता है अरे ! दानसे ही द्रव्य प्राप्त हो जानेसे उत्पन्न हुई निर्दयता और द्रव्य संचय रखनेकी क्रूरता नष्ट हो जाती है । हमें चाहिये कि दुःखी मात्रका द्रव्यदानसे सत्कार करें। और यह भी स्मरण रखें कि जीवमात्रकी आत्मा समान है ।

टीक ।

हम प्रत्येक प्रकारकी अनुकंपा कर सक्ते हैं । परन्तु अनुकंपाको पुर्ण रीतिसे समझना ही अधिक कठिन बात है । जो मनुष्य निःस्वार्थपणेसे अनुकंपा करता है, स्वार्थको लात मारकर भगाता है. झंठे साचे दिखावटी ढोंग नहीं करता है वही श्रेष्ठ है ।

एन थेकरे ।

जो सद्गुणी मनुष्य दूसरोंके लिये ही अपने सद्गुणोंका उपयोग करता है, दूसरोंके अभ्युदयमें श्रेय समझता है, पर कल्याणार्थ अपने जीवनका उत्सर्जन करता है, दूसरोंके दोषोंके लिये तिरस्कार नकर उलटी सहानुभूति प्रदर्शन करता है, वह कितने मनुष्योंको सन्मार्गमें लगा सक्ता है ? असर।

जो समयका दुरुपयोग हो गया हो तो अब उसका उपाय नहीं, आलसके वश होकर जो समय नष्ट कर दिया उसका प्रतीकार ही नहीं। आलस स्वयं ऐसी शिक्षा करता है कि जिससे प्रवृत्तिशील मनुष्य भी कभी भी अनुभव नहीं कर सक्ता है अथवा अनुभव करने योग्य ही नहीं होने देता है। तू स्वयं ऐसी शिक्षाका पात्र न बन।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मानव जीवन उन्नत कार्य करनेके लिये ही है न कि स्वार्थके लिये अथवा निरर्थक स्वप्नमें व्यतीत कर देनेके लिये नहीं, किंतु अपनी आत्माका कल्याण करनेके लिये है। मानव जातिकी सेवा करनेके लिये ही हमारी शक्तियें हैं। मनुष्य बाहरसे जैसा सुंदर दीखता है उससे भी अधिक सुंदर अंतरंगमे बनना चाहिये। और अपने कार्योंकी योजना भी इस ही प्रकार करनी चाहिये। अपने मनको इस प्रकार शिक्षित बनाना चाहिये कि जिससे वह जगतको सुंदर बना सके और भविष्यमें स्वर्गकी आशा रहे।

आब्रेडवर।

तुम्हमें जहांतक प्रेम हो उसको विकसित करो। उसका पूर्ण उपयोग करो। सत्कार्योंके अनुकरणसे और श्रेष्ठ वस्तुओंके दर्शनसे उसको पुष्ट बनाओ। "मेरे सब जीव समान है, इस धार-

णासे दृढ़ होकर परमात्माकी प्रार्थना करो। तुम अपने मित्र, पुत्र, कलत्र, बालक, दासी दास, भाई बहिन, ग्राहक, उपग्राहक, व्यापारी और पड़ोसी एवं सर्व जीवमात्रकी चाहना करो। और अपने मनमें यह दृढ़ संकल्प करो कि मानव जीवन परोपकारके लिये है।   बाटली।

'दया' राजवंशी गुण है। सुखकी बातें करो। जगत तुमारे दुःखकी अपेक्षा अधिक दुःखी है। कोई भी मार्ग बिलकुल एकदम विषम नहीं है। सीधा और सरल मनोहर मार्गकी शोध करलो, ढूंढ लो। निरंतर असंतोषसे, दुःखसे, निराशासे और रोगसे जिन जिन मनुष्योंको अतीव निराशा होगई हो—जो उद्विग्न होगये हो उनको सुख प्राप्त होनेकी मृदु आनंदमयी बातें करो।

जो दुःखी अथवा थका मनुष्य जो कि अनायास ही मार्गमें मिल गया है, ऐसे यदि एक ही मनुष्यका दुःख थोड़ासा भी विस्मरण कराया, नष्ट किया तो हमारा जीवन अवश्य ही सफल है।

जो हम एक दुःखी मनुष्यकी हानिमें गुप्त रहे हुए लाभको समझ सकें तो अपने जीवनके विषम प्रसंगोंपर जो सहन करना पड़ा हो उसका बदला चुका दिया मानना चाहिये।

यदि हमारे कार्यसे अथवा प्यारे वचनोंसे कोई भी दुःखी मनुष्य सुखी हो, निराशावादी आशावान होकर निश्चिन्त हो तो समझिये कि हमारा जीवन सफल हुआ। हे प्यारे मित्रों! जिनको मनुष्योंकी विपत्तियां, आवश्यकतायें और दुःख समझमें आगये हैं ज्ञात होगये हैं और जिनके हृदय अतिशय विशुद्ध

हैं, कोमल हैं, मधुर हैं, प्रेमयुक्त हैं, वे ही सहृदय हैं। उनका ही जीवन धन्य है—सफल है। तुम भी और व्यर्थके झगड़ोंमें न पड़कर ऐसे पवित्र और उपयोगी बनो।

यद्यपि समस्त भूमंडलके मनुष्य मूल्य निर्धारित नहीं कर सके हैं तो भी प्रेमका मूल्य प्रेम ही पहिचान सका है। और इसका हिसाब प्रकृति देवी द्वारा अपने अपने कर्म स्वयं देदेते हैं। स्वर्गीय सुख इस प्रेमका स्थान है।

तू अपने प्रेमका सर्वांगरीतिसे दान कर। उस प्रेमके करनेमें आते हुए उपसर्गोंको सहनकर और विपत्तियोंसे उपेक्षा न कर। क्योंकि दुःख होकर नष्ट हो जायगा, परन्तु प्रेमसे उपलब्ध शाश्वत सुख कभी भी नष्ट नहीं होगा।

यदि तुझे महान कार्य करनेकी विशेष आतुरता हो रही हो और तेरे मनमें अतीव महत्वाकांक्षायें रमणकर रहीं हो तो तू प्रथम अपनी आत्मपरीक्षाकर, देख कि दयाके छोटे छोटे कार्य तो नहीं रह गये।

निराशावादियोंके लिये सत्कार्यमें ही आश्वासन है। दूसरोंके लिये श्रम करनेवाले अपनी आवश्यकताओंको भूल जाते हैं।

संसारमें असंख्य देव हैं। और अनेक भूलभूलैया जैसे धर्म हैं परन्तु जिन जिन देवोंकी आज्ञा (शास्त्र) 'अहिंसा परमो धर्मः' है, उत्तमक्षमादि दश धर्म हैं और संसारको वश करनेवाली 'दया' है वही श्रेष्ठ है। वह सदाचारसे ही प्राप्त होता है। अरे ओ! मंदहृदय! सावधान हो, जीवन संग्रामके क्षेत्रमें सबसे आगे हो! दुःखमय संसारमें प्रवेशकर उपयोगी जीवन व्यतीतकर।

रे मन ! जागृत हो । एक क्षणमात्र भी विलम्ब न कर । क्योंकि काल तेरे जीवनके श्वासोश्वासको गला रहा है ।

अरे ओ मन ! विचारकर । जगतमें तुच्छ द्रव्यकी शोधमें भ्रमण करनेवाले मनुष्योंकी अपेक्षा स्वार्थपर सम्पूर्ण रीतिसे विजय करनेवाले सच्चे सेवकोंकी अतिशय आवश्यकता है । क्या लूला (अपंग) मनुष्य अपने बंधुओंको जलती हुई अग्निमेंसे निकालकर अपने कंधेपर रखकर लेजा सक्ता है ? क्या अंधा मनुष्य दूसरे अंधे मनुष्यको मार्ग बतला सक्ता है ? प्रथम दूसरोंको सुधारनेकी अपेक्षा अपने आपको सुधारना चाहिये ।

जैसे जैसे मैं अधिक प्रदान करता हूं वैसे वैसे मेरे पास अधिक वस्तु बढ़ती हैं । जैसे जैसे मेरी निंद्य वृत्तियोंपर विजय होता जाता है वैसे वैसे और अधिक विजयकी इच्छा होती है । ऐसाकर जिससे तु शाश्वत जीवनमें प्राप्त हो ।

संसारमें ' प्रेम प्रदान नहीं करने ' और ' प्रेम स्वीकार नहीं करनेके सिवाय अन्य एक भी दुःख नहीं है । प्रेमके विनिमयमें जो आनन्द है वह स्वर्गीय आनंदसे भी अधिक है ।

विपत्तिके प्रसंगपर मनुष्योंको अपने हृदयकी मधुरतासे शांति देनेके बदले यदि उनकी मृत्युके बाद उनके लिये सर्वस्व देदो तो भी क्या प्रयोजन ? अपने सगेसंबंधियोंके मरनेके बाद उनके ऊपर फूल चढाना और उनके गुणोंकी प्रशंसा करना आदि बातोंकी मृतक मनुष्यको क्या अपेक्षा है ? ऐसी बातोंकी (सहानुभूतिकी) तो जीवितकालमें अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि अनेक मनुष्य ऐसी सहानुभूतिके मिलनेके अभावसे मरणके शरण होते हैं ।

कठोर विचारको तू अपने मनमें दबा रख। क्योंकि उनमें विना बोले ही नाश करनेकी शक्ति है। प्रेमका ही विचार कर। कदाचित् वह अपनी वाणीमें नहीं उच्चारित होगा तो अपने प्रकाशको तो दिखायेगा।

'बोयेंगे वैसा काटेंगे' दुःखके बीज बोकर सुखके फल नहीं मिल सके। मेरे पास भले ही थोडासा ही द्रव्य क्यों न हो तो भी वह अपने बंधुओंकी सहायतामें देदेना चाहिये। जीवनमें दुःखी हृदयको प्रोत्साहित वचनोंसे अथवा सुखके विचारसे भी आश्वासन मिलता है।

मेरा जीवन क्षणभंगुर है। मुझे इस संसारमें अति अल्प समय पर्यन्त रहना है और जबतक जीवित रहूं, तबतक इस स्थलको सुंदर और तेजस्वी बनानेकी मेरी इच्छा है।

तू अपनी चाहनाको अंतिम स्थान दे। आसपास दृष्टि क्षेपणकर। तेरे साथ संचरते हुए (भ्रमण) जीवोंके प्रति तू अपने कर्तव्योंको पूर्णकर। छोटे छोटे कार्योंसे सुखीकर। और दुःखका भार सहन करनेके लिये सहायता कर।

मैंने अपनी कमाईमेंसे थोडासा द्रव्य एक भिक्षुकको प्रदान किया। उसने वह द्रव्य व्यय कर दिया और पुनः मेरे पास मांगनेको आया। फिर भी मैंने थोडासा द्रव्य देकर संतुष्ट किया परन्तु उसने वह भी व्यय कर दिया इतना नहीं किंतु उस भिक्षुककी पहिली किसी ही अवस्था (अत्यंत क्षुधातुर और शीतसे प्रकंपित) बनी रही। और वह फिर भी मेरे पास आया। मैंने अबकीवार उसको दिव्य उपदेश दिया जिसके फलसे वह सुंदर वस्त्रोंसे

सुसज्जित और सुखपूर्ण अपनी आभ्यंतर आत्माको आनंदमयी देखने लगा। बस, उसी समयसे उसने भिक्षावृत्तिका परित्याग कर दिया।

अत्यन्त प्रेमकर। जगतमें अनंत दुःख हैं, हो सके तो वहांपर ही प्रेमकी वृष्टिकर। कोई भी ऐसा कठोर हृदयका मनुष्य नहीं है जो प्रेमसे वश न हो। जीवमात्रका मूल धर्म प्रेम है। जीवका स्वभाव द्वेष नहीं है।

अत्यंत प्रेमकर। शंकाशील स्वभावसे मानवकी आत्मा संकोचित होती है। प्रेमकी उष्मासे मानव हृदय प्रफुल्लित होता है। प्रेम ही जीवोंको अधम स्थितिसे उन्नत स्थितिमें प्राप्त कर देता है। यदि जगतके प्राणी इसको सत्य समझें तो कैसा अच्छा हो।

अत्यंत प्रेमकर। उदारतासे दान देनेमें जरासी भी हानि नहीं होती। दान ग्रहण करनेकी अपेक्षा दान देना अधिक सुख-कर है। जिसमें अधिक प्रेम होता है वही जीवनके मूल्यको समझता है। सुखदुःखके सब प्रसंगोंपर प्रेमकर। जगतमें एक भी ऐसी वस्तु नहीं है जो प्रेमसे आधीन न हो।

जो सबके ऊपर प्रेम करता है, अपकारियोंके साथ उपकार करता है, क्रोधी जीवोंके प्रति करुणा दृष्टि फेंकता है, थके हुए मनुष्योंको नवीन उत्साह देता है, आशाको बल प्रदर्शित करता है और जगतमें सुखकी वृष्टि करता है वही भव्यात्मा है।

एकांत गुफामें, मठमें, अन्य दूसरे स्थानोंमें तथा विश्वलोकमें सेवा करना और प्रेम रखना अपना कर्तव्य है।

मनुष्योंके नियमोंकी अधिकता होनेपर भी प्रेम तो फिर भी सर्वोपरि अपनी सत्ता रखता है। परमात्मामें इतना प्रेम था कि उनके विचारोंसे ज्वलंत ज्योति उत्पन्न हुई थी, और ऐसी पवित्र आत्मा (परमात्मा) में ही **"सर्व जीवोंकी आत्मा मेरे समान है"** यह असीम अविचल भाव भरा हुआ था इसी लिये उनके समीप पशु, पक्षी और मनुष्य सर्व जीवमात्र सहोदर बंधु भावसे (प्राकृतिक वैर तजकर) रहते थे। मनुष्यका हृदय ऐसा ही पवित्र होना चाहिये।

सब दिन प्रातःकालसे सायंकाल तक कोई भी मनुष्य अथवा पशु मेरी सेवासे सुखी हुआ है या नहीं? उसकी मुझे आत्मपरीक्षा करनी चाहिये।

कहांसे आया और कहांपर जाऊंगा यह मैं नहीं जानता। परन्तु इतना तो जानता हूं कि मैं सुख दुःखसे परिपूर्ण इस ससारमें वास कररहा हूं। हां, इस धुंवले और घोर अंधकारमें एक सत्य बात मेरी दृष्टिगोचर अब भी हो रही है। वह यह है कि मैं अपनी शक्त्यनुसार प्रतिदिन प्रतिक्षण सुखदुःखमें न्यूनाधिकता कर सक्ता हूं।

हे मित्र! कोई कोई समयमें तो जीवनपथमें विश्रांति लेकर शांतिसे जरा विचारकर, 'मार्गच्युत' जीवोंको शोधले। और उनको सन्मार्गपर लानेका भरपूर प्रयत्न कर। आराम लेकर यदि यदि तू दूसरोंका भार कुछ भी कम कर देगा तो तेरा भार भी अवश्य ही कम हो जायगा और अंतमें तुझे लाभ ही होगा।

जगत सुखी हो यह तुम्हारी इच्छा है ? तो मैं कहता हूं जरा सुनो। तुम अपने कृत्योंकी ओर पूर्ण दृष्टि रखकर सदा सत्य और सीधे मार्गसे चलो। अपने हृदयसे स्वार्थवृत्तिको दूर कर अपने विचारोंको विशुद्ध और उन्नत बनाओ। ऐसा करनेसे तुम अपने छोटेसे जीवन आराम (बगीचा) को नंदनवन और सुंदर एवं सुखप्रद बना लोगे।

जगतके विशाल दुःखभंडारमेंसे थोड़ा दुःख कम हो, ऐसा मुझे आज कुछ भी करना चाहिये जिससे आनन्दके अल्पसंचयमें कुछ भी थोड़ी बहुत वृद्धि हो और मैं भाग्यशाली बनूं।

बकबक करनेके लिये अथवा आलाप विलाप करनेके लिये अधिक समय नहीं मिलेगा यदि किसी बंधुको सहायता करनेकी इच्छा हुई है तो आज ही इसी क्षण करलो।

संसारमें सुखकी मात्रा स्वल्प है और दुःख अपरिमित है। जीवनयात्रामें यदि कुछ करना है तो यही है कि तुम दुःखी मनुष्योंकी पूर्ण सहायता करो।

दूसरोंके सौंदर्य और गुणावली को ईर्षा रहित बुद्धिसे देखना ही चतुरता है और जो इस प्रकार देखता है वही सुधारक है। वह अपनी चतुराई अन्य मनुष्योंके दूषणका परित्याग करानेमें ही लगाता है। ऐला व्हीलर वील कोकस

मृत मनुष्यकी शय्या (अर्थी) पर मनोहर पुष्पोंकी विशाल मालायें समर्पण करनेकी अपेक्षा यही अच्छा होगा कि उसकी जीवित अवस्थामें एक ही गुलाबका फूल भेट दो। एक क्षुधातुर मनुष्य भूखकी अतिशय तीव्र वेदनासे मरता हो, जीवन-

यात्रा समाप्त करता हो तो प्रेमपूर्वक प्रदान किया हुआ एक ही गुलाबका पुष्प प्रेमके अगाध समुद्रमें विशेष वृद्धि करेगा। शोककी बातोंका स्मरण क्यों करते हो ? चिन्ताके गंभीर बादलोंका बार-बार वेग क्यों करते हो ? सुखके मार्गकी प्रतीक्षा कलके लिये क्यों कररहे हो! आजके ही अमूल्य समयको उल्लासमय सरस क्यों नहीं बनाते हो ?

नंदनवन तुम्हारा ही है ? यदि तुमको वहां पर रहनेकी इच्छा है तो चलो और मनुष्योंके दुःखस्थानोंको उज्वलित हास्य-मय बनाओ। इससे स्वर्गीय सुखका कर्मबन्ध आज ही इसी क्षण तुम्हारे होगा।

मानव नीतिमें 'कर्त्तव्य' ही अपना ध्येय हो और जीवन सेवासे परिपूर्ण हो तो तुमको आत्मसौंदर्य और श्रेष्ठता स्वयमेव प्राप्त हो जायगी।

तुमको परमसुख मिल सकता है, परन्तु क्या तुम आजसे ही उसके प्रयत्न करनेके लिये उत्सुक हो ? यदि हो तो अपने जीवन-पंथको प्रेमसे उज्वल करो। इससे भविष्यमें स्वर्गीय सुखका अनुभव करोगे।

हम भविष्यमें अतिशय सेवा करेंगे, यह तो समझे, परंतु आज कितनी की ? हम भविष्यमें सुवर्णपूरित भंडार (खजाने) प्रदान करेंगे यह बात सत्य है, परन्तु आज क्या प्रदान करते हो ? हम भविष्यमें दूसरोंके हृदयके असह्य भारको कमकर उनके अश्रुप्रवाहको पोछेंगे, भयके बदले आशाके मधुर अंकुर बोयेंगे, जगतके दुःख दूरकर सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे, प्यारे

और मीठे वचन प्रसन्न होकर कहेंगे, दया प्रदर्शित करेंगे और सदाचारको दृढ प्रतिज्ञ होकर पालन करेंगे।

यह सब बातें बहुत ही अच्छी और श्रेष्ठ हैं, परन्तु ठीक! इनमेंसे आज तुमने कितनी कीं?

भविष्यमें हम दयालु बनेंगे- परन्तु आज हम कैसे हैं? अनाथ और दीन मनुष्योंकी रक्षा करेंगे परन्तु आज कुछ किया है! हम सत्यकी शोध करेंगे, अचल श्रद्धाका गूढ अर्थ अनुभवकर बतलायेंगे और अध्यात्मिक आत्माओंका ज्ञान और चारित्रकी भूखको शांत करेंगे, परन्तु आज इनमेंसे क्या किया है? हम आगे चलकर आनन्द चखेंगे परन्तु तुमने आज क्या बोया है! हम बड़े होनेपर आकाशमें महल चुनायेंगे परन्तु आज क्या किया है? ऐसे ऐसे निरर्थक हेतुशून्य स्वप्नोंका पुल बांधकर मन प्रसन्नकर लेना बहुत ही अच्छा लगता है परन्तु निष्काम आशा किस कामकी? आज हम क्या काम करते हैं? और 'मैंने आज क्या किया' यथार्थमें इस प्रश्नसे आत्म परीक्षा करनी चाहिये और भविष्यमें उत्पन्न होनेवाली तरङ्गमाला ही स्वार्थवृत्तिको बंचिका (ठगनेवाले) होगी यह समझना चाहिये।

निक्सन वोटरमेन।

भौतिक, मानसिक, और नैतिक किसी भी प्रकारकी संपत्ति क्यों न हो पर दूसरेके कल्याणार्थ ही उपयोग करनी चाहिये। यह न समझना चाहिये कि सब वस्तु यथार्थमें अपनी है। नहीं नहीं, मात्र आत्मा ही अपना है।

जो प्रेम प्राप्त करता है वह यथार्थमें सन्मान प्राप्त करता है। परंतु जो प्रेमका दिव्य दर्शन करता है, प्रेमसे दूसरोंको सजीवन बनाता है वह तो स्वर्गीय सुखका रहस्य समझता है।

दूसरोंके लिये जीवित रहना, और दूसरोंके लिये सहन करना ही जीवनका यथार्थ तत्व है। इस तत्वका हर्षसे स्वीकार करना ही आनंद प्राप्त कर लेना है।

निःस्वार्थ स्वार्पण ही मनुष्यका प्रबल प्रभाव है।

जितने प्रमाणमें हम अपनको भूलकर अन्यकी सेवा करते हैं अथवा जो हमारी सेवा करता है उसके साथ समग्र जीवन एक सूत्रसे दृढ़ बंधा हुआ अनुभव करते हैं उतने प्रमाणमें हम अपना जीवन वास्तविक जीवनरूप व्यतीत करते हैं।

निर्दोष मनुष्य साधु संत भी नहीं हैं, परन्तु जिन्होंने अपना समग्र जीवन निःश्रेयसार्थ ही समर्पण कर दिया है वे ही निर्दोष हैं।

दूसरोंके लिये कार्य करनेसे अपनी शक्तियोंकी कसोटी होती है, और अन्यके लिये कुछ सहन करनेसे प्रेमकी कसोटी होती है।

दूसरोंके दुःखोंमें सांगोपांग समभागी होनेसे जो सुख मिलता है वही जीवनमें सच्चेसे सच्चा सुख है।

वेस्टकोट।

दुःखसे घबडाये हुए मनुष्योंकी तरफ दया संचार करना ही अपने भारको कम करना है।

अरे भाई! तू अपने ज्ञाति बन्धुओंको आलिंगन कर। जहां प्रे-र दयाका वास है वहांपर ही शांति है। एक दूसरेपर परस्पर

प्रेम रखना ही यथार्थ सेवा है। स्मित मधुर हास्य स्तोत्र हैं और दयाके काम प्रार्थना हैं।

किसी भी दुर्बल आत्माकी सहायताकर। जिसको सन्मार्ग नहीं दिखता हो उसको हस्तावलंबन देकर सन्मार्गगामी बना।

प्रत्येक प्रेमीका जीवन स्तुतिपात्र है।

अपनी आवश्यकताओंके भारको कुछ कम करना अपना नित्यका व्यवसाय है। पवित्रसे पवित्र काम भी यही है और स्वर्गीय संदेश भी यही है।

तुम्हारे मार्गमें अनेक दुःख हैं। श्रद्धा, आशा और धीर्यतासे आगे बढो। संसारमें पापी मनुष्योंके दुःख कम करनेके अनेक प्रसंग प्राप्त होंगे।

अहंकारका नाश किये विना पाप दूर होनेकी आशा व्यर्थ है। प्रेमकी सेवा करना हो तो अहङ्कारको भूल ही जा। यदि ऐसा करेगा तो फिर भाग्यचक्र तेरे किये हुए कार्यका फल कैसा देता है यह देख। जो कुछ तू सेवाके कार्यकर ऋण दे रहा है वह सहस्रगुणित होगा। स्मरण रख, यदि तू अपने स्वार्थमें फंस गया तो तुझे स्वर्गद्वार बंद मिलेगा। हां, सबका भला कर, तेरा भला होगा। (जीवमात्रका उद्धारकर, तेरा भी उद्धार होगा।

म्हीο टीअर।

किसी भी सचेतन प्राणीके प्रति तिरस्कार बुद्धि करना अपनी आभ्यंतर शक्तियोंको संकुचित करना है अथवा यह कहिये कि दूसरोंको तिरस्कार करनेवालोंकी विचारशक्ति अभीतक विकसित नहीं हुई है।

छोटी छोटी सेवा भी उपयोगी सेवा है । गरीब मित्रोंको और तेजस्वी आत्माको किसी भी प्रकार धिक्कार मत दो । अपने आश्रय (शरण) आये हुए ओसके बिंदुको मालतीपत्र सूर्यके प्रखर-तापसे बचाकर रक्षा करता है ।

प्रेम बहुत ही प्यारा है । और बहुत समय पर्यन्त वह टिक सक्ता है, वह नम्र है, और उसको अनिष्टका विचार तो कभी स्फुरायमान नहीं होता है । यथार्थ प्रेम मृत्युसे अधिक बलवान है अतएव हमको प्रेम-प्रेम-प्रेम चाहिये ।

मनुष्योंको सुख और शांति देनेवाले दयाके प्रसंग मनुष्य जीवनमें पुष्प वृष्टिके समान बिखरे हुए हैं । डब्ल्यू० वर्डजवर्थ ।

चेक अथवा बेंकके बिलमें ही दान भरा हुआ है ऐसा नहीं है । हम उससे उत्तम दान भी दे सक्ते हैं। गरीबसे गरीब मनुष्य भी धैर्य, समभाव, विचार और युक्तिपूर्ण सलाहका दान कर सक्ता है । मानव जातिकी उत्तम प्रकारकी सेवा करनेके लिये द्रव्यकी आवश्यकता कुछ नहीं है । निर्धन अथवा धनवान जिसको तुम दान देनेकी, अथवा सुखकी योजना करनेकी इच्छा करते हो तो तुमको कोई न कोई मार्ग अवश्य ही मिलेगा ।

एल० व्हाईटिंग ।

अनेक स्थानपर बहुतसे मनुष्योंके समागमसे मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि जो मनुष्य सबसे अधिक सेवा करता है वह सबसे अधिक सुखी होता है । और जो अतीव कम सेवा करता है अथवा सबसे कम सेवा करता है वह अधिक दुःखी होता है ।

बुकर टी० वाशिंगटन ।

जो अधिकसे अधिक देता है वह अच्छेसे अच्छा नहीं देता, किंतु जो अच्छेसे अच्छा देता है वही अधिकसे अधिक देता है, ऐसी मेरी धारणा है। मुझसे बहुतसा नहीं दिया जायगा इसकी मुझे बिलकुल चिन्ता नहीं किन्तु जो कुछ मुझसे दिया जाय वह भावपूर्वक ही दूंगा और साधनोंकी अपूर्णताको आभ्यंतर इच्छासे पूर्ति करूंगा। जो भावोंसे देता है वही अधिक देता है।

आर्थर वेदिक।

यथार्थमें समभावनामें ही कविता और सौंदर्य रहा है। इतना ही नहीं किन्तु वहांपर ही सत्कार्योंकी संभावना है।

समभावका उच्च और सबल स्वरूप मात्र अश्रुमोचन निश्वास निष्कासन, दृष्टिक्षेप और अनुकंपा प्रदर्शनमें ही नहीं है किन्तु प्रत्यक्ष सहायता द्वारा उसकी साक्षात् मूर्ति देखी जाती है।

ओक्टे विअस विन्स्लो।

इस विशाल संसारमें जो कुछ हम भलाई करते हैं, वह अति अल्प मात्र है। सब मनुष्य यदि इच्छा करें तो बहुत कुछ कर सक्ते हैं। इसके लिये प्रत्येक मनुष्यको सेवा करनेमें लग जाना चाहिये। और भावी प्रजा इस कार्यमें विशेष बलवान हो ऐसे संस्कार जन्मसे ही उनके हृदयमें कूटकूटकर भर देना चाहिये। वे भी कार्यशील हों अतएव उनके कार्य भाग उनके ही अधिकारमें सौंप देना चाहिये।

अपनी समभावकी शक्तिको वृद्धिगत करनेके लिये छोटे या बडे, हलके या भारी, साध्य वा कष्टसाध्य प्रत्येक कार्यको कर-

सन्नद्ध (तैयार) रहना चाहिये। अधिक उत्साहके

साथ उन कार्योंमें लग जाना चाहिये । विशुद्ध भावसे प्रभुप्रार्थना
करनी चाहिये । स्मरण रखो कि मात्र विचारके अभावसे दयाके
कार्य नष्ट होजाते हैं । यह न समझो कि एक दो आश्वासनके
शब्द मात्र कहनेसे किसी भी रोगीको सुखमय बना सक्ते हैं ?
गाड़ी, मोटर, और विमानोंमें आरोहणकर घूमनेको जाना, नवीन
नवीन तिलस्माती ऐयारी अथवा शृंगारसे विषमय भरे हुए
उपन्यासोंको पढ़ना और उद्यानोंमें पुष्पसेवनकर लीलालहर
उडाना आदि वैभवोंमें तथा जिसको तुम जीवनकी सुख साधनिका
समझ रहे हो ऐसी आवश्यकताओंमें सुखी होकर बहुत दिवस
पर्यन्त ऐसे ही अजान पड़े रहनेसे क्या तुम किसी अतीव दुःखित
पुरुषको सुखीकर सम भागी बने हो ? इसका विचार करो ।
किसी अतिशय दुःखी मनुष्यकी अवस्था और उसकी कठिनाइ-
योंको अपनेमें प्रत्यक्ष रखकर विचार करो कि 'यदि मैं कार्यसे
अत्यन्त थक जाऊं', रोगी हो जाऊं, किसी निर्जन प्रदेशमें
अकेला गिर पड जाऊं और दरिद्रतादि कारणोंसे दुःखी हो जाऊं
तो, मुझे कैसा लगेगा। अतएव समभावसे चलनेका स्वभाव रखना
चाहिये और ऐसा ही अभ्यास करना चाहिये ।

सी० एच० बिलकिन्सन ।

जो मनुष्य परिश्रमकर आजीविका करसक्ते हैं ऐसे
मनुष्योंको भिक्षावृत्तिकी योजना करना, सदाव्रत खोलना अधिक
हानिकारक है चाहे वह सरकारी योजना ही क्यों न हो अथवा
किसी समिति वा संस्थाद्वारा हो वा सेठ साहूकारद्वारा की
गई हो, परन्तु इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं कि ऐसी

योजना नैतिक शक्तिका नाश करती है। एक प्रकारसे वह योजना आत्मघात करती है और दयाका रूप धारणकर अत्यन्त क्रूर बन जाती है।

जो मनुष्य निरर्थक दान करते हैं अथवा अपनी तबियतको प्रसन्न करनेके लिये दान करते हैं, प्रशंसात्मक वचनोंको श्रवणकर दान करते हैं अथवा ऐसे मनुष्योंके दीन शब्दोंको श्रवणकर देते हैं! ऐसी अनीतिके परिणामोंके दुष्ट फलके अधिकारी वे ही दाता हैं। ऐसे अपात्र दानसे कभी कभी बहुत ही बुरा अनिष्ट फल होता है। **पात्र अपात्रकी परीक्षा किये बिना और बिना विचार किये दान करनेकी पद्धतिको बिलकुल ही एकदम बंद करदेना चाहिये** क्योंकि ऐसा दान सदा अपात्रमें ही दिया जाता है इससे लोग अधम और स्वार्थी बनते हैं। उनके हृदयसे स्वाभिमान नष्ट हो जाता है। स्वावलंबी होना प्रकृतिका अचल और अभेद्य नियम है। हां क्वचित् स्थलोंपर इस नियमको अपवाद रूपमें भी स्वीकार किया है परन्तु प्रथमसे ही ऐसा करना अयोग्य है। धर्मरक्षाके निमित्त इसको अपवाद रूप होना पड़ता है। जो स्वाश्रयी है अथवा स्वाश्रय बननेके प्रयत्नशील हो रहे हैं उनको सहायता करनी चाहिये। अथवा जो मनुष्य अकालमें ही किसी दैवीकारणसे अशक्त होगये हैं; अन्ध, अपंग, रोगी और काम करनेके लिये बिलकुल ही अशक्त हो गये हैं, नितान्त वृद्ध हो गये हैं और जो अपनी स्थितिको किसी प्रकार भी सुधार नहीं सके हैं उनको सहायता अवश्य करनी चाहिये। यह मनुष्यका धर्म है। वृद्धोंकी सेवा

करनी होगी, अनाथोंका रक्षण करना होगा, रोगियोंकी सुश्रुषा करनी पड़ेगी, ऐसे ऐसे साधारण नियमोपनियम तो जीवनमें करने ही पडते हैं परन्तु विशेषकर दान करनेमें हमको इन बातोंका पूर्ण ध्यान रखना चाहिये। हमारा दान सदाचारकी वृद्धि, आत्म-संयमकी परीक्षा—अभ्युदयके मार्गका विकसन, दुःखी जीवोंपर करुणाभाव और धर्मायतनकी रक्षा आवश्यक धर्म है। यदि उक्त प्रकार हमारे कार्य हों तो प्रकृति देवी हमसे सदैव प्रसन्न रहेगी।

वाकर।

मैं तेरे पास विनययुक्त प्रेमसे आशा करता हूं कि मैं सुखी मनुष्योंको मृदु हास्यसे विशेष सुखी करसकूं। दुःखसे पीडित, और शोकसे निकलनेवाली आंसुओंकी धाराको अपने हृदयसे पोंछ सकूं और उनके हृदयमें कुछ भी आश्वासन दे सकूं। हे प्रभो! मुझे यही प्रदान कर, ऐसी शक्ति प्रदान कर, ऐसी बुद्धि विकाश कर, और चारित्रबल दे।

ए० वेरिंग।

सत्कार्य हृदयमंदिरमें बंधे हुए कीर्तिस्तंभ हैं।

जेनोफोन।